श्री गुरु नानक देव जी विशेषांक-२

 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

मार्गशीर्ष-पौष, संवत् नानकशाही ५४२
दिसंबर 2010 वर्ष ४ अंक ४

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59-60



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

किसु कारणि ग्रिहु तजिओ उदासी ॥
किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥
किसु वखर के तुम वणजारे ॥
किउ करि साथु लंघावहु पारे ॥१७॥
गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥
दरसन कै ताई भेख निवासी ॥
साच वखर के हम वणजारे ॥
नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥१८॥ *(पन्ना ९३९)*

पहले पातशाह गुरु नानक साहिब महाराज अपने मुखारबिंद से रामकली राग में उच्चारण की बाणी 'सिध गोसटि' में अंकित इन पावन पउड़ियों में सिधों के साथ हुई विचार-चर्चा के प्रसंग में अपने को उनके द्वारा किये प्रश्न और फिर उस प्रश्न का अपनी ओर से गुरमति सिद्धांत के अनुरूप उत्तर देते हुए मनुष्य-मात्र को परमात्मा के मिलाप का मार्ग दर्शाते हैं।

सतिगुरु जी को सिधों के प्रतिनिधि पूछते हैं कि कृप्या हमको स्पष्ट कीजिए कि आपने किस कारण घर छोड़ा है और क्यों उदासी हुए हो अथवा क्यों संसार-भ्रमण का रास्ता अपनाया है। यह उदासी वेशभूषा पर आपने ठहराव क्यों किया? हमें बताओ कि आपका व्यापार क्या है? किस वस्तु आप आदान-प्रदान करते हो अथवा आप किस सौदे के व्यापारी हो। वस्तुत: सिधों के मन-अंतर में यह बात घर किये बैठी हुई थी कि इन्होंने गृहस्थ मार्ग को भी अपनाया हुआ है और ये उदासी भी बने हुए हैं। अत: सिध कहते हैं कि आपके साथ शिष्य भी हैं, आप उनको कैसे पार लगायेंगे? सच्ची बात तो यह है कि सिधों के मन में योग अथवा सिध मत के श्रेष्ठ होने के बारे में भ्रम बैठा हुआ है तथा उनके मन में था कि अध्यात्म-मार्ग अपनाने के लिए संसार अथवा गृहस्थ मार्ग से किनारा करना अनिवार्य है। सिधों द्वारा उठाये प्रश्नों में उनका अपने मत प्रति यह परिपक्व हो चुका भाव प्रतिबिंबित होता है।

गुरु जी सिधों को गुरमति मार्ग दर्शाते हुए स्पष्ट करते हैं कि मैं उनको ढूंढने के लिए जो सच्चे सतिगुर की तरफ अपना मुख कर चुके हैं (गुरमुखों), उदासी अथवा संसार-यात्री हुआ हूं। उन गुरमुखों को मिलने के लिए ही यह उदासी वेशभूषा पहनी है। हम परमात्मा के सदैव स्थिर रहने वाले नाम का व्यापार अथवा लेन-देन करने वाले हैं, क्योंकि जो मनुष्य मात्र सच्चे मार्गदर्शक के द्वारा बताये रास्ते को अपना लेता है वह दूसरे किनारे लग जाता है अथवा वह भवसागर से पार उतर जाता है। दूसरे शब्दों में, पक्के तौर पर घर-गृहस्थ छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है लेकिन प्रभु के साथ मिले हुओं को मिलने के लिए उनके साथ विचार-विमर्श, ज्ञान-गोष्ठि करने के लिए अस्थायी रूप से संसार में घूमना लाभदायक है।



गुरु जी की उदासियों और उनकी पावन बाणी का ऐतिहासिक प्रसंग और वर्तमान प्रासंगिकता

प्रमाणिक विश्व इतिहास के अध्ययनकर्त्ता इस तथ्य से अज्ञात नहीं कि समस्त संसार में ही मध्य युग राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और सदाचारक पक्षों से अंधकारमय युग था। इस युग में शासक और उनका सहयोगी प्रशासक-वर्ग जन-कल्याण के अतिआवश्यक उद्देश्य को अपनी दृष्टि से ओझल कर चुका था। बाड़ ही खेत को खाये जा रही थी। हमारे देश भारतवर्ष की स्थिति और भी दयनीय थी। इस स्थिति को अच्छी दिशा की तरफ मोड़ने के लिए भारत-भूमि पर जगत-गुरु, संसार के उद्धारक तथा तारक गुरु नानक साहिब महाराज का प्रकाश हुआ। आपने अपना समस्त जीवन और अकाल पुरख से बख्शी अति असाधारण प्रतिभा तथा असीम क्षमता को लोक-कल्याण के महानतम उद्देश्य की पूर्ति के लेखे लगा दिया। जगत-उद्धार तथा लोक-कल्याण के प्रसंग में गुरु जी की उदासियां और मुख्यत: इन्हीं उदासियों के करने के समय उनके पवित्र मुखारबिंद से उच्चारण की गई पावन बाणी स्पष्ट रूप में गुरु-इतिहास के प्रत्येक अध्ययनकर्त्ता के मन-मस्तिष्क में स्वाभाविक ही अपने अस्तित्व और भरपूर महत्व की अनुभूति कराती है। गुरु जी के देश और विदेशों की, की गई सत्य-प्रचार-यात्राएं या फेरियां उनकी चार 'उदासियों' के रूप में जानी जाती हैं।

गुरु जी पूर्णत: सत्य-परायण और सत्य-उन्मुख समाज-सुधारक और अद्वितीय इंकलाबी थे, जिन्होंने अपनी सशक्त रब्बी बाणी को उच्चारण करके और इसका संगीतबद्ध रूप में गायन करके उस समय के जनसाधारण की विचलित तथा भ्रमित हुई चेतना को नयी सकारात्मक दिशा में क्रियाशील किया। गुरु जी ने सुलतानपुर लोधी में नवाब दौलत खान के मोदीखाने में मोदी के रूप में कार्यभार निभाते हुए महसूस किया कि अब से वे अपना समस्त जीवन लोक-कल्याण के उद्देश्य को समर्पित कर देंगे। आपने नारा दिया--'ना को हिंदू न मुसलमान'। आपने स्पष्ट किया कि सर्वसांझीवालता तथा मानवी भाईचारा ही धर्म का मूल आधार होना चाहिए। सभी का रचनहारा और पालने वाला पिता परमेश्वर एक है। कर्मकांड 'धर्म' नहीं बल्कि धर्म-विरोधी क्रियाएं हैं। परमात्मा निरभउ है तथा निरवैर है। वह सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। उसको मूर्तियों या किसी सीमित आकार में सीमित नहीं किया जा सकता। परमात्मा की रस्मी 'आरती' उतारना उचित नहीं बल्कि उसकी विशालता और अनंतता की अनुभूति ही उसकी वास्तविक 'आरती' है। मनुष्य-जन्म सर्वोत्तम जन्म है। हमको मानव-जीवन को अपनी सांसारिक जरूरतों की पूर्ति कर सीमित नहीं करना है बल्कि परोपकार तथा लोक-कल्याण में लगाकर इसको सफल बनाना है। ऐसे ऊंचे तथा निर्मल विचार एवं मनोभाव लेकर आप अकाल पुरख से बख्शिश रूप में प्राप्त रब्बी बाणी की उत्तम वस्तु जन-जन तक पहुंचाने के लिए घर-गृहस्थी का सुख-आराम छोड़कर घर से चल पड़े।

भाई मरदाना जी गुरु जी के विश्वासपात्र थे। वे मुसलमान भाईचारे से संबंधित थे और उनकी जाति मुसलमानों में सत्कार-प्राप्त जाति नहीं समझी जाती थी चाहे कि इस जाति के पास संगीत की एक विस्मादी परंपरा थी। गुरु जी ने उनको अपना 'भाई' कहा और समझा तथा उनको भाई फिरंदा जैसे सकुशल मिस्त्री से रबाब बनवा कर दी। गुरु-इतिहास दर्शाता है कि यह रबाब गुरु जी ने बहिन बेबे नानकी जी से विशेष रूप से आग्रह करके उनसे प्राप्त धन-राशि से तैयार करायी थी। उदासियों के दौरान गुरु पातशाह द्वारा उच्चारित 'धुर की बाणी' के पावन बोल भाई मरदाना जी की रबाब की तारों की टुंकार पर जिस दूषित वातावरण में गूंजे वो वातावरण निर्मल हुआ। इस रब्बी बाणी ने महादुष्टों, आदमखोरों, मानवता के कातिलों को न केवल अमन-शांति के इच्छुक मनुष्य बना दिया बल्कि गुरु जी के सच-उन्मुख गुरमति सिद्धांतों का आगे और प्रचार-प्रसार करने वाले सत्यवादी प्रचारक भी बना डाला।

इतिहास साक्षी है कि गुरु जी ने मलक भागो को स्पष्ट रूप में बता दिया कि उसके ब्रह्मभोज का आयोजन मात्र दिखावा है। सच्ची बात तो यह है कि उसके द्वारा तैयार कराये छत्तीस प्रकार के भोजन निर्धन कर्मियों और श्रमिकों का रक्त चूस कर तैयार किये गए हैं। गुरु जी ने अपनी अगंमी बाणी द्वारा स्पष्ट किया कि वे तो नीच कहे जाने वालों के साथी हैं। ईमानदारी से अर्जित की गई भाई लालो बढ़ई की कोधरे की रोटी में दूध जैसा स्वाद समाया है। गुरु जी ने सज्जन जैसे लुटेरे ठगों को "उजल केहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मस" जैसे बोल कह कर जीवन के सही मार्ग पर गतिशील कर दिया। गुरु जी ने ब्रह्मदास जैसे विद्वता का अहंकार करने वाले पंडितों को लोगों को सच्चा रूहानी ज्ञान देने के दायित्व अथवा जिम्मेवारी से सजग किया। कर्मकांडी ब्राह्मणों को स्पष्ट रूप में बता दिया कि वे बाहरी शुद्धता तथा सुच्चम का दिखावा करके लोगों को भ्रमाने का कुमार्ग त्याग दें और धर्म का सही प्रचार करें। उदासियों के दौरान रब्बी बाणी से गुरु जी ने देश-विदेशों के लाखों प्राणियों का आत्मिक और नैतिक कल्याण किया।

इस प्रकार गुरु जी की उदासियां और इनमें उनके द्वारा पवित्र मुखारबिंद से उच्चारण की गई पावन बाणी, दो अत्यंत महत्वपूर्ण विषय हैं, जिनके बड़े महत्व को महसूस करते हुए इन दोनों विषयों पर केंद्रित करते हुए इस विशेषांक के माध्यम से 'गुरमति ज्ञान' के पाठकों को इस बारे में कुछ जानकारी उपलब्ध कराने का एक प्रारंभिक अथवा छोटा-सा प्रयास किया गया है। हम हृदय से यह महसूस करते हैं कि ये ऐसे व्यापक विषय हैं जिन पर अभी और भी विस्तृत विचार होने की गुंजाइश शेष है जो हम अपने परमात्मा बख्शे साधनों द्वारा उचित समय पर फिर आप सबके सम्मुख करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। हमारा अपने सजग पाठकों से आग्रह है कि वे इस विशेषांक को पढ़कर अपना प्रतिकर्म भेजने का उद्यम अवश्य करें ताकि आगे के लिए आवश्यक तथा और अधिक उपयोगी सामग्री जुटाने के और संभव प्रयास होते रहें। यह विशेषांक और अधिक सार्थक हो सकता है यदि हम गुरु नानक पातशाह द्वारा बख्शिश की गई सत्यवादी निष्ठा को अपने जीवन अथवा व्यवहार में लाने के लिए चेतन्य व यत्नशील हो सकें। उनकी उदासियों और पावन बाणी के विषय-वस्तु तथा सरोकार आज भी पूर्णत: प्रासंगिक हैं। आज भी कूड़-कपट के विरुद्ध उतनी ही निष्ठा के साथ धर्म-युद्ध छेड़ने की आवश्यकता है जितनी गुरु नानक साहिब के समय में थी। 

मैकालिफ कृत 'द सिक्ख रिलीजन' में श्री गुरु नानक देव जी का संक्षिप्त जीवन-वृत्तांत

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले महान विद्वान मैकालिफ का पूरा नाम था- मैक्स आर्थर मैकालिफ। इनका जन्म २९ दिसंबर, १८३७ ई को आयरलैंड में हुआ था। अपनी प्रारंभिक शिक्षा न्यू कैसल स्कूल, लिमरिक से प्राप्त कर इन्होंने जपरिंग फील्ड कॉलेज एवं क्वीन कालेज से उच्च शिक्षा हासिल की। १८६२ ई. में 'इंडियन कमीशन सर्विस' (आई. सी. एस.) की परीक्षा पास करके मैकालिफ भारत आया और पंजाब में अफसर नियुक्त हुआ। १८८२ ई. में मैकालिफ डिप्टी कमिश्नर बन गया और दो ही वर्ष बाद उसकी उन्नति डिवीजन जज के तौर पर हो गई।

पंजाब में रहते हुए मैकालिफ सिक्ख धर्म एवं दर्शन की ओर आकर्षित हुआ। प्रोफेसर गुरमुख सिंघ, भाई कान्ह सिंघ नाभा और भाई संत सिंघ के मार्गदर्शन में सिक्ख-धर्म का अध्ययन किया और सिक्ख-इतिहास एवं गुरबाणी सम्बंधी शोध-कार्य शुरू किया। मैकालिफ ने दस गुरु साहिबान का जीवन अंग्रेजी में लिखा और श्री गुरु ग्रंथ साहिब का अंग्रेजी अनुवाद आरंभ किया।

इस शोध-कार्य को पूरा समय दे सकने के उद्देश्य से मैकालिफ ने सन् १८९३ ई. में सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और तन-मन से अनुवाद-कार्य में जुट गया। १५ वर्ष की अथक साधना के बाद यह महान अनुवाद कार्य सम्पन्न हुआ और सन् १९०९ ई. में यह कार्य आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी से २४४० पृष्ठों के छः भागों में प्रकाशित हुआ। इस सब में मैकालिफ ने लगभग दो लाख रुपये खर्च किये। सरकार की ओर से पांच हजार रुपये की सहायता देने की पेशकश हुई परन्तु मैकालिफ ने विनम्रता से इंकार कर दिया।

सन् १९१३ में सिक्ख विद्यक कांफ्रेंस में प्रस्ताव पास करके मैक्स आर्थर मैकालिफ की इस महान सेवा की भरपूर प्रशंसा की गई।

मैकालिफ सिक्ख धर्म को एक सर्वथा नवीन एवं प्रगतिशील धर्म मानता था। इस साफ और सच्चे दिल वाले अंग्रेज ने सिक्ख धर्म एवं गुरु-घर में जो विशेषता देखी, उसे बेधड़क होकर प्रस्तुत किया। इसका विश्वास था कि कोई भी धर्म सिक्ख धर्म की बराबरी नहीं कर सकता और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शिक्षाओं से दुनिया को पूर्ण लाभ प्राप्त हो सकता है।

सिक्ख धर्म से गहरे लगाव के कारण मैकालिफ अंततः 'सिंघ' सज गया। गुरबाणी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा 'अंग्रेजी' में पेश करने वाला यह महान व्यक्तित्व १५ मार्च, १९१३ ई. को अकाल चलाणा कर गया।

मैकालिफ कृत गुरु साहिबान का जीवन-वृत्तांत : मैकालिफ ने दस गुरु साहिबान का जीवन-वृत्तांत अंग्रेजी में लिखा है। उन्होंने गुरु साहिबान के जीवन से संबंधित स्रोतों का गहन अध्ययन किया और बड़े ही निष्पक्ष एवं संतुलित विश्लेषण के माध्यम से गुरु साहिबान की

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

जीवन-गाथाओं का वर्णन किया।

मैकालिफ कृत श्री गुरु नानक देव जी का जीवन-वृत्तांत : मैकालिफ की पुस्तक 'द सिख रिलीजन' के छः भाग हैं। इनमें क्रम से सभी गुरु साहिबान की जीवन-गाथा प्रस्तुत की गई है। यही नहीं, इसके साथ-साथ गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित बाणियों का भी अंग्रेजी में अनुवाद दिया गया है। इस पुस्तक के पहले भाग में गुरु नानक साहिब के जीवन एवं बाणियों की प्रस्तुति है। पहले १९४ पृष्ठों में 'लाइफ ऑफ गुरु नानक' शीर्षक से प्रथम पातशाह के जीवन-वृत्तांत का वर्णन है और फिर अगले १८७ पृष्ठों में प्रथम पातशाह की प्रमुख बाणियों--'बारह माहा', 'जपु जी साहिब', 'आसा दी वार' आदि समेत उनेक 'शबदों' एवं 'श्लोकों' का अंग्रेजी अनुवाद दर्ज किया गया है।

गुरु नानक साहिब की जीवन-गाथा लिखते समय मैकालिफ ने उपलब्ध जन्म-साखियों सहित प्राप्त होने वाले अनेक ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग किया है। वैसे यह मूलतः जन्म-साखियों में उपलब्ध तथ्यों एवं प्रसंगों पर ही आधारित है। प्रथम पातशाह का अवतार धारण करना, पढ़ाई शुरू करना, जंञू संस्कार, पशु चराना, सर्प-छाया, खेत हरा होना, सच्चा सौदा, वैद्य-प्रसंग, मोदीखाने में नौकरी, वेईं-प्रवेश, नवाब दौलत खां की नमाज, भाई लालो वाला प्रसंग, सज्जन ठग का निस्तारण, उदासियों में घटित होने वाले प्रसंग (यथाः कुरुक्षेत्र में सूर्य-ग्रहण के अवसर वाली घटना, हरिद्वार में पश्चिम की ओर जल चढ़ाना, पुरी में अकाल पुरख की आरती, मक्के में काबे की ओर पांव करके सोने वाला प्रसंग आदि), बाबर का आक्रमण, करतारपुर बसाना, भाई लहिणा जी की परीक्षा एवं गुरिआई जैसे अनेकानेक प्रसंग मैकालिफ ने अपने द्वारा रचित जीवन-वृत्तांत में उसी रूप में दिये हैं जैसे वे जन्म-साखियों एवं अन्य स्रोतों में उपलब्ध हैं।

इन प्रसंगों का वर्णन करते-करते मैकालिफ ने कहीं-कहीं उन घटनाओं का तार्किक विश्लेषण करने का भी प्रयास किया है। उदाहरण के लिए गुरु जी का पांडे के पास पढ़ने जाने वाला प्रसंग है। गुरु जी ने जब पांडे से अपने आध्यात्मिक प्रश्नों के उत्तर चाहे तो पांडा असमर्थ रहा, अतः गुरु जी ने पाठशाला छोड़ दी। मैकालिफ का विचार है कि गुरु जी को अपनी रूहानी समस्याओं का हल एकांत वन में बैठ कर आत्म-चिंतन करते हुए या साधू-संतों के साथ विचार-चर्चा करते हुए अधिक सुगमता से मिलता था, इसलिए गुरु जी ने सामान्य पढाई त्याग कर आध्यात्मिक अध्ययन आरंभ कर दिया था।

इसी प्रकार वेईं-प्रवेश के प्रसंग में भी मैकालिफ का कहना है कि गुरु जी तीन दिन तक जंगल में चिंतन-मनन में लगे रहे। जनता को सिर्फ भ्रम ही हुआ था कि वे वेईं नदी में समा गये हैं।

इसी तरह मक्का-प्रसंग में मैकालिफ ने गुरु जी के चरणों के साथ काबे के घूमने का वर्णन अवश्य किया है परंतु साथ ही उन्होंने यह भी लिखा है कि कुछ लोग इसके आध्यात्मिक अर्थ निकालते हुए यह कहते हैं कि गुरु जी ने अपने उपदेशों से मक्का-वासियों को प्रभावित कर लिया था।

भले ही प्रसंगों का कोई भी रूप हो, मैकालिफ प्रथम पातशाह के आध्यात्मिक एवं चमत्कारिक व्यक्तित्व को पूर्णतः स्वीकार करता है।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

"श्री गुर नानक प्रकाश" कृत भाई संतोख सिंघ में श्री गुरु नानक देव जी सम्बंधी ऐतिहासिक विवरण

*-स. कुलदीप सिंघ**

वस्तुत: 'श्री गुरु नानक प्रकाश' एक ऐसा व्यापक आधार वाला ग्रंथ है जिस पर एक आलेख ना काफी प्रतीत हुआ। निष्कर्षत: एक और आलेख में विचार-चर्चा को और आगे बढाने के लिए प्रयास कर रहा हूं।

"श्री गुर नानक प्रकाश" श्री गुरु नानक देव जी के जीवन को आलोकित करने वाला चरित-काव्य है जिसकी रचना भाई संतोख सिंघ ने १८२३ ई में की। उन्होंने गुरु-यश रूपी धागे में बाणी रूपी लड़ी को पिरोया है। जो सिक्ख इन मोतियों की माला को हृदय में पहन लेता है उसकी शोभा दोनों लोकों में होती हैं :

मुकता पंकति सरसुती गुर जसु गुन पुरवाइ।
पहिरे उर द्वै लोक में सोभा है अधिकाइ।
(उत्तरार्द्ध, १६/१)

"श्री गुर नानक प्रकाश" ब्रज भाषा में रचित महाकाव्य है। चरित-काव्य के रूप में इसमें १३० अध्याय हैं। इस ग्रंथ के रचयिता भाई संतोख सिंघ भारतीय काव्य और मिथिक के विद्वान हैं। इष्ट देव के जीवन को निश्छल रूप से उजागर करना उनका लक्ष्य है। श्री गुरु नानक देव जी के जीवन से मानवता का कल्याण हुआ। भाई संतोख सिंघ ने दैवीय शक्तियों के द्वारा श्री गुरु नानक देव जी को दी गई श्रद्धांजलि में इसका सार रूप प्रस्तुत किया है:

भाउ भगति बिसतार गुरू सिक्खी जग कीनी।
पूरब साधन मुकति करति औरे बिधि चीनी।
तिन ते तुमहिं सुखेन कीन इहु रीति नवीनी।
गाडी राहु चलाइ नरन को शुभ मति दीनी।
प्रभू नमहि नमहि पुन पुन नमहि, चरन शरन, तारन तरन।
दुख दरन, करन सुख, हरन अघ, श्री नानक कारन करन।
(उत्तरार्द्ध, ५५)

श्री गुरु नानक देव जी के मर्यादित गृहस्थ जीवन को बाल्यकाल की आलौकिक घटनाओं की पृष्ठभूमि के बाद दिया गया है। शेषनाग ने श्री गुरु नानक देव जी को सोया हुआ जानकर उनके मुख कमल पर धूप का निवारण किया। उसने गाय के दूध के समान श्वेत रंग धारण किया, प्रेम सहित प्रदक्षिणा की और सिर की तरफ स्थिर होकर फन का विस्तार किया जो गंगा की धारा के समान उज्जवल था:

श्वेत बरन गो दुगध नवीना।
धरि दूसर तन आव प्रबीना।
सुंदर सुख मंदर को देखी।
कीनि वंदना प्रीति बिशेखी ॥१६॥
बहुरो तीन प्रदशिना दीनी।
सीस दिशा निज इसथिति कीनी।
हेतु छाउं के फन बिसथारा।
अति उज्जल जिव सुरसरि धारा ॥६॥
(पूर्वार्द्ध, ११)

श्री गुरु नानक देव जी ने सुलतानपुर में बहन बेबे नानकी जी के पास १७ वर्ष से ३० वर्ष की आयु तक निवास किया। धर्म की कमाई और गृहस्थ-निर्वाह मुख्य घटनायें हैं। सुलतानपुर

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६ (उत्तर प्रदेश)*

लोधी के नवाब दौलत खां के भंडार-अधिकारी के रूप में वे निर्धनों की आवश्यकता का ध्यान रखते थे। कवि ने उनके विरक्त स्वभाव का सहज वर्णन किया है। बहन बेबे नानकी भतीजे को गोद में खिलाने की इच्छा व्यक्त करती हैं। संतान होने के बाद भी गुरु जी का वैराग्यमयी स्वभाव दृढ़ होता गया। वेईं नदी में प्रवेश का सुंदर चित्र कवि ने मनोरम सवैयों में अंकित किया है:

हरि नाम अपार ही फूल लगे,
निज रूप पछान लगयो फल भारी।
रस पूरन ह्वै सुख आतप म्रितु,
अंम्रित की छाउ टरै नहिं टारी।
पसु मोह चरै नहिं या बिधि सों,
सति संगति की चहुं पासहि बारी।
खग संत सदा तिह सेवति हैं, पुन देवत औरन को उपकारी।

(पूरबार्द्ध, २७/७)

श्री गुरु नानक देव जी ने आकाशवाणी सुनकर प्रभु से मिलने का निश्चय किया। उन्हें प्रभु से मूल-मंत्र प्राप्त हुआ। तब उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने का अभियान शुरू किया :

कारन या अवतार धरयो भव कारज जाइ करो अब सोऊ।
है कलि काल कराल बिसालहि मंद मति मन मानव होऊ।
देवन पूजति नाम ते बेमुख केवल पाप पराइन जोऊ।
भाउ भले भगती प्रगटावहु भार धरा पर भूर बिगोऊ ॥३॥ *(पूरवार्द्ध, २९)*

तलवंडी की भांति अब सुलतानपुर लोधी से विदा होने का करुण दृश्य उपस्थित हुआ। वहां माता त्रिपता जी की ममता की बाधा थी यहां बहन बेबे नानकी जी अपने भाई का स्वरूप जानते हुए भी दूर रहने पर धैर्य खो देती हैं। उनके पति उन्हें धैर्य और निष्ठा का उपदेश देते हैं:

कहि जराम नानक पर निशचा, उर थिर गिर सर तेरे।
भ्रम बज्जर ते थरहर डोल्यो, धीर नसी इस बेरे ॥२०॥
निताप्रति मुझ को समझावति अब किउं उर महिं भरमी।
श्री नानक अविलंब सदा निज लखहिं सु तिन के मरमी ॥२१॥

(पूरवार्द्ध, ३६)

श्री गुरु नानक देव जी की यात्राओं के आरंभ में समीपवर्ती गांव ऐमनाबाद जाने और वहां से तलवंडी लौटने का वर्णन है। ऐमनाबाद की समीपवर्ती यात्रा के बाद पूरब में कामरूप, दक्षिण में सिंगलद्वीप तथा वहां से कई अन्य द्वीपों की यात्रा का वर्णन है। कामरूप में जादू-टोना छोड़कर सिक्ख मार्ग की सुगमता का वर्णन है। दक्षिण में राजा शिवनाभ को दिये गए उपदेश में योग में आठ अंगों के लक्षण हैं। द्वीपों की यात्रा में सुवर्णपुरी द्वीप की कल्पना है। राजा बहुत दयालु है, किन्तु उसके मन में देह-बुद्धि का अहंकार है जो जन्म-मरण का कारण है। कवि ने राजा के लिए इरंड वृक्ष का प्रतीक लिया है जिसमें चंदन के समान सुगंध नहीं है:

चंदन से श्री गुर चरन मन इरंड ढिग लाइ।
ह्वै सुगंधि मैं काम को सीतलता सुख पाइ।

(पूरवार्द्ध, ५६)

श्री गुरु नानक देव जी ने राजा के मन से द्वैत-भाव और तनहंता को दूर किया। धर्मशाला में प्रभु-कीर्ति होने लगी:

श्री गुर बोले सुनहु भुवाला।

राज जोग तुम करो बिसाला।
ठानहु सदा ध्यान मन मांही।
मैं हों निकट दूर कत नांहीं ॥१०९॥

"श्री गुर नानक प्रकाश" में श्री गुरु नानक देव जी की मक्का-यात्रा के प्रसंग में विविध आयाम दिये हैं। इसमें एक पौराणिक आख्यान के आधार पर मूर्ति-पूजा का समर्थन भी सम्मिलित है जो कि गुरमति के अनुकूल नहीं। कवि ने दशम गुरु के द्वारा धर्म-समन्वय के विचारों को भी कबित्तों के माध्यम से दर्शाया है:

ऐसे सुन बैन बोले गुरु एन तब, पंच तत साजे तब देह इक सार ही।
नैन कान नासका बदन कीने, एक ही से क्रिया सभ भई हाथ पाव के मझार ही।
देशनि के भेस को प्रभाव धरि रिदै मांहि, पक्ख वाद गाढे ह्वै के झगरैं गवार ही।
नाम लिव लाई जाहिं अधिक बड़ाई तांहि जानि कै सरूप निज उधरै संसार ही ॥३८॥

(पूरवार्द्ध, ५७)

मक्का से मदीना होकर गुरु जी पुन: मक्का लौटे। गुरु जी ने वहां पानी का स्रोत प्रकट किया। काजी नत्मस्तक हुए। गुरु जी से खड़ांव प्राप्त की और श्रद्धा से पूजन करने लगे।

"श्री गुर नानक प्रकाश" के भाग उत्तरार्द्ध के अंतिम अध्यायों में भक्त प्रहलाद तथा भक्त ध्रुव से मिलन की चर्चा है। गुरु जी शैलगिरि पर भाई बाला जी और भाई मरदाना जी को छोड़ फिर ध्रुव-मंडल में भक्त ध्रुव से मिलकर सचखंड में प्रभु से मिले। लौटकर उन्होंने अकाल पुरख का वर्णन किया:

उत्तम भगत ध्रुव तुम सुनीए।
रूप रंग तिन को नहिं गुनीए ॥८॥
भगतनि ध्यान हेतु बिन जोना।
सोहत श्याम सरूप सलोना।
ससि सविता कोटिक उजिआरा।
ब्रह्मादिक जिह पाएं न पारा ॥९॥
सभिनि माहि जिह जोति समानी।
सदा अलेप सरब को दानी।

ध्रुव-मंडल की यात्रा के बाद नवखंडों की यात्रा करते हुए श्री गुरु नानक देव जी तलवंडी आए। माता-पिता को उपदेश दिया। कुछ दिनों के बाद माता-पिता के बैकुंठ-गमन के बाद फिर प्रस्थान किया। "श्री गुर नानक प्रकाश" के उत्तरार्द्ध की यात्रा में भारत के प्रसिद्ध तीर्थों- हरिद्वार, अयोध्या, काशी और जगन्नाथपुरी का उल्लेख किया गया है। भूटान, कश्मीर तथा कंधार के पहाड़ी स्थानों के प्रसंग हैं। सिधों के साथ हुई पुन: गोष्ठि का विवरण है। लौटते समय ऐमनाबाद में बाबर के आक्रमण और युद्ध का विवरण है।

उत्तरार्द्ध, २९ में यात्रायों की समाप्ति के बाद श्री गुरु नानक देव जी ने ध्यान पुन: गृहस्थ के कर्त्तव्यों की ओर लगाया। कवि प्रथम बार माता सुलक्खणी जी (पत्नी) को गुरु के सामने अपने पक्ष रखने का अवसर देते हैं:

किउ तुम फिरे मोहि संग लावन।
जे तन भगवो भेख बनावन।
मुझ को कर अनाथ इक बारी।
आइ न कबहुं सुरति संभारी ॥७५॥

परिस्थिति के यथार्थ को जान कर श्री गुरु नानक देव जी का हृदय करुणामय हो गया। माता सुलक्खणी जी ने एक सहधर्मिणी के रूप में गुरु जी के साथ रहना स्वीकार किया:

भनैं सुलकणी सुनि वच मोरे।
नहि भूखन जाचों ढिग तोरे ॥८५॥
रिदै बिखै चाहों नित ऐसे।

तुम जिउं हाल होइ मम तैसे।
दुख भुख सहि कै अपनि सरीरा।
रहों सदैव तुमारे तीरा ॥८६॥

दोनों बच्चे पिता के समीप पहुंचे। सुख के खजाने श्री गुरु नानक देव जी को पाकर जननी तथा पुत्र चिंता-रहित हो गये। श्री गुरु नानक देव जी के ससुराल पक्खोके के चौधरी अजित्ते रंधावे ने कुछ दिन परिवार की सेवा की। फिर लाहौर के एक व्यवसायी करोड़ी ने करतारपुर में धरमसाल बनवाई जहां गुरु जी ने परिवार सहित निवास किया। करतारपुर निवास के बाद यात्रा-क्रम में सिआलकोट, पाकपटन, कंधार तथा मुलतान के प्रसंग दिये गए हैं। यात्रा का फकीरी वेष उतार दिया:

बेख फकीरी तज्यो सरीरा।
संसारी पुनि पहरे चीरा।
क्रिखी करावन लगे बिशाला।
देग चलावहिं परम क्रिपाला। (अध्याय ३९)

करतारपुर में रहकर सिक्खों के उपदेश के प्रसंग हैं। अध्याय ४७ में भाई बाला जी के परलोक-गमन के बाद का जीवन-वृत्तांत कवि के माध्यम से वर्णित है। इसमें श्री गुरु अंगद देव जी की गुरु जी से भेंट नाटकीय रूप से वर्णित है। माता सुलक्खणी जी ने श्री गुरु अंगद देव जी के निर्मल वस्त्रों पर चारे के कीचड़ के छींटे देखकर गुरु जी के निष्ठुर व्यवहार की भर्त्सना की :

गुन खानी सुनि बैन उचारे।
नहीं पंक संग भरिओ भारे।
दीन दुनीका छत्र सु दिओ।
अपर न इह सभ जग महिं बीओ ॥९२॥
पंक जौन तुम को दृशटावा।
केसर को हम ने छिरकावा।
अबि तुम देखि खरो तुम नेरे।
देखो तो केसर छिरकेरे ॥९३॥
गुर कहिं देख्यो, कहि प्रभु देखा।
तुमरी गति तुम लखहु अलेखा।
भव सागर दारुन जग मांही।
गुर कहिं नर बहु बूडति जांही ॥९४॥
बहु नर को मलाह इह होई।
पार करहि भव सागर जोई।
तूशनि भई सुलखणी सुनि कै।
लहिणा हरख्यो करुणा गुनि कै ॥९५॥

श्री गुरु नानक देव जी ने **'शबद'** का आश्राय लेने का उपदेश दिया। काल रूपी शेर करुणा-रहित है, **'शबद'** को छोड़कर सभी को खा जाता है:

बिन करुना ते क्रूर बिसाला।
म्रिग ब्रहम्ंड केहरी काला ॥२६॥
कमल फूल अद्‌भुत अहै,
बचयो ताहि ते सोइ।
नहिं समीप तहिं जावई,
रहओ बिना बल होइ ॥२७॥
शांति मैतरी अंकुर तासू।
चैतंनता मात्र परकाशू।
इस महिं काल लीन हुइ जावहि।
तिह तजि अपर सरब को खावहि ॥२८॥
तां ते शबद करहो अभयासा।
सगरो भेद होइ परकाशा ॥ . . . २९॥
(अध्याय ५६)

इस शबद के अभ्यास का उपदेश देकर गुरु जी ज्योति-जोत समा गये।



प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ की सिक्ख इतिहास को प्रस्तुत करने की विवेकपूर्ण दृष्टि

*-बीबी रजवंत कौर**

प्रिं. तेजा सिंघ और डॉ. गंडा सिंघ ने 'सिक्ख इतिहास' नामक पुस्तक लिख कर सिक्ख पंथ को बहुमूल्य देन दी है। इसमें सन् १४६९ से १७६५ के समय हुए दस गुरु साहिबान का जीवन, बाबा बंदा सिंघ बहादर, भाई मनी सिंघ, भाई तारू सिंघ, भाई सुबेग सिंघ और भाई शाहबाज सिंघ की शहीदी एवं दोनों घल्लूघारों के बारे में बहुमूल्य जानकारी मिलती है। प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ ने इस पुस्तक को अंग्रेजी में लिखा जिसे पंजाबी में अनुवाद डॉ. भगत सिंघ ने किया। यह पुस्तक २००६ में पहली बार पटियाला यूनीवर्सिटी की तरफ से प्रकाशित की गई। यह पंजाबी में लिखी हुई अनेक पुस्तकों में से एक स्रोत है। इस पुस्तक को लिखने के लिए जो सामग्री ली गई है वह प्रमाणित गुरमति सिद्धांतों से ली गई है, खास तौर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को आधार बनाकर यह पुस्तक लिखी गई है। इसमें बाणी के विचारों को बहुत स्पष्ट रूप में प्रकट किया गया है। इस स्पष्टता की आशा उन लेखकों से नहीं रखी जा सकती जिनको मूल रूप में गुरबाणी का ज्ञान नहीं है।

कई लेखकों ने सिक्ख इतिहास को तोड़-मरोड़ कर लिखा है। अंग्रेजी और फारसी पुस्तकों का अनुवाद करने वालों ने सच्चाई को अनदेखा किया है या अपनी तरफ से कुछ ज्यादा लिखा है जो स्पष्ट नहीं होता। सिक्खों और मुगलों के आपसी संघर्ष के बारे में जो फारसी में पुस्तकें मिलती हैं उनमें देश के स्वतंत्रता-संग्रामियों, जिन्होंने सिर-धड़ की बाजी लगाई और कुर्बानियां दीं, उनके लिए 'लुटेरे' और अन्य कई अपशब्द इस्तेमाल किए गए हैं। चाहे इन पुस्तकों में कई प्रकार की जानकारी तो प्राप्त होती है पर असलियत को अनदेखा किया गया है।

इन पुस्तकों में जो सिक्ख इतिहास को ऊपर-नीचे दिखाया गया है उसे प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ ने ठीक करने की कोशिश की है। इन्होंने सिक्ख इतिहास लिखने में बहुत सावधानी से काम लिया है और भरोसेयोग्य स्रोत लिए हैं।

जब गुरु नानक साहिब की आयु ९ साल की थी तब गुरु जी को जनेऊ पहनाने के लिए पंडित को बुलाया गया। गुरु जी ने धागे का जनेऊ पहनने से मना कर दिया और पंडित को कहा कि मैं इस जनेऊ को नहीं पहनूंगा जो मैला हो जाता है और टूट जाता है। गुरु जी ने अच्चे और नेक कर्म करने को ही सच्चा जनेऊ कहा।

प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं कि गुरु नानक साहिब दिन-रात परमात्मा की याद में जुड़े रहते थे जिससे उनके पिता ने समझा कि पुत्र को कोई रोग है, इसलिए इलाज करवाने के लिए वैद्य को बुलाया गया। गुरु जी ने कहा कि इस भोले वैद्य को क्या पता कि बीमारी क्या है, हमारा मन तो परमात्मा में लीन है।

गुरु जी के पिता जी अपने नौजवान पुत्र को किसी काम-काज या व्यापार में लगाना

**गुरमति लेक्चरार, सिक्ख मिशनरी कालेज, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर। मो. : ९८५५९-४४५४६*

चाहते थे। उन्होंने गुरु जी को कुछ रुपये देकर शहर भेजा कि कोई मुनाफे वाला काम करो। गुरु जी ने साधुओं को भोजन की जरूरत होने के कारण उन पैसों से उन्हें भोजन करवा दिया, जिसे 'सच्चा सौदा' कहा जाता है। इसके बाद गुरु जी अपनी बहन बेबे नानकी के पास सुलतानपुर लोधी चले गए और वहां पर गुरु जी के बहनोई भाई जैराम ने गुरु जी को दौलत खां लोधी के मोदीखाने में नौकरी पर लगवा दिया। गुरु जी ने यह काम बड़ी सूझबूझ से निभाया तथा अपने काम के साथ-साथ परमात्मा के नाम-सिमरन में भी जुड़े रहते थे। मोदीखाने में अनाज तौलते समय 'तेरह' की गिनती पर आते ही परमात्मा में लीन हो जाते थे। मोदीखाने में काम करने के बदले उन्हें आय अनाज के रूप में दी जाती थी। जो अनाज उन्हें मिलता था उनके खर्च से ज्यादा होने के कारण वे गरीब लोगों में बांट देते थे या अनाज मोदीखाने में पड़ा रहता था। लेखक ने यहां लोगों के इस भ्रम का खंडन किया है कि यह कोई करिश्मा नहीं था कि अनाज ज्यादा तौल देने पर भी बढ़ जाता था। इसके पीछे सच्चाई यह है कि गुरु जी की जरूरतें सीमित होने के कारण मोदीखाने में अनाज बढ़ जाता था और वे उसे लोगों में बांट देते थे और हिसाब करने पर भी कुछ अनाज बचा रहता था।

इस पुस्तक में इस भ्रम को भी दूर किया है जिसको कई इतिहासकार यह मानते हैं कि गुरु जी तीन दिनों के बाद वेईं नदी से निकले थे और इसको करिश्मा कहा है। इसका खंडन करते हुए लेखक लिखते हैं कि जब गुरु जी नदी में स्नान करने गए तो नदी के शांत वातावरण के कारण वे परमात्मा में लीन हो गए। उस लीनता में ही उन्हें परमात्मा की ओर से अपने जीवन-उद्देश्य की पूर्ति के लिए संदेश मिला। जब वे वापिस लोगों में आए तो वे चुप थे। जब बार-बार उनको बुलाया गया और पूछा गया तो वे बोले "ना कोई हिंदू न मुसलमान ॥" लेखकों के विचार के मुताबिक अपने जीवन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह उनके पहले बोल थे। उस वक्त समाज में जाति भेदभाव और कर्मकांड पूरे जोरों पर था। लोग अपने आदर्शों और परमात्मा को भूल गए थे। इन शब्दों द्वारा वे सबको आपस में जोड़ना चाहते थे, इसलिए गुरु जी विश्व-भ्रमण के लिए चल पड़े और लोगों को सही राह पर लाने के लिए, आपसी वैरा-भाव और जात-पात मिटा कर परमात्मा से जोड़ने की आवाज उठाई। गुरु जी के शब्दों की आलोचना करने वालों ने गुरु जी को अपने साथ मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए कहा। जब गुरु जी ने नवाब दौलत खां और काजी के साथ नमाज पढ़ी तो गुरु जी ने उनसे कहा कि आप नमाज पढ़ते समय यहां उपस्थित नहीं थे, आपका ध्यान दुनियावी कामों में था। गुरु जी ने अपनी बाणी द्वारा अच्छे मुसलमान बनने की बात करके उनको समझाया।

कुछ इतिहासकारों द्वारा डाले गए भ्रमों में से लोगों को निकालने की कोशिश करते हुए प्रिं. तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं कि गुरु जी ने अमीर व्यक्ति मलक भागो के घर से तैयार पकवान मंगवाए और भाई लालो के घर से सूखी रोटी मंगवाई। उन्होंने लोगों को बताया कि मलक भागो ने गरीब लोगों को सता कर की गई कमाई से बढ़िया पकवान बनाए हैं, पर भाई लालो ने अपने हाथों से की कमाई से रोटी बनाई है। गुरु जी ने लोगों को यह समझाया कि मलक भागो की रोटी में से गरीब लोगों का

खून दिखाई देता है पर भाई लालो की रोटी में से मेहनत की नेक कमाई दिखाई देती है। लेखकों के विचार के मुताबिक गुरु जी ने लोगों को सही कमाई करने का ढंग बताया कि गरीब को सता कर पैसा एकत्रित करके नहीं, अपने धर्म की किरत करे गुजारा करना चाहिए।

निष्कर्षत: 'सिक्ख इतिहास' नामक पुस्तक में यह बताने की कोशिश की है कि गुरु नानक साहिब ने अपने विचारों को व्यवहारिक रूप देने के लिए एक अनोखा ढंग अपनाया, जिसके फलस्वरूप इखलाकी तौर पर गिरी हुई जनता को फिर से अपने पैरों पर खड़ा किया और शक्तिशाली समाज की नींव रखी। सिक्ख धर्म की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए हमें प्रिं तेजा सिंघ-डॉ. गंडा सिंघ द्वारा लिखित 'सिक्ख इतिहास' पुस्तक से सही राह लेनी चाहिए जो सिक्ख इतिहास की सही जानकारी देने के लिए प्रकाश-स्तंभ से कम नहीं है। 

मैकालिफ कृत 'द सिक्ख रिलीजन' में . . . *(पृष्ठ ६ का शेष)*

इन्हीं जीवन-प्रसंगों में कुछ ऐसे प्रसंगों का भी मैकालिफ ने वर्णन किया है जो इतने प्रमाणिक रूप में प्रचलित नहीं है। जैसे गुरु जी का मौलवी रुकन-उल-दीन के पास फारसी पढ़ने का प्रसंग। मैकालिफ का कहना है कि गुरु जी ने मौलवी से एक ही दिन में फारसी वर्णमाला सीख ली और उस पर एक फारसी 'पट्‌टी' की रचना कर दी। मैकालिफ स्वयं मानता है कि गुरु जी द्वारा रची गई यह फारसी रचना (बाणी) श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज नहीं है और कुछ सिक्ख विद्वान इसे पहले पातशाह की रचना (बाणी) नहीं मानते।

उदासियों के वर्णन में मैकालिफ ने ज्यादा विस्तार देने की कोशिश नहीं की है। यहां ज्यादातर मुख्य-मुख्य प्रसंगों का ही वर्णन किया गया है। कुछ प्रसंग आगे-पीछे भी हो गये हैं परंतु इन प्रसंग-चर्चाओं में मैकालिफ ने गुरु नानक साहिब के विराट एवं महान व्यक्तित्व को बड़ी सफलता के साथ उद्‌घाटित किया है। जीवन-वृत्तांत में प्रस्तुत किये गये सारे जीवन-प्रसंग प्रथम पातशाह के आध्यात्मिक, व्यक्तित्व की बड़ी सुंदर और सम्पूर्ण झलक दिखाते हैं।

मैकालिफ द्वारा रचित प्रथम पातशाह के जीवन-वृत्तांत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने प्रसंगों के साथ-साथ संबंधित गुरु जी द्वारा उच्चरित गुरबाणी के शबदों को भी अंग्रेजी में अनुवाद करके दिया है।

सिक्ख इतिहास में यह परंपरा रही है कि गुरु साहिबान की जन्म-साखियां दर्ज करते समय संदर्भित स्थलों पर गुरु साहिबान द्वारा उच्चरित बाणी में से सम्बंधित शबद दिये जाते रहे हैं। मैकालिफ ने इस परंपरा का सुंदर निर्वाह किया है और प्रसंग से संबंधित 'शबद' का उच्च कोटि का अंग्रेजी-अनुवाद प्रस्तुत किया है।

मैक्स आर्थर मैकालिफ की एक महानता यह भी रही कि उसने सारा कार्य पूरा करने के उपरांत उसे सिक्ख विद्वानों को सौंप दिया और उनके द्वारा सही ठहराने के बाद ही अपने शोध को पूर्ण माना। निश्चित रूप से मैकालिफ द्वारा किया गया यह समस्त शोध एवं अनुवाद-कार्य एक अमूल्य धरोहर है। पाठकजन मैकालिफ द्वारा लिखित 'द सिक्ख रिलीजन' का पठन-अध्ययन कर सिक्ख इतिहास के बारे में अपनी जानकारी में बढ़ोत्तरी कर सकते हैं। 

मिस्टर कोल द्वारा सिक्ख धर्म, खालसा पंथ तथा गुरु नानक साहिब संबंधी संक्षिप्त तत्व-सार

-डॉ. नवरत्न कपूर*

सिक्ख धर्म गुरु नानक साहिब से लेकर चौथे गुरु श्री गुरु रामदास जी तक 'भक्ति-परक' रहा, किन्तु पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी (सन् १५६३-१६०६) के आत्म-बलिदान के साथ सिक्ख धर्म में 'आत्म-बल' का संचार होने लगा। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तो सन् १६९९ में श्री अनंदपुर साहिब में पांच ककारों (कछहरा, केश, कड़ा, कृपाण और कंघा) से सुसज्जित अपने पांच परीक्षार्थियों को परख कर 'पांच प्यारे' की उपाधि दे दी। तब से सिक्ख धर्म का पर्यायवाची 'खालसा पंथ' 'भक्ति और शक्ति' का प्रतीक बन गया। डॉ. हरिराम गुप्ता ने 'खालसा' शब्द में फारसी और उर्दू की लिपि में प्रचलित 'खे+आलिफ', 'लाम+सुआद+हे' पांच अक्षरों का सुमेल मानते हुए लिखा है : इस प्रकार 'खालसा' का अर्थ है 'खुदा के बंदे' अथवा 'धर्मात्मा और न्यायशील व्यक्ति'।[१]

हिंदू इतिहासकार का फारसी-उर्दू का ज्ञान तो एक स्वाभाविक बात थी। अंग्रेजी शासन-काल में भी अंग्रेजी लेखक भारतीय भाषाओं को सीखने लगे और अपने इतिहास-ग्रंथों में भारतीय धार्मिक शब्दावली की सही अर्थवत्ता सामान्य जन के समक्ष प्रस्तुत करने लगे। मेजर जेम्स ब्राउन भी डॉ. डब्ल्यू. एल. एम. ग्रेगर की तरह ब्रिटिश सेना में उच्चाधिकारी था। उसने भी डॉ. हरिराम गुप्ता की भांति 'खालसा' शब्द की व्याख्या विस्तारपूर्वक की है, यथा:

'खालिसा' अथवा 'खालसा' का मूल 'खालिस' है, जिसका अर्थ है निर्मल, साफ, पवित्र . . . (दसवें) गुरु जी ने यह 'खालसा' शब्द सामूहिक रूप में उन सभी के लिए प्रयोग किया है जो संवत् १७५६ (३० मार्च, सन् १६९९ ई.) को जारी खंडे का अमृत छककर 'गुरु के सिंघ' सज गए और उन्होंने अपना पहला धर्म त्याग कर जात-पात के भ्रम और दिखावों तथा कुल आचार के बंधनों से मुक्ति पा ली और पुराने कृत्यों के तंग दायरों से बाहर निकल आए. . .।[२]

स्वाधीनता के पश्चात् बहुत-से सिक्ख भाई विदेशों में बसने लगे हैं और उन्हें साधारणत: 'प्रवासी भारतीय' पुकारा जाता है, किन्तु केशधारी होने के कारण वे अपनी पहचान बनाए रखते हैं। उनके धर्म-स्थलों को 'गुरुद्वारा साहिब' पुकारा जाता है और वहां पर किसी 'मूर्ति' अथवा 'चित्र' की बजाय जिस पावन ग्रंथ का पाठ होता है उसे 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' के नाम से स्मरण किया जाता है। इस 'गुरु' शब्द की महिमा से प्रभावित होकर अंग्रेज लेखक ने 'The Guru in Sikhism' विषय पर खोज-कार्य करके अपनी पुस्तक सन् १९८१ में लंदन से छपवाई। उस अंग्रेज विद्वान का नाम है- -डब्ल्यू ओवन कोल।

मिस्टर कोल ने सभी सिक्ख गुरु साहिबान अथवा श्री गुरु नानक देव जी का पूर्ण जीवन-वृत्तांत देने की बजाए अपना ध्यान सिक्ख गुरु साहिबान के धर्म-सिद्धांतों को सिक्ख जन्म-साखियों (जन्म एवं गुरमति सम्बंधी साक्ष्यों) और

*फ्लैट सं. ९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल, नवी मुंबई

हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान श्री परशुराम चतुर्वेदी (जो भक्त कबीर जी के बारे में विशेषज्ञ माने जाते हैं) के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब से उद्धरण देकर अपने विचारों की पुष्टि की है।

मिस्टर कोल के अनुसार गुरु नानक साहिब का जन्म तलवंडी गांव में सन् १४६९ में हुआ था। यह गांव लाहौर से बहुत दूर नहीं था। अब यह पाकिस्तान में है और 'ननकाणा साहिब' कहलाता है। गुरु नानक साहिब का जीवन सामान्यत: तीन कालों में बांटा जा सकता है, यथा:

१. जन्म से लेकर लगभग सन् १४६९ तक तैयारी (Prepration)

२. उनकी धर्म-प्रचार हेतु यात्राएं (The years of mission during which he travelled widely.)

३. लगभग सन् १५२१ से लेकर आगामी वर्षों में अपने परलोकवास तक (धर्म) समन्वय का प्रयास (The years of consolidation from approximately 1521 . . .)[३]

गुरु साहिब के जीवन सम्बंधी मात्र इतनी सूचनाएं देकर मिस्टर कोल ने उनकी धार्मिक विचारधारा का विश्लेषण इस प्रकार किया है:

(१) गुरु नानक साहिब ने सन् १४९९ से १५२१ तक अपना अधिकांश समय धर्म-प्रचार में बिताया। जन्म-साखियों के अनुसार उन्होंने श्रीलंका, तिब्बत, बगदाद और मक्का की यात्रा भी की। ऐसा उन्होंने अपने दृढ़-निश्चय के साथ किया, जिसका विचार उन्हें आत्म-ज्ञान एवं स्वानुभवों से हुआ (his enlightenment and commissioning expression)

(२) गुरु नानक साहिब आत्म-ज्ञान से पूर्व ही निर्गुण संप्रदाय से परिचित थे। उनके दृढ़ निश्चय के कारण ही उन्होंने देश-विदेश में अपने धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया।[४]

(३) भारत में बहुत-से साधु हैं। ये लोग अपनी आध्यात्मिक जागृति को दृढ़मूल करने में तुले रहते हैं। भारत में पहले भी अपने को 'साधु' अथवा 'गुरु' की पदवी से विभूषित होने और इन्हीं शब्दों द्वारा पुकारे जाने पर तुले रहते हैं, किन्तु कहीं पर यह प्रमाण नहीं मिलता कि 'नानक' ने अपने लिए 'गुरु' शब्द का प्रयोग किया हो।[५]

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना १२४५ पर विद्यमान गुरु नानक साहिब की बाणी का उदाहरण देकर इतिहासकार ने कथन किया है:

One sings religious songs, though he possesses no divine knowlegde. A hungry mullah turns his home into a mosque. An idler has his ears pierced and so he becomes a yogi. Another embraces the life of a mendicant for the sake of his caste. (Guru Granth Sahib, page 1245)[6]

गुरु जी के वचन हैं :

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ (पन्ना १२४५)

इन तथ्यों से एक विदेशी विद्वान की श्री गुरु नानक देव जी के विचारों की निष्पक्षता का प्रमाण मिलता है।

संदर्भ-ग्रंथ

1. Dr. Hari Ram Gupta, History of Sikhs, Vol. II, Page 255, F. N. No. 3 (New Delhi, 1978)

2. Dr. W.L.M., The History of the Sikhs; (Language Deptt., Patiala; 1970)

3-6. W. Owen Cole, The Guru in Sikhism, Page 13-20 (Darton, Longman & Todd, London; 1981)



फिरि बाबा आइआ करतारपुरि . . .

*–डॉ. परमजीत सिंघ 'मानसा'**

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने युग की भारतीय जनता की दर्दनाक हालत को देखते हुए सुलतानपुर से मोदीखाने की नौकरी से अस्तीफा दे दिया। भाई मरदाना जी को साथ लेकर दीन-दुखियों की सहायता के लिए कमरकस्सा कर संसार की यात्रा प्रारंभ की, जिसके बारे में भाई गुरदास जी का कथन है:

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लोकाई॥ (वार १:२४)

श्री गुरु नानक देव जी ने चार उदासियां कीं और विशाल भारत के हर कोने में पहुंचे। वे मध्य-पूर्व में स्थित इस्लामी देशों के लगभग सारे धर्म-केंद्रों पर गये। उन्होंने भारतीय और सामी धर्मों की विभिन्न प्रकार की परंपराओं को नजदीक से देखा। गुरु जी ने उनके दार्शनिक आधारों और अभ्यास-प्रणालियों का अध्ययन किया और अज्ञात-ग्रस्त लोगों को पाखंडों तथा रिद्धियों-सिद्धियों अथवा कर्मकांडों आदि की निरार्थकता बताकर इनको त्यागने और एक अकाल पुरख की छत्रछाया (ओट) में संयम वाला जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। लोगों का उद्धार करने की आपकी युक्ति यह थी कि आप लोगों में जाकर विलक्षण अंदाज में लोगों का ध्यान अपनी ओर केंद्रित करते और उनके फोकट कर्मों का खंडन करके उनको सद्-व्यवहार करने की शिक्षा-दीक्षा देते।

गुरु जी की ओर से आरंभ की गई उदासियों में से उनकी पहली उदासी बहुत लंबी थी। प्रो. साहिब सिंघ के अनुसार सन् १५०७ से लेकर सन् १५१५ तक की यह यात्रा लगभग आठ साल की थी। इसी उदासी के दौरान ही गुरु जी ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों को सुनिश्चित और विधिपूर्वक जीवन-दर्शन का रूप दिया और इसके प्रचार के लिए केन्द्र स्थापित करने की योजना बनाई। पहली उदासी से वापिस आकर आपने कुछ प्रमुख सिक्ख श्रद्धालुओं की सहायता से गुरदासपुर जिले में रावी के किनारे पर एक नये गांव करतारपुर की स्थापना की। जब यहां एक छोटी-सी धर्मशाला बन गई तब आपके माता-पिता एवं घर के सारे सदस्य यहां आ गए। भाई मरदाना जी का परिवार भी यहीं आकर रहने लगा। सतिगुरु जी काफी समय इस नगर को स्थापित करने में ही व्यस्त रहे। भाई गुरदास जी भी लिखते हैं कि गुरु जी ने करतारपुर आकर उदासियों पर जाते समय धारण किये गए भेख (वस्त्रों) को उतार कर संसारियों वाले कपड़े पहन लिए थे :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा।
उलटी गंग वहाईओनि गुर अंगदु सिरि उपरि धारा। (वार १:३८)

श्री गुरु नानक देव जी ने करतारपुर में ऐसी धर्मसाल की स्थापना की जहां से गुरमति का प्रचार होता था। गुरमति मार्ग को स्थापित करने और उसे आगे बढ़ाने के लिए श्री गुरु

*५६३-सी, टाईप-२, रेल कोच फैक्टरी, कपूरथला-१४४६०२ (पंजाब)

नानक देव जी ने श्री गुरु अंगद देव जी को कई कठिन परीक्षाओं में सफल होने पर चुना। करतारपुर में गुरु जी की सिधों तथा योगियों एवं अन्य मतों-मतांतरों के साधुओं से विचार-गोष्ठि होती ही रहती थी। शबद-कीर्तन की मधुर धुनें सुनाई पड़ती थीं जिसके कारण गुरु साहिब के दर्शन के लिए आये श्रद्धालु तथा जिज्ञासु आत्मिक मंडल की उच्चता को अनुभव करके अपने जीवन को सफल करते थे। संध्या के समय 'सो दरु-आरती' का पाठ होता था और अमृत वेले 'जपु जी' का पाठ रोजाना होता था। भाई गुरदास जी के अनुसार गुरु साहिब ने करतारपुर में उलटी गंगा चला दी थी:

उलटी गंग वहाईओनि गुर अंगदु सिरि उपरि धारा।
पुतरी कउलु न पालिआ मनि खोटे आकी नसिआरा।
बाणी मुखहु उचारीऐ हुइ रुसनाई मिटै अंधारा।
गिआनु गोसटि चरचा सदा अनहदि सबदि उठे धुनकारा।
सोदरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा।
गुरमुखि भारि अथरबणि तारा॥ (वार १:३८)

भाई गुरदास जी के उपरोक्त कथन से हमारे सामने गुरु नानक साहिब जी की करतारपुर में की गई निर्मल सरगर्मियों की सुंदर तस्वीर दिखाई पड़ती है। गुरु नानक साहिब ने करतारपुर में रह कर सिक्खी-मार्ग को आगे बढ़ाया तथा करतारपुर से बाहर जाकर भी सिधों, योगियों तथा अन्य मत-मतांतरों के महापरुषों के साथ गोष्ठियां करके गुरमति का दिग्विजय करते रहे। कलयुग में विषय-विकारों की तपिश में जल रही लोकाई को धर्मों के आपसी द्वंद से मुक्त करने के लिए और जगत में आनंद को स्थापित करने के लिए तथा पाखंड से धर्म को मुक्त करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों को एक ही अकाल पुरख का अनुयाई बनाया:

गड़ बगदादु निवाइ कै मका मदीना सभे निवाइआ।
सिध चउरासीह मंडली खटि दरसनि पाखंडि जिणाइआ।
पाताला आकास लख जीती धरती जगत सबाइआ।
जीते नव खंड मेदनी सति नामु दा चक्र फिराइआ।
देव दानो राकसि दैत सभ चिति गुपति सभि चरनी लाइआ।
इंद्रासणि अपछरा राग रागनी मंगलु गाइआ।
भइआ अनंद जगतु विचि कलि तारन गुरु नानकु आइआ।
हिंदू मुसलमाणि निवाइआ॥ (वार १:३७)

गुरु साहिब ने करतारपुर से दूसरी उदासी प्रारंभ की। यह उदासी (प्रचार-यात्रा) कुछ महीनों की थी यानि कि सन् १५१७ से १५१८ तक। इस उदासी के दौरान गुरु जी ने जम्मू-कश्मीर की यात्रा की। आप सियालकोट और जम्मू से होते हुए पहले वैष्णो देवी गए, फिर मटन, अमरनाथ से होते हुए बर्फ से लदी हुई पर्वतमाला पर गए, जहां उनका कुछ सिधों के साथ संवाद हुआ। भाई गुरदास जी इस बात की गवाही देते हैं:

--फिरि जाइ चढ़िआ सुमेर परि सिधि मंडली द्रिसटी आई। (वार १:२८)
--सबदि जिती सिधि मंडली कीतोसु अपणा पंथु निराला। (वार १:३१)

सतिगुरु नानक देव जी तीसरी उदासी पर (सन् १५१८ से १५२१) करतारपुर से पश्चिम (मध्य-पूर्व) के देशों की यात्रा के लिए गए:

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

शाश्वत आलोक स्तंभ हैं : चार उदासियां

*-डॉ. मधु बाला**

अज्ञान-रूपी अंधकार के प्रकाशक, सूर्यवत् देदीप्यमान, सिक्ख मत के आचार्य, धार्मिक इतिहास के अद्वितीय नेतृत्वकर्त्ता श्री गुरु नानक देव जी का जन्म राय भोय की तलवंडी में श्री महिता कालू जी के घर माता त्रिपता जी के उदर से हुआ।

सन् १४७५ में पिता जी ने इन्हें गोपाल दास पंडित के पास हिंदी पढ़ने के लिए, सन् १४७८में ब्रज लाल पंडित के पास संस्कृत की शिक्षा ग्रहण करने के लिए तथा १४८२ में मौलवी कुतबुद्दीन के पास फारसी सीखने के लिए भेजा, परन्तु गुरु जी ने आत्मिक बल पर इन तीनों को ही अपने शुद्ध अध्यात्मिक ख्यालों से प्रभावित किया। गुरु जी ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि अपने अंत:प्रकाश से संसार के अज्ञान, अंधकार का विनाश करना आवश्यक है अथवा घर बैठकर संसार का पूर्ण उपकार नहीं हो सकता।

वेईं नदी में इलहाम और 'धरती धरमसाल' की तासीर का संगम करवाने वाले उस पैगंबरी आवेश को उतारा जिसमें ज्ञान, ध्यान, सभ्यता और इखलाक के महान अमल की अनेक चमत्कारी मंजिलें समाई हुई हैं :

--नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ (पन्ना ९६६)

--मारिआ सिका जगति विचि नानक निरमल पंथु चलाइआ ॥ (भाई गुरदास जी वार, १:४५)

ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध, तृष्णा-क्रोध आदि की प्रचंड अग्नि से जलती हुई सृष्टि को परमात्मा के नाम-रूपी अमृत की वर्षा द्वारा शांत करने हेतु आपने सन् १४९७ में देश-रटन आरंभ किया अथवा अपनी उदासियां आरंभ कीं। उदासी शब्द 'उदास' से बना है। (उद्+अस्+घञप्रत्यय), जिसका अर्थ है अनासवित्त, तटस्थ, वीतराग, भौतिक संसार की क्रियाओं में सक्रिय भाग न लेने वाला। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा किए गए देश-देशांतरों के भ्रमण में से चार भ्रमण प्रसिद्ध हैं, जिन्हें 'उदासियां' नाम दिया गया है।

तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में आडंबर का बोलबाला था। एक तरफ पंडितों, योगियों तथा मुल्ला-मौलवियों का आडंबरपूर्ण कर्मकांड था तथा दूसरी तरफ चोर, ठग, लुटेरे और अत्याचारी राज-कर्मचारियों का दुर्व्यवहार था। समाज की इस विरोधात्मक स्थिति में समता लाने हेतु ही श्री गुरु नानक देव जी ने चार उदासियां अथवा यात्राएं कीं।

प्रथम उदासी पूर्व की (जून १४९९-१५१० तक) : यह उदासी सुलतानपुर से आरंभ हुई और १५१० ई के अंत में तलवंडी में समाप्त हुई। भाई मरदाना जी भी गुरु जी के साथ थे। इस उदासी में गुरु जी ने भारत के प्रमुख तीर्थ-स्थानों, जैसे पिहोवा, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, अयोध्या, प्रयाग, बुद्धगया, कामाख्या देवी का मंदिर, जगन्नाथपुरी के अतिरिक्त आसाम एवं ढाका से आगे के भू-क्षेत्रों में अपने महान संदेश का नाद

**आई-१०९, गली नं: ५, मजीठिया इन्कलेव, पटियाला-१४७००५*

गुंजाया। पहली उदासी को तर्क के आधार पर दार्शनिक कहा जाता है, क्योंकि इस यात्रा के माध्यम से गुरु जी ने सदियों से स्थापित ब्राह्मणवादी, वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध-जैन, तांत्रिक एवं योगमत के रूढ़िवादी सिद्धांतों का खंडन करके धर्म की स्वतंत्रता की नींव रखी। प्रथम उदासी के दौरान गुरु जी सैदपुर में भाई लालो जी के पास पहुंचे। मलिक भागो को उपदेश दिया। जब पंडितों ने कहा कि 'नानक' दोषी है, वह 'नीच' के घर खाना खाता है तो गुरु नानक साहिब ने कहा:

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (पन्ना १५)

तलवंडी में माता-पिता से भेंट करने के बाद सज्जन ठग का उद्धार किया जो केवल नाम का सज्जन था, परन्तु वास्तव में वह अत्याचारी था। ज्यों ही गुरु जी ने शबद उच्चारण किया उसे अपने पाप आंखों के सामने दिखाई देने लगे। उसने गुरु जी से चरण-पाहुल और नाम-दान लिया और सचमुच का ही सज्जन बन गया। इसी बीच उनकी भेंट पाकपटन शेख ब्रह्म फरीद सानी नामक प्रसिद्ध फकीर से हुई। कुरुक्षेत्र में सूर्य-ग्रहण के अवसर पर आप जी का उपदेश था, सच्चा वैष्णव वो है जो किसी को पीड़ित नहीं करता। पानीपत में शेख टटीहरी को मन की संकल्प-विकल्प रूपी इच्छाओं को मूंडने का उपदेश दिया। भक्त कबीर जी ने भी इस तथ्य का समर्थन किया है जैसे कि :

कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइ ॥
जो किछु कीआ सो मन कीआ मूंडा मूंडु अजांइ ॥१०१॥ (पन्ना १३६९)

हरिद्वार के पंडितों के साथ चर्चा करते हुए गुरु जी ने कहा कि :

नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥
सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥
ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥
राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥
पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥
पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥
(पन्ना १२४०)

अर्थात् गुरु जी ने कहा, यदि कोई ब्राह्मण, योगी, वेदपाठी, गृहस्थी, राजा अथवा पढ़ा-लिखा विद्वान सच्ची अंजुलि भरना चाहता है तो वो ये हैं:

१. ब्राह्मण : संतोष धारण करे, जितना दान कोई दे उसमें संतुष्ट रहे।
२. वेदपाठी : ईश्वर-ज्ञान की प्राप्ति करे।
३. जोगी : ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करे।
४. गृहस्थी : ईमानदारी की कमाई करे और दान करे।
५. राजा : न्यायवृत्ति का पालन करे।
६. विद्वान : सत्य-स्वरूप परमात्मा का ध्यान करे।

हरिद्वार में जहां पर गुरु जी की ज्ञान-गोष्ठि हुई थी वह स्थान आज "गुरुद्वारा गिआन गोदड़ी" के नाम से प्रसिद्ध है।

दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी एवं काजी को उपदेश दिया। वृंदावन में स्वांगधारी कृष्ण-गोपी एवं राजा-रानियों की रासलीला देख ऊंचे आचरण को धारण करने का शबद उच्चारण किया। गोरखमता के योगियों के साथ चर्चा करते हुए उनके बाहरी भेष पर शबद उच्चारण करते हुए गुरु जी कहते हैं :

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोगु जुगति इव

पाईऐ ॥ . . .
नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥
वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥ *(पन्ना ७३०)*

अर्थात् खिंथा, डंडा, शरीर पर राख़ मलने से, सिंगी सजाने या सिर मुंडाने से योग नहीं होता। माया के मध्य रहते हुए भी उससे निर्लेप रहना, इच्छा-रहित एवं विकार-रहित होकर जीने से ही परमात्मा प्राप्त होता है। सिधों के साथ हुई चर्चा में गुरु जी द्वारा सिधों को सही रास्ता दिखाने के कारण ही 'गोरखमता' 'नानकमता' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। भाई मरदाना जी को जिन मीठे रीठों का स्वाद चखाया वे आज भी गुरुद्वारा रीठा साहिब जाने वालों को प्रसाद की भांति दिए जाते हैं। गुरु जी ने बनारस के पंडितों से चर्चा की 'गया पितृ-गति' देखकर उन्होंने उपदेश दिया कि अमरता-प्राप्ति के लिए जीवित रहते ही दान करना चाहिए, वही लोक-परलोक में सहाई होता है।

बोधगया, आसाम से जगन्नाथपुरी जाकर लगभग दो महीने तक लोगों को उपदेश दिया। मंदिर में पंडितों को आरती करते देख उन्होंने निम्नलिखित शबद का उच्चारण किया :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ *(पन्ना ६६३)*

पंजाब वापिस आते समय कटक, आगरा से होकर रुहेलखंड में गुलामों का उद्धार करते हुए बेबे नानकी के पास सुलतानपुर लोधी पहुंचे। लाहौर तलवंडी जाकर पुन: शेखब्रह्म से भेंट की। दीपालपुर कोढ़ी का उद्धार किया। कीरतपुर में साईं बुड्ढन शाह को उपदेश दिया कि सबसे बड़ा एकांत है--एकाग्रचित्त होकर सतसंग करना तथा श्रेष्ठ उपदेशों को जीवन में धारण करके जीवन को उत्तम बनाना। जहां पीर हमजा गौंस के कहर से शहर को बचाया वो 'गुरुद्वारा बेर साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। लाहौर में दुनी चंद का उद्धार किया तथा सन् १५०४ ई में करतारपुर की नींव रखी। यहीं एक सतसंगी को गुरु जी ने नेक व्यक्ति के लक्षण बताते हुए कहा--"जिसके विचार नेक हों, जो दूसरों की प्रशंसा में खुश हो, संत-जनों से प्रेम करे, उपकार करने वाले का सम्मान करे, बड़ों की सेवा और आदर करे, गरीबों पर दया करे, जो गृहस्थ धर्म की पालना करे, सतसंगत करे और दुर्जन का त्याग करे।"

द्वितीय उदासी दक्षिण की : श्री गुरु नानक देव जी की दूसरी उदासी बीकानेर, पुष्कर, अजमेर और राजपूतानों के कितने ही शुष्क इलाकों को पार करती हुई दक्षिण तक और लंका तक जाकर सम्पूर्ण हुई। वापसी पर गुरु जी गुजरात के स्थान मुलतान और पुन: पाकपटन होते हुए अप्रैल १५१५ ई में तलवंडी पहुंचे। इस उदासी में भाई बाला जी और भाई मरदाना जी दोनों ही गुरु जी के साथ थे। इस यात्रा में उन्होंने सरसा के पीरों के साथ चर्चा की, सरेवड़ा साधुओं के जीव हिंसा के भ्रम को दूर किया, कौडा राक्षस से भाई मरदाना जी की रक्षा की तथा उसे जीवों पर दया करने तथा नाम-स्मरण का उपदेश दिया।

राजा शिवनाभ को ज्ञान-उपदेश दिया। भर्तृहरि योगी के साथ चर्चा करते हुए कहा कि नाम का रस पीने वाले सहज ही परमात्मा का दर्शन कर लेते हैं, उन्हे समाधि की जरूरत नहीं पड़ती :

गुर की साखी अंम्रित बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥
दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥ *(पन्ना ३६०)*

बहावलपुर में पीर मखदूम बहावदीन कुरैशी को माया की निर्जीवता का उपदेश दिया और अनेक शिष्यों को नाम-दान देकर वापिस करतारपुर आ गए।

तृतीथ उदासी उत्तर की : इस उदासी का पथ कशमीर, तिब्बत, सिक्कम, भूटान तक फैला है। यह सन् १७१६ ई मुताबिक संवत् १७७५ मुताबिक में समाप्त हो जाती है। यह उदासी शैव, बुद्ध और प्रमुख तौर पर योगमत के ध्यान-मंडलों, रिद्धि-सिद्धि और इनकी शास्त्र विधियों का जायजा लेकर 'धरती धरमसाल' में दैवी असलियत के ठीक केंद्र की पहचान करती और करवाती है। कैलाश पर्वत पर सिद्धों की मंडली से वार्तालाप करते हुए कहते हैं कि:

सिध छपि बैठे परबती कउणु जगति कउ पारि उतारा।
जोगी गिआन विहूणिआ निस दिनि अंगि लगाए छारा। *(वार १:२९)*

अर्थात् सिद्धों के बिना जगत का कल्याण कौन करे? सिध और योगी तो पर्वतों पर बैठे हैं और गुरु के बिना सारा संसार नष्ट हो रहा है, डूब रहा है।

चतुर्थ उदासी पश्चिम की : गुरु की चतुर्थ उदासी १५१८ ई से आरंभ होकर १५२२ ई में समाप्त होती है। गुरु जी ने इस दौरान मक्का, मदीना, बगदाद, बाकू, मशहद, ताशकंद, हिशत तथा काबुल को नवीन धर्म के संदेश का उपदेश दिया। इस उदासी में उन्होंने मक्का हाजियों के साथ चर्चा की, मक्का-यात्रा में पीरों एवं मौलवियों के साथ चर्चा, बगदाद-यात्रा, सियालकोट में पुन: मूले किराड़ के घर जाना ऐमनाबाद में भाई लालो जी के पास जाने के बाद सैदपुर की तबाही देखकर गुरु जी बाबर के पास गए और यह शबद उच्चारण किया :

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ *(पन्ना ३६०)*

१५२२ ई को वापिस करतारपुर पहुंच कर गुरु जी ने 'उदासी' की वेशभूषा उतार कर 'गृहस्थी-वस्त्र' धारण किए :

फिरि बाबा आइआ करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा। *(वार १ : ३८)*

श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्यों के कल्याण हेतु सरल एवं सहज मार्ग का उपदेश दिया। सबसे श्रेष्ठ है 'सदाचार का पालन करना'। सभी धर्मों का सार यही है, क्योंकि सदाचार ही 'सत्य' की ओर प्रेरित करता है। गुरु जी ने सामूहिक मानवीय सत्य, सामाजिक परिवेश एवं प्रकृति के सार-तत्व से ग्रहण किया मौलिक उपदेश जन-जन तक इन चार उदासियों द्वारा पहुंचाया। उनके इस अद्भुत लोक-कल्याणकारी कार्य ने आध्यात्मिक क्षेत्र में क्रांति का कार्य किया। जहां-जहां गुरु जी ने यात्राएं कीं वहां-वहां तर्क सहित आडंबरों, अंधविश्वासों, रूढ़ियों और पाखंडों का खंडन किया। गुरु जी की इन चार यात्राओं ने जो चारों दिशाओं को आलोकित किया है, उसका प्रकाश शाश्वत है।



श्री गुरु नानक देव जी की पहली उदासी

*-बीबी अमरजीत कौर**

जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी के जन्म के समय जगत में चारों ओर कूड़-कुसत्य का प्रचार हो रहा था। राज्य के हाकिम ही जनता पर उपद्रव कर रहे थे। जब्र और धक्केशाही का बोलबाला था। गरीब-मजलूम की हालत बहुत ही दयनीय थी। हाकिम लोग गरीबों का माल-धन लूट कर अपना घर भर रहे थे। समाज में झूठ का बोलबाला था। धार्मिक आगू भी धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को ठगते, लूटते और अज्ञानता के अंधेरे में धकेल रहे थे। काजी अपने किए कुकर्म छुपाने के लिए कुरान की गलत व्याख्या कर रहे थे। ब्राह्मण भी समाज में वर्ग-भेद कर अपनी श्रेणी के अभिमान में अभिमानी हो रहे थे तथा योगी-सन्यासी होकर जहां गृहस्थ के त्यागी होने का ढोंग कर रहे थे वहीं फिर अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए उन्हीं के घर में मांगने जाते थे। श्री गुरु नानक देव जी के समय धर्म पंख लगाकर उड़ गया था, केवल कूड़ ही भरपूर हो रहा था।

धरति लोकाई को सोधने के लिए गुरु जी ने पहली उदासी संवत् १५५४ को पूर्व की ओर आरंभ की। इस दिशा में भारत के बहुत-से हिंदू मत से संबंधित धार्मिक स्थान थे। धर्म के नाम पर कर्मकांड करने वालों ने लोगों को अपने मायाजाल में फंसाया हुआ था। गुरु जी का प्रचार-ढंग अनोखा था। गुरु जी धार्मिक स्थानों पर त्योहारों के मौकों पर गए ताकि वहां जाकर उन धार्मिक स्थानों से संबंधित गद्दीनशीनों और आम लोगों से रूबरू हुआ जा सके और उनको इन वहमों-भ्रमों से बाहर निकाला जा सके। गुरु जी अपनी पहली उदासी के दौरान सबसे पहले कुरुक्षेत्र पहुंचे। कुरुक्षेत्र हिंदुओं का प्रसिद्ध धार्मिक स्थान है। वहां पर सूर्य-ग्रहण के समय लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी हुई थी। ब्राह्मणी कर्म के अनुसार सूर्य-ग्रहण के समय आग जलाना या कुछ पकाना मना था परंतु उस समय मांस पकाना तो और भी घोर पाप समझा जाना था।

गुरु जी ने ये दोनों भ्रम मिटाने और आशंका के निवारण के लिए आग जला कर मांस पकाना शुरू कर दिया। धूआं उठता देख लोग क्रोध में आ गए और गुरु जी को ऊल-जलूल बोलने लगे। गुरु जी के साथ वहां के बड़े-बड़े पंडित और विद्वान विचार-चर्चा के लिए आ गए। उनमें से नानू नामक पंडित सबसे आगे था। गुरु जी भी यही चाहते थे कि लोग आएं और वे उनके भ्रम का निवारण करें। गुरु जी ने अपने मीठे, पवित्र और निर्मल वचनों से सबको चुप करवा उनकी तसल्ली करवाई। नानू पंडित और अन्य विद्वानों तथा आम लोगों के भ्रम दूर हुए और वे सभी गुरु जी के सिक्ख बने।

वहां से चलकर गुरु जी पानीपत होते हुए हरिद्वार पहुंचे। गुरु जी ने वहां पर भी प्रचार का अनोखा तरीका अपनाया। वहां पर लोग

**प्रिंसीपल, न्यू अमृतसर माडल स्कूल, भुल्लर रोड, गोबिंद नगर, बटाला (गुरदासपुर)-१४३५०५*

गंगा में स्नान करते समय सूर्य को पानी दे रहे थे। गुरु जी ने उनसे पूछा, "आप यह क्या कर रहे हो?" उन्होंने कहा, "हम अपने पितरों को पानी पहुंचा रहे हैं।" गुरु जी ने पश्चिम की ओर मुंह कर पानी फेंकना शुरू कर दिया। लोगों ने उनसे पूछा कि आप ये क्या कर रहे हो? गुरु जी ने कहा, "भाइयो! दरअसल पंजाब में भारी सूखा पड़ा हुआ है इसलिए मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूं।" यह सुनकर लोग हंस पड़े और कहने लगे कि यह पानी आपके खेतों तक कैसे पहुंच सकेगा? गुरु जी ने उनको कहा कि अगर यह पानी मेरे खेतों तक नहीं पहुंच सकता तो आपके पितरों तक आपका पानी कैसे पहुंच जाएगा? यह बात सुनकर सभी की आंखें खुल गईं और सभी गुरु जी के सिक्ख बने।

हरिद्वार से चलकर गुरु जी गोरखमता पहुंचे जो योग मत का प्रमुख केंद्र था। वहां पर सिधों से चर्चा हुई। सिध हार गए। तब से 'गोरखमता' 'नानकमता' बन गया।

फिर गुरु जी बनारस पहुंचे। वहां पर पंडित चतुर दास के साथ बुत-पूजा और अन्य मसलों पर चर्चा हुई। चतुर दास को यकीन हो गया कि परमात्मा घट-घट में व्याप्त है और नाम-बाणी के द्वारा उसकी प्राप्ति हो सकती है।

फिर वहां पर गुरु जी ने बनारस में मौजूद भक्त कबीर जी और भक्त रविदास जी के साथ गोष्ठि की। गुरु जी ने उनकी बाणी को अपने पास संभाल लिया।

वहां से गुरु जी गया होते हुए पटना पहुंचे और यहां सालस राय चौधरी के साथ मुलाकात हुई। गुरु जी ने सालस राय को खोटे-खरे की पहचान करवा, मनुष्य-जन्म को हीरे जैसा अनमोल बता व्यर्थ में न गंवाने का उपदेश दिया और उसे अपना सिक्ख बनाया।

वहां से आगे गुरु जी कामरूप (आसाम) पहुंचे। वहां पर नूर शाह जैसी जादूगरनियों ने आपको छलना चाहा। गुरु जी ने उनका जादू तोड़ा और उनको सच्चे आचरण की सच्ची दौलत बख्शी। वहां से गुरु जी ढाका पहुंचे और वहां से कटक होते हुए गुरु जी जगन्नाथपुरी पहुंचे।

जगन्नाथपुरी में प्रसिद्ध हिंदू तीर्थ पर आप जी ने मूर्ति के आगे की जा रही परंपरागत आरती में शामिल होने से इंकार कर दिया। पंडितों के पूछने पर कि "आप आरती में शामिल क्यों नहीं हुए", गुरु जी ने कहा कि "वे अकाल पुरख की 'असली आरती' में शामिल थे।" गुरु जी ने इस समय *"गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥"* शबद का उच्चारण किया। पंडित गुरु जी के आगे नत्मस्तक हुए और उन्होंने गुरु जी द्वारा बख्शे अकाल पुरख की सर्वव्यापकता तथा अनंतता के उपदेश को ग्रहण किया। गुरु जी ने उपदेश दिया कि परमात्मा के नजारे को देखो, ब्रह्मांड में हर समय हो रही परमात्मा की आरती के दर्शन करो, नाम जपो और शुद्ध धर्म की कार करो।

वहां से गुरु जी जगत का कल्याण करते हुए, लोगों को अकाल पुरख का नाम जपने का उपदेश करके, सच-धर्म का उपदेश देते हुए संवत् १५६५ को वापिस सुलतानपुर पहुंचे और इस पहली उदासी संपूर्ण की। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि गुरु जी की पहली उदासी अत्यंत महत्वपूर्ण सच-धर्म-प्रचार-यात्रा थी जिसमें आप ने अनेक भूले-भटके देशवासियों को धर्म का सही मार्ग दर्शा कर उनका कल्याण किया।



श्री गुरु नानक देव जी की दूसरी उदासी

-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

'उदासी' का शाब्दिक अर्थ है- फिक्रमंद होना, चिंतित होना। प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी लोक की भलाई की चिंता लेकर लोक-कल्याण-यात्राओं पर निकले थे, अत: प्रथम पातशाह की 'जगत-फेरी' को 'उदासियां' कहा गया।

'सिध गोसटि' बाणी में वर्णन आया है कि सिधों ने पूछा कि "आपने उदासियों का वेश क्यों धारण किया?" श्री गुरु नानक देव जी ने फरमाया:

गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥
दरसन कै ताई भेख निवासी ॥
साच वखर कै हम वणजारे ॥
नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥ (पन्ना ९३९)

अर्थात् "मैं गुरमुखों की खोज करने के लिए 'उदासी' बना हूं। मैं प्रभु के सच्चे नाम रूपी वस्तु का बंजारा या व्यापारी हूं। गुरमुख होना यानी गुरु के दर्शाये मार्ग पर चलना ही इस संसार से पार उतरने का एक-मात्र मार्ग है।"

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई मरदाना जी को साथ लिया। बेबे नानकी द्वारा दिये गये पैसों से नई रबाब खरीदी और धरती के लोगों को शोधने के लिए निकल पड़े। भाई गुरदास जी का कथन है :

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।
चढ़िआ सोधणि धरति लुकाई ॥ (वार १:२४)

गुरु जी ने लोक-कल्याण के लिए चारों दिशाओं में चार यात्राएं कीं।

श्री गुरु नानक देव जी की दूसरी उदासी

प्रथम पातशाह ने अपनी दूसरी उदासी दक्षिण दिशा की ओर की। इस प्रचार-यात्रा में गुरु जी मालवा, राजपूताना, उज्जैन, इंदौर, महाराष्ट्र, बिदर, गोलकुंडा, शिवकाशी, श्रीरंगपट्टम, रामेश्वरम आदि से होते हुए लंका पहुंचे और फिर नीलगिरी पर्वत, तंजौर, पद्मनाभ, नासिक, पंचवटी, गिरनार, सोमनाथ, द्वारिका, कच्छ, सिंध, अमरकोट, बहावलपुर, मुलतान आदि से होते हुए पुन: सुलतानपुर लोधी पहुंचे।

गुरु पातशाह ने यह यात्रा वैसाख संवत् १५६७ वि. अर्थात् अप्रैल-मई सन् १५१० ई. में आरंभ की और भादों संवत् १५७२ वि. अर्थात् अगस्त-सितंबर सन् १५१५ ई. में समाप्त की।

सुलतानपुर लोधी से आरंभ : श्री गुरु नानक देव जी ने दूसरी उदासी का आरंभ वैसाख संवत् १५६७ वि. को सुलतानपुर लोधी से किया। गुरु जी ने सुलतानपुर लोधी से चलकर सतलुज पार किया और धरमकोट जा पहुंचे। कुछ दिन वहां रहकर आगे बढ़े और मालवा-क्षेत्र का भ्रमण करते हुए बठिंडा पहुंचे। मार्ग में जनता को मुक्ति का सीधा-सच्चा मार्ग दिखाते हुए १४ आषाढ़ संवत् १५६७ वि. को सिरसा जा पहुंचे।

सिरसा में मुस्लिम फकीरों से चर्चा : सिरसा में उस समय एक करामाती फकीर ख्वाजा अब्दुल शकूर का बड़ा नाम था। वह और अनेक मुस्लिम फकीर बहावल हक, फरीददीन, जती लाल, जलालदीन आदि गुरु जी को आया

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना (पंजाब), मो: ०९४१७२-७६२७१

जान मिलने आये। ये सभी कई दिनों तक प्रथम पातशाह से आध्यात्मिक चर्चा करते रहे। अंततः गुरु जी के रूहानी ज्ञान ने सबको नत्मस्तक कर दिया।

बीकानेर में जैन भिक्षुओं से भेंट : श्री गुरु नानक देव जी सिरसा से चलकर वर्तमान उत्तरी राजस्थान का भ्रमण करते हुए बीकानेर पहुंचे। यहां गुरु जी की भेंट कुछ जैन भिक्षुओं से हुई। 'अहिंसा' पर चर्चा चल पड़ी। गुरु जी ने फरमाया :

जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥
(पन्ना १५०)

अर्थात् जिलाने अथवा जीवित रखने और मारने वाला 'अकाल पुरख' है। जीव का उसके सिवा कौन रक्षक हो सकता है? यदि हम जीवों की रक्षा-सुरक्षा में प्रभु की ओर से ही सौंपा कुछ कार्य करते हैं तो हमें अपने 'अहिंसक' होने का मान नहीं करना चाहिए जो कि अहं या हउमै का ही एक रूप है।

झाला पटन में भक्त पीपा जी के शिष्यों से वार्ता : इसके बाद गुरु जी दक्षिण दिशा में आगे बढ़े और जैसलमेर, जोधपुर आदि का भ्रमण करते हुए झाला पटन पहुंचे। झाला पटन भक्त पीपा जी का जन्म-स्थान है। यहां गुरु जी की भेंट भक्त पीपा जी के बहुत-से शिष्यों से हुई। शिष्यों ने बड़े प्रेम से भक्त जी के जीवन की विभिन्न साखियों की चर्चा की।

हरि जी को सद्-उपदेश : झाला पटन से चलकर गुरु जी गुफे शहर पहुंचे। यहां हरि जी नाम का एक सिध था, जो पर्वत पर रहता था। वह सदा चमत्कार आदि दिखा कर जनता को भयभीत करता रहता था। गुरु जी उससे मिले और उपदेश देकर उसे चमत्कार दिखाने से हटाकर नाम-स्मरण की ओर लगाया।

गुफे से चलकर गुरु जी नाथ द्वारा, उदयपुर, चित्तौड़ होते हुए १४ चैत्र संवत् १५६८ मुताबिक अप्रैल सन् १५११ ई को अजमेर पहुंचे।

गुरु जी का अजमेर प्रवास : अजमेर में गुरु जी ने पहले 'महादेव की गुफा' देखी। फिर अजमेर शरीफ के मजावरों से वार्ता की। *'मुसलमाणु कहावणु मुसकलु . . .'* और *'पंजि निवाजा वखत पंजि . . .'* जैसे शबदों का उच्चारण किया और उन्हें सच्ची फकीरी का मार्ग दिखाया।

इसके बाद वैसाखी के मेले के अवसर पर 'पुष्कर तीर्थ' पहुंचे।

धारा नगरी के कनफटे योगियों को ज्ञान

पुष्कर से सिरोही और आबू पर्वत होते हुए गुरु जी धारा नगरी जा पहुंचे। एक बाग में जा डेरा लगाया। गुरु जी को आये देख कनफटे योगियों को बड़ी ईर्ष्या हुई। वाद-विवाद करने गुरु जी के पास आ गये। गुरु जी ने बड़े प्रेम से 'योग' का वास्तविक अर्थ समझाया। गुरु जी के व्याख्यान से योगियों की आंखें खुल गईं।

इसके बाद गुरु जी आगे बढ़े और मालवा क्षेत्र के देवगढ़, लोधीपुर, अहमदनगर और बांसवाड़ा जैसे नगरों का भ्रमण करते हुए महानदी के किनारे जा पहुंचे।

गुरु जी का उज्जैन पहुंचना : गुरु जी महानदी पार करके २८ आषाढ़ संवत् १५६८ मुताबिक मई १५११ ई को उज्जैन पहुंचे। गुरु जी वहां शिप्रा नदी के किनारे स्थित एक बड़े तीर्थ भृतहरि की गुफा के पास जा विराजे। इस गुफा के पास ही भरथरी नाम का एक योगी रहता था। उसने भाई मरदाना जी का कीर्तन सुना तो बहुत प्रभावित हुआ। वह गुरु जी के पास आया और मोक्ष के विषय में प्रश्न किया। गुरु जी ने नाम-शबद की महिमा का बखान

किया और 'अकाल पुरख' की 'नदरि' की व्याख्या की। योगी भरथरी बहुत प्रभावित हुआ। इसके बाद बहुत देर तक गूढ़ आध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा हुई। जोगी भरभरी ने हर प्रकार से संतुष्ट होकर गुरु जी को प्रणाम किया।

इसके बाद श्री गुरु नानक देव जी महाकालेश्वर मंदिर से होते हुए सूरज कुंड पहुंचे जहां वैरागियों को नाम-महिमा का उपदेश दिया।

नर्मदेश्वर के पुजारियों को 'ओअंकार' का उपदेश : फिर नर्मदा नदी पार करके नर्मदेश्वर (महादेव-गौरी कुंड) पहुंचे। शाम को आरती के समय जब सभी दंडवत कर रहे थे तो गुरु जी ने प्रणाम न किया। जब पुजारियों ने एतराज किया तो श्री गुरु नानक देव जी ने *'हमरा ओअंकार निराला'* शबद उच्चारण करके 'ओअंकार' के वास्तविक रूप का वर्णन किया। गुरु जी की यह बाणी *'दखणी ओअंकार'* के नाम से प्रसिद्ध है।

इंदौर-होशंगाबाद के व्यापारियों का मार्ग-दर्शन : दक्षिण दिशा की ओर बढ़ते हुए गुरु जी इंदौर पहुंचे। उसके बाद होशंगाबाद गये। यहां के व्यापारी बहुत बड़ी संख्या में गुरु जी के दर्शन करने आये। गुरु जी ने *'वणजु करहु वणजारिहो'* शबद का उच्चारण करके व्यापारियों को उपदेश दिया कि वे 'हरि-जस' (अकाल पुरख का गुणगान, सिफति-सलाह) रूपी वस्तु का व्यापार करें।

महाराष्ट्र का भ्रमण : इसके बाद श्री गुरु नानक देव जी ने तमसा नदी पार की। महाराष्ट्र का भ्रमण करते हुए ताप्ती को पार किया और गौड़ देश, नरसिंह पुर, रामटेकरी से होते हुए कृष्णा नदी पार कर भक्त नामदेव जी के जन्म-स्थान आउंडे नगर पहुंचे। मार्ग की जनता को नाम-शबद का उपदेश देते हुए गुरु जी करनूर पहुंचे। करनूर के देवता-उपासक लोगों को 'अकाल पुरख' से जोड़कर गुरु जी आगे बढ़े और बिदर पहुंचे।

बिदर-नांदेड़-झीरा में प्रवास : बिदर में बहुत-से कनफटे योगी गुरु जी से मिलने आये। गुरु जी ने शबद उच्चारण किया और कनफटे योगियों को समझाया कि वैराग का अर्थ वैराग की निशानियों को धारण करना नहीं बल्कि सद्गुणों को धारण करना है।

बिदर से चलकर गुरु जी झीरा पर्वत पर आये। उस समय यहां दो मुसलमान फकीर जलालदीन और सैयद याकूब अली रहते थे। दोनों को जब पता चला कि गुरु जी आये हैं तो वे बड़े भक्ति-भाव से मिलने आये। सुंदर ज्ञान-चर्चा चली और दोनों गुरु जी को प्रणाम करके गये।

इसके बाद गुरु जी नांदेड़ पहुंचे और फकीर सैयद शाह हुसैन लकड़ के पास कुछ समय तक रहे।

दक्षिण देश का भ्रमण : गुरु जी दक्षिण दिशा में और आगे बढ़े। आपने गोदावरी नदी पार की और गोलकुंडा, किष्किंधा, अनंतपुर, शिवकाशी, कांचीपुरम का भ्रमण करते हुए त्रिवनमलाई पहुंचे। कुछ दिन यहां रह कर गुरु जी त्रिचनापल्ली पहुंचे जहां आलवार वैष्णव संतों का प्रमुख स्थान श्रीरंगम है। भक्त रामानुज जी ने भी अपने जीवन के अंतिम वर्ष यहीं गुजारे थे। त्रिचनापल्ली से गुरु जी कावेरी नदी में नाव के रास्ते नागा पटनम पहुंचे।

श्रीलंका में प्रवेश : नागा पटनम बंदरगाह से श्री गुरु नानक देव जी समुद्र पार करके लंका के बंदरगाह त्रिनकोमाली पहुंचे। त्रिनकोमाली से मटिआकुलम (बटीकलोआ) गये।

राजा शिवनाभ को उपदेश : मटिआकुलम का राजा शिवनाभ श्री गुरु नानक देव जी की महिमा सुन चुका था। जब उसे पता चला कि उत्तर भारत से कोई संत आया है तो उसे शंका हुई कि क्या पता ये श्री गुरु नानक देव जी न हों। उसने परीक्षा लेने के लिए सुंदरियां भेजीं। जब उसे गुरु जी की पहचान हुई तो प्रणाम करने आया और अपने महल में ले जाकर गुरु जी की आवभगत की। कुछ समय शिवनाभ के महल में विश्राम करके गुरु जी मलिआकुलम से दक्षिण में कुछ दूरी पर स्थित एक रमणीय स्थान पर जा विराजे। यह स्थान आज तक 'कुरूकल मंडप' अर्थात् 'गुरु की नगरी' कहलाता है। गुरु जी कुछ समय तक यहीं रहे।

लंका के राजा धर्माप्रकर्माबाहु से भेंट

'कुरूकल मंडप' से चलकर गुरु जी कलमुनाई, टियोकोइल, पातुविल और पानम से होते हुए लंका के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान कतरगामा पहुंचे। इससे आगे गुरु जी बडुला और सीतावाका से होते हुए कोटी राज्य में पहुंचे। कोटी का राजा धर्माप्रकर्माबाहु गुरु जी के दर्शन करने आया और गुरु जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुआ। बौद्ध धर्म को मानने वाला अनीश्वरवादी होने के बावजूद धर्माप्रकर्माबाहु 'अकाल पुरख' की सत्ता का कायल हो गया। जब लंका के बौद्धों और ब्राह्मणों को इसका पता चला तो वे गुरु जी से शास्त्रार्थ करने आये। गुरु नानक साहिब जी ने 'नाम' एवं 'शबद' की महिमा की पूर्ण स्थापना की। गुरु जी के तर्कों के सम्मुख सभी नत्मस्तक हो गये।

भाई मरदाना जी की भूख-प्यास दूर करना

इसके बाद गुरु जी उत्तर की ओर अनुराधापुर आ गये जो लंका की प्राचीन राजधानी रहा है। गुरु जी अनुराधापुर से बंदरगाह मैनर की ओर चले। यह रास्ता बड़ा दुर्गम और खुश्क था। पानी की बहुत कमी थी। राह में भाई मरदाना जी को प्यास लगी। दूर-दूर तक पानी न मिला। यहां तक लिखा मिलता है कि भाई मरदाना जी का बुरा हाल हो गया। गुरु जी ने देखा कि कुछ व्याकुल सियार एक ओर जा रहे हैं। उनके पीछे-पीछे चलते गुरु जी एक तालाब पर पहुंचे और भाई मरदाना जी ने जल पिया। फिर भाई मरदाना जी को भूख भी लग आई। गुरु जी ने तालाब तैर कर पार किया और गांव से भाई मरदाना जी के लिए भोजन ले आये।

लंका से वापसी : श्री गुरु नानक देव जी माघ संवत् १५६९ वि. मुताबिक फरवरी सन् १५१२ ई को लंका पहुंचे थे। बैसाख संवत् १५७० वि. मुताबिक अप्रैल सन् १५१३ ई को गुरु जी ने लंका से वापसी की यात्रा आरंभ की। इस प्रकार गुरु जी लगभग १४ महीने लंका में रहे।

रामेश्वरम् पहुंचना : लंका के मैनर बंदरगाह से गुरु जी नौका से भारत के धनुषकोडी बंदरगाह पहुंचे। इसके बाद गुरु जी रामेश्वरम् गये। वहां योगियों ने गुरु जी को रोकते हुए कहा कि आप तो निरंकार के उपासक हो फिर इस मंदिर में क्यों जाते हो? तब गुरु जी ने फरमाया *"दूजा कउणु कहा नही कोई ॥ सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥"* गुरु जी के विचार सुनकर योगी निरुत्तर हो गये।

कोट्टायम के योगियों को उपदेश : रामेश्वरम् से चलकर गुरु जी रामनादपुरम, तिरवनमलाए, त्रिवेंद्रम, अनंतपुरम से होते हुए कोट्टायम जा विराजे। यहां योगियों के साथ विचार-चर्चा चली तो गुरु जी ने 'वंड छको' सिद्धांत की व्याख्या की। योगियों ने गुरु जी को एक तिल देते हुए पूछा कि इसे किस तरह बांट कर खाओगे। गुरु

जी ने तिल को ओखली में कूट कर सबको बांट दिया। आजकल यह स्थान 'तिलगंजी साहिब' कहलाता है।

कौडा राक्षस से सामना : कोट्टायम से गुरु जी उत्तर की ओर बढ़ते हुए अन्नामलाय पर्वत पर आ गये। इस पर्वत पर जंगली लोग रहते थे। ये बाहर से आये व्यक्ति को मार देते थे। इन जंगलियों को 'कौडा' कहा जाता था। एक 'कौडा' ने अचानक भाई मरदाना जी को पकड़ लिया। गुरु जी झट वहां पहुंच गये। गुरु जी के तेज के सामने कौडा नत्मस्तक हो गया और भाई मरदाना जी को मुक्त करके चला गया।

नीलगिरी पर्वत का भ्रमण : इसके बाद गुरु जी नीलगिरी पर्वत पर पहुंचे। यहां के निवासियों को निरंकार का नाम जपना सिखा तंजौर और पद्मनाभ शहर से होते हुए गोदावरी के तट पर आये।

नासिक एवं पंचवटी में संतों से चर्चा

गोदावरी पार करके गुरु जी नासिक पहुंचे। महादेव के मंदिर त्रयंबकेश्वर जा विराजे और शिव-भक्तों से ज्ञान-चर्चा की। फिर पंचवटी पहुंचे और संतों के साथ रूहानी विचार बांटे।

गिरनार पर्वत एवं सोमनाथ में गुरु जी

पंचवटी से उत्तर की ओर चलते हुए गुरु जी ने ताप्ती नदी पार कर गुजरात में प्रवेश किया। फिर भरूच नगर से होते हुए गिरनार पर्वत पर जा विराजे। यह स्थान उस समय गोरखपंथी योगियों का गढ़ था। योगियों को निरंकार का उपदेश देते हुए गुरु जी सोमनाथ के मंदिर में पहुंचे। पंडितों के खोखले कर्मकांड को देखकर उन्हें मानसिक भक्ति की ओर प्रेरित किया।

द्वारिका एवं कच्छ की यात्रा : इसके बाद गुरु जी कृष्ण की नगरी द्वारिका पहुंचे। यहां जनता और 'संतों' को 'अकाल पुरख' की उपासना में लगा कच्छ के रण में से होते हुए, मुश्किलों से भरी यात्रा करते हुए मांडवी पहुंचे। यहां का शिवगिरी गोसाईं बाला सुंदरी भैरवी चक्र की उपासना करता था। गुरु जी ने उसे निरंकार की भक्ति में लगाया। फिर आसापुरी पहुंचे और कापड़िया मत के वाममार्गी 'संतों' को 'अकाल पुरख' का नाम-सिमरन सिखाया। इसके बाद उडियार तीर्थ के नारायण सरोवर पर जा विराजे और वहां के पंडितों को सच्चे धर्म का उपदेश दिया।

सिंध से होते हुए मुलतान आना : इसके बाद गुरु जी सिंध प्रदेश में से होते हुए उत्तर की ओर बढ़े और अमरकोट, अहमदपुर, बहावलपुर नगरों का भ्रमण करते हुए सतलुज पार करके मुलतान आ विराजे। मुलतान के पीरों ने जब गुरु जी के आगमन के बारे में सुना तो एक प्याला दूध का भरकर गुरु जी के पास भेजा। गुरु जी ने प्याले में बताशा डालकर ऊपर फूल रखकर उसे वापस भेज दिया।

भाई मरदाना जी की समझ में बात न आई तो गुरु जी ने समझाया कि पीरों ने जताया था कि हम दूध के प्याले की तरह पहले ही भरपूर हैं। हमने बताशा और फूल डालकर उन्हें उत्तर दिया कि हम दूध में मिठास बनकर फूल की तरह ऊपर-ऊपर रहेंगे। मुलतान के सभी पीर फिर गुरु जी का स्वागत करने आये।

मुलतान से सुलतानपुर लोधी की वापसी

मुलतान से चलकर तलवंडी होते हुए, राय बुलार को मुक्ति देते हुए गुरु जी भादों संवत् १५७२ वि. मुताबिक सितंबर सन् १५१५ ई. को लगभग साढ़े पांच वर्ष की यात्रा पूरी करके पुन: सुलतानपुर लोधी पहुंचे, मार्ग में अनगिनत प्राणियों का उद्धार करते हुए।



गुरु नानक साहिब की तीसरी उदासी

*-स. अपिंदर सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी का वेईं नदी का रहस्यमयी अनुभव नये युग का आगाज था। तीन दिनों की आध्यात्मिक यात्रा में गुरु जी ने परम-सत्य को प्राप्त किया। अनुभवता के इन पलों में संसार को सच का दामन पकड़ाने और जिन्होंने सत्य को प्राप्त किया था, उनके अनुभव को एकत्र करने का मिशन, अकाल पुरख की तरफ से गुरु जी को सौंपा गया। परम-सत्य के हुक्म को मानते हुए गुरु जी भाई मरदाना जी को साथ लेकर धरत लोकाई को शोधने (सत्य का दामन पकड़ाने) के लिए चल पड़े। इस मिशन अधीन गुरु जी ने देशों, विदेशों के धार्मिक स्थानों पर जाकर, वहां ठहर कर, लोकाई अथवा जनसाधारण को परम-सत्य की अनुभूति कराई और अकाल पुरख के अनुभव को महसूस करने वाली आत्माओं (गुरमुखों) की खोज भी की। उन गुरमुखों के अनुभव को सत्य की कसौटी पर जांचकर अपने पास (लिखित रूप में) संभाल लिया। गुरु जी की तीसरी उदासी इस मिशन के अंतिम पड़ाव के साथ संबंधित है।

श्री गुरु नानक देव जी तलवंडी और सुलतानपुर लोधी में कुछ समय रुकने के बाद, भाई मरदाना जी को साथ लेकर मक्का, मदीना की तरफ चल पड़े। जिस प्रकार गुरु जी ने पहली दो उदासियों के मध्य हिंदुओं, योगियों और जैनियों के मुख्य तीर्थ-स्थानों को अपने धर्म-प्रचार का केंद्र बनाया बिलकुल उसी प्रकार इस उदासी के मध्य भी गुरु जी ने इस्लाम के मुख्य केंद्रों-पाकपटन, उच्च, मुलतान, मक्का, बगदाद, मशहद, ईरान, पेशावर आदि पर जाने का निर्णय किया। सदैव की भांति उनका पहनावा भी इन देशों की संस्कृति के अनुकूल था। उन्होंने अपने साथ वह लिखित मसौदा भी ले लिया जिसमें उन्होंने अपना और गुरमुखों का अनुभव एकत्र किया था। गुरु जी द्वारा पश्चिमी एशिया की तरफ की गई यह उदासी, आप जी के इस्लाम के प्रति दृष्टिकोण, सूफियों के साथ गुरु जी के संबंधों, गुरु साहिब के मिशन और कुछ अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में पर्याप्त जानकारी देती है।

इस उदासी के बारे में चर्चा करने से पहले मध्यकालीन युग की धार्मिक विचारधारा और विशेषतः हिंदुओं की मानसिकता को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है। अलबरूनी अपनी पुस्तक 'अल-हिंद' में लिखता है कि हिंदू अपनी सभ्यता, देश और विज्ञान को अत्यधिक ऊंचा समझते थे। सिंध दरिया को पार करके किसी ऐसे देश में जाना, जहां गैर-जाति के लोग राज्य करते हों, उनके लिए धार्मिक रूप से मना था। यदि उन लोगों ने स्वयं कभी विदेश-यात्रा की होती तो वे इस संकीर्ण सोच से मुक्त होते। गुरु जी ने इन देशों की यात्रा करके जहां एक ओर हिंदुओं की बनाई हुई तथाकथित धार्मिक मर्यादा को तोड़ा, वहां इसके साथ आप जी ने पश्चिमी देशों के लोगों अथवा उनके धार्मिक अगुओं के साथ, धार्मिक संवाद करने की पहल-कदमी भी की।

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

इस उदासी के सबसे पहले वाले पड़ाव सूफियों के साथ संबंधित थे। गुरु जी पाकपटन, मुलतान तथा उच्च में प्रसिद्ध सूफियों शेख इब्राहिम, मखदूम बहावदी और अब्दुल साहिब बुखारी को मिले तथा उनके पास ठहरे। आप जी ने उनके साथ विचार-गोष्ठियां कीं और इस अवसर पर एक-दूसरे का सत्कार करने की अच्छी परिपाटी का भी शुभारंभ हुआ। शेख इब्राहिम ने गुरु नानक साहिब को कुरान की आयतों के साथ उकरा हुआ एक खिरका भी भेंट किया। यह महत्वपूर्ण तथ्य गुरु जी और सूफियों के मित्रता वाले संबंधों को प्रस्तुत करते हैं। शेख इब्राहिम से गुरु जी द्वारा बाबा फरीद शकरगंज जी की बाणी को सुनना एवं एकत्र करना, इस तथ्य का साक्षी है कि गुरु जी परम-सत्ता की ओर से मिले हुक्म अनुसार अपने मिशन को पूरा करते जा रहे थे।

समुद्री रास्ते से होते हुए गुरु जी इस्लाम के मुख्य केंद्र मक्का जा पहुंचे। मक्का में स्थित काअबा को मुसलमान अल्लाह का घर समझते हैं। उस तरफ मुंह करके नमाज पढ़ना उनका धार्मिक कर्त्तव्य था, परंतु गुरु जी के अनुसार बेअंतता के मालिक रब को एक विशोष दिशा एवं स्थान में बांधना, किसी विशेष स्थान को रब का घर समझना उसकी सर्वव्यापकता को संकीर्ण करने के समान था। एक रात गुरु जी काअबा की तरफ अपने मुबारक चरण पसार कर लेट गए। जीवन शाह नामक एक मुसलमान ने गुरु जी को पवित्र स्थान काअबे की तरफ पांव पसार कर सोये देखा तो वह बहुत गुस्से में गुरु जी के पास आया और उनको टांग से पकड़ कर खींचता हुआ बोला कि "खुदा के घर की तरफ पांव पसार कर लेटने का पाप कौन-सा पापी कमा रहा है?" गुरु जी ने अत्यंत नम्रता के साथ उसको कहा कि "हे भाई! तू मेरे पांव उस तरफ कर दे जिस तरफ खुदा का घर नहीं।" परमात्मा की बेअंतता तथा सर्वव्यापकता का अहसास कराने वाले इन शब्दों ने जीवन शाह के मन पर तीक्ष्ण चोट की तथा उसको काअबा घूमता हुआ दिखाई दिया। इसके बाद गुरु जी और हाजियों में धार्मिक संवाद शुरू हुआ।

गुरु जी के पास रखी किताब को देखकर, हाजी गुरु जी को *"हिंदू वडा कि मुसलमानोई?"* का प्रश्न पूछते हैं। वस्तुत: वे गुरु जी से अपने धर्म का बढ़प्पन सुनना चाहते हैं परंतु गुरु जी ने उनको धर्मों की तुलना करने की जगह शुभ कर्मों अथवा आचरण के धारणी होने का निर्मल उपदेश दिया। वहां से चलते समय हाजियों ने गुरु जी से खड़ांव की मांग की। गुरु जी उनके प्यार एवं सत्कार की भावना को समझते हुए अपनी खडांव मक्का में छोड़ आये। उच्च का मखदूम गुरु जी की आध्यात्मिक अवस्था से बहुत प्रभावित था। वह गुरु जी की खड़ांव पवित्र निशानी मानता हुआ अपने साथ ले आया। आजकल ये खड़ांव उच्च के तोशाखाना में रखी हुई हैं।

गुरु जी कुछ समय मक्का में ठहरने के बाद मदीना में पहुंचे और हजरत मोहम्मद साहिब की मजार से होकर बगदाद की तरफ चल पड़े। जब बगदाद में एक दिन अमृत वेला को *"पाताला पाताल लख आगासा आगास"* का शबद गायन किया तो इस शबद को सुनकर बगदाद के मुसलमानों के मन में हलचल पैदा हो गई क्योंकि इस शबद की विचारधारा इस्लाम के दर्शन के पूर्णत: विपरीत थी। इस्लाम धर्म के अनुसार पूरी कायनात सात पातालों और सात आसमानों में फैली हुई है और सातवें आसमान पर खुदा स्वयं रहता है। गुरु जी के ये बोल अल्लाह की बनाई हुई कुदरत के असीम पसारे का अहसास कराने वाले थे। इस्लाम की विचारधारा के प्रतिकूल इस शबद का भाव

पूछने के लिए बहुत-से मुसलमान गुरु जी के पास आ खड़े हुए। कइयों ने गुस्से की भावना में गुरु जी को मारने के लिए पत्थर भी उठा लिये परंतु जब पीर दसतगीर की संतान को आंख के फुरने में अल्लाह की बेअंतता का अहसास कराया तो सभी मुसलमानों ने गुरु जी के इस शबद में विद्यमान सच्चाई को स्वीकार किया और गुरु जी के चरणों में गिर पड़े।

गुरु जी बगदाद से होते हुए ईरान के शहर तबरेज और फिर मशहद जा पहुंचे। यहां शीआ मुसलमान खलीफा हारूं-अल-रशीद और उसके दामाद की कब्र की जियारत (यात्रा) करने आते थे। गुरु नानक साहिब और भाई मरदाना जी नगर के बाहर के क्षेत्र में आकर बैठ गए और शहीदों की मजार पर न गये। नगरवासियों के मन में बेचैनी हुई कि यह किस प्रकार का फकीर है जो कि शहीदों की मजार के महत्व को नहीं समझता! शहर के मुसलमान गुरु नानक साहिब से यह पता करने आये कि वे किस संप्रदाय के साथ संबंध रखते हैं। उन्होंने गुरु जी से पूछा कि "वे किस में (हजरत मुहम्मद या हजरत अली) विश्वास रखते हैं?" गुरु जी ने उनको 'पैगंबर' से 'पैगाम' की अधिक महानता के बारे में अवगत कराते हुए कहा कि "पैगंबर इस धरती पर लोक-कल्याण हेतु विशेष उद्‌देश्य लेकर आते हैं। पैगंबर के पैगाम को भूलकर, उसके बढ़प्पन के लिए विवाद करना, धर्म के मार्ग से भटकने का लक्षण है। वस्तुत: धर्मी वो होता है जो पैगंबर के बताये नियमों के अनुसार अपना जीवन-यापन करता है।" इन बोलों ने मुसलमानों के मनों के भीतर कंपन छेड़ दिया और उन्होंने गुरु जी को पवित्र रूह मानते हुए सजदा (नमन) किया।

गुरु जी मशहद से काबुल होते हुए योगियों के प्रसिद्ध स्थान पेशावर आ पहुंचे। यहां योगियों को गृहस्थ की महानता से अवगत कराते हुए शुभ आचरण के धारणी होने का उपदेश दिया। वापसी के समय गुरु जी ने बाबर की सेना के हाथ से सैदपुर का विनाश होता, अपनी आंखों से देखा। गुरु साहिब ने बाबर और उसकी सेना के अत्याचारी व्यवहार पर फटकार डाली। यह इस उदासी का अंतिम पड़ाव था।

इस उदासी के मध्य गुरु जी मुस्लिम देशों में रहे, मुख्य इस्लामी केंद्रों पर ठहरे। आप जी ने इस उदासी में सूफियों, पीरों, फकीरों, हाजियों के साथ विचार-गोष्ठियां कीं। इस्लाम की रीतियों, इसके धार्मिक अनुष्ठानों और मुसलमानों के जीवन को अपनी आंखों से देखा। यह सब कुछ देखने के बाद गुरु जी इस निर्णय पर पहुंचे कि आम मुसलमान अपने वास्तविक धर्म से भटक चुके हैं बल्कि वे इस्लाम के सिद्धांतों के प्रतिकूल अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। केवल हज करना, नमाज पढ़ना और रोजे रखना ही उनकी दृष्टि में धर्म की कमाई थी। गुरु जी कभी भी इस्लाम के विरोधी नहीं थे बल्कि अधिकतर मुसलमानों द्वारा खोखले अनुष्ठानों अथवा कर्मकांडों का ही आप जी ने निर्भीकता सहित निषेध किया। इसमें कोई आशंका नहीं कि गुरु जी का परमात्मा के प्रति अनुभव, इस्लाम के दर्शन के साथ मेल नहीं खाता था। गुरु जी ने उनको इस तथ्य का अहसास भी अपनी उदासी के दौरान कराया परंतु आप जी ने किसी भी मुसलमान को उसका धर्म छोड़ने के लिए विवश नहीं किया। गुरु जी का यह पक्का मत था कि आवश्यकता तो मन-परिवर्तन की ही होती है। गुरु जी ने प्रत्येक मुसलमान को नैतिक मूल्यों को अपनाने तथा सच के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया।

गुरु जी के मिशन को कई विद्वान पूर्णत: समझ नहीं सके जिस कारण उन्होंने गुरु जी को

मात्र एक समाज-सुधारक के रूप में ही देखा है और उनके उद्देश्य को हिंदू-मुस्लिम एकता को पुनः स्थापित करने तक ही सीमित समझा है। गुरु जी द्वारा प्रयोग की इस्लामिक शब्दावली, सूफियों के साथ उनके संबंध, मुस्लिम देशों की उनके द्वारा की गई यात्रा, एकेश्वरवाद और मानवी बंधुत्व के सिद्धांतों को देखते हुए श्री तारा चंद जैसे विद्वानों ने गुरु जी पर इस्लामिक प्रभाव होना स्वीकार किया है। बगदाद की घटना, सूफियों का गुरु जी के प्रति सत्कार, उनके द्वारा इस्लामिक शरीअत और मान्यताओं को जगह-जगह दी तिलांजलि, किसी कौम की भाषा और शब्दावली का प्रयोग करके, अपने फलसफे को तर्क के साथ समझाने की मुहारत इस बात की साक्षी है कि गुरु जी पर किसी भी प्रकार का इस्लामिक प्रभाव नहीं था।

इस प्रकार गुरु जी ने उदासियों के मध्य सत्य का व्यापार करके, परम-सत्ता द्वारा सौंपे मिशन को पूरा किया। इस व्यापार के दम पर ही आज विभिन्न धर्मों वाले उनमें अपने रहबर के दर्शन करते हैं। वे गुरु जी के सत्य को देखते हैं, जो कभी उन्होंने अपने पैगंबर में देखा था। उनके लिए प्रयोग किये सत्कार-सूचक नाम नानकलामा, बाबा नानक, नानक नाभ, हजरत नानकशाह और नानक औलिया आदि गुरु जी के सर्वसांझीवाल होने का प्रतीक हैं। यह तीसरी उदासी के दौरान गुरु जी की शख्सियत का ही नमूना था, जिस कारण आज भी हिंदू और मुसलमान गुरु जी को *"बाबा नानक शाह फकीर, हिंदू का गुरु मुसलमान का पीर"* कहकर स्मर्ण करते हैं।



फिरि बाबा आइआ करतारपुरि . . .

(पृष्ठ १७ का शेष)

बाबा फिरि मक्के गइआ नील बसत्र धारे बनवारी। *(वार १:३२)*

अपने जीवन के अंतिम आठ-दस साल आपने करतारपुर में ही बिताए। इतिहासकार लिखते हैं कि यहीं पर गुरु जी ने 'जपु जी' का संपादन भाई लहिणा जी से करवाया। करतारपुर में गुरु जी जहां एक ओर नित्तनेम, कथा, भजन-बंदगी करते हुए हरेक को प्रभु के हुक्म के अनुसार जीवन व्यतीत करने और सतिनाम का अभ्यास करने की शिक्षा देते थे, वहां दूसरी ओर खुद अपने हाथों से खेतों में खेती करके, मेहनत करके लोगों को अपने हाथों से सच्ची किरत करने का उपदेश दिया। गुरु जी ने यहां ऐसी धर्मसाल बनाई जहां *"गिआनु गोसटि चरचा सदा अनहदि सबदि उठे धुनकारा"* होती थी।

जैसे कि हम पहले भी जिक्र कर चुके हैं कि यहीं पर भाई लहिणा जी श्री गुरु नानक देव जी का दर्शन करने आए थे। ऐसा दीदार हुआ कि ज्योति से ज्योति का मेल हुआ। दोनों मिल कर एक ज्योति हुए। भाई लहिणा जी श्री गुरु नानक देव जी के अंग बनकर श्री गुरु अंगद देव जी हो गए।

७ सितंबर सन् १५३९ को सतिगुरु नानक देव जी गुरगद्दी श्री गुरु अंगद देव जी को सौंप कर करतारपुर के स्थान पर अकाल पुरख में समा गए।



श्री गुरु नानक देव जी की चौथी उदासी

*-प्रो. ब्रह्मजगदीश सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी ने सोलहवीं सदी के आरंभ में एशिया की चार महान यात्राएं कीं, जिनमें आपने पूरे दक्षिणी एशिया के लोगों को अध्यात्म का एक नया और क्रांतिकारी बोध करवाया। अपनी महान यात्राएं आरंभ करने से पहले आपने सुलतानपुर लोधी में वेईं नदी के तट पर बैठ कर यह उद्घोषणा की थी : *"ना को हिंदू न मुसलमान"* अर्थात् भारत में रहने वाले लोग न तो सच्चे हिंदू ही हैं और न सच्चे मुसलमान ही कहीं दिखाई देते हैं। खुदगर्जी और माया के प्रलोभन ने लोगों को इस कद्र जकड़ रखा है कि कहीं भी कोई सच्चा और धार्मिक व्यक्ति नजर नहीं आता। आपने अपनी इन यात्राओं में भारतवासियों को सच्चे और प्रमाणिक इंसान बनने की शिक्षा दी। भाई गुरदास जी 'पहली वार' में गुरु साहिब के इस उद्देश्य सम्बंधी अपने विचार व्यक्त करते हुए फरमाते हैं :

पुछनि गल ईमान दी काजी मुलां इकठे होई।
वडा सांग वरताइआ लखि न सकै कुदरति कोई।
पुछनि फोलि किताब नो हिंदू वडा कि मुसलमानोई?
बाबा आखे हाजीआ सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।
हिंदू मुसलमान दुइ दरगह अंदरि लहनि न ढोई। *(वार १:३३)*

प्राचीन तथा श्रद्धालु सिक्ख इतिहासकारों ने श्री गुरु नानक देव जी की चार उदासियों के विवरण दिये हैं लेकिन अधिकतर आधुनिक इतिहासकार आपकी तीन उदासियों को स्वीकार करते हैं। 'तवारीख गुरु खालसा', 'गुरु नानक प्रकाश' और कुछ प्राचीन जन्म-साखियों में चार उदासियों का उल्लेख किया गया है। इन इतिहासकारों के अनुसार गुरु जी की चौथी उदासी जनवरी १५१८ में आरंभ हुई और १५२१ ई तक चली। इस उदासी में आप मुसलमानों के धार्मिक नगरों में गये और वहां पर आने वाले हज के यात्रियों को जीवन के सत्य-मार्ग का बोध करवाया।

श्री गुरु नानक देव जी और भाई मरदाना १४ चेत्र, १५७६ को करतारपुर से चल कर सर्वप्रथम तलवंडी पहुंचे और माता-पिता से आशीर्वाद लेकर अपनी चौथी उदासी पर रवाना हो गये। गुरु साहिब मद्र देश तथा शेखूपुर आदि स्थानों पर प्रभु-नाम का जाप कराते हुए १५१८ की वैशाखी पर कटासराज जा पहुंचे। यहां पर गुरु साहिब ने कहा कि कर्मकांडों द्वारा परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती, उसे केवल प्रेम, सिमरन तथा मानवता की सेवा से पाया जा सकता है। वहां पर बहुत सारे नाथ-योगी भी पहुंचे हुए थे। वे तरह-तरह की करामातों द्वारा भोली-भाली जनता को सम्मोहित कर रहे थे। गुरु जी ने इन योगियों को गृहस्थ धर्म के महत्व को दर्शाया। इसके पश्चात् गुरु जी और भाई मरदाना दादन खां जा पहुंचे। इसी तरह चलते-चलते एक विख्यात योगी बाल गुंदाई के टिल्ले पर जा पहुंचे। वहां से चल कर अटक दरिया को पार करके डेरा इसमाईल खां जा पहुंचे। एक बालक ने गुरु जी

**बी-१२/१३९, ब्रह्म निवास, हरिंदरा नगर, फरीदकोट-१५१२०३*

को खजूरें अर्पित कीं। थोड़ा समय पश्चात वह बालक नवाब की मृत्यु हो जाने के कारण वहां का नवाब बन गया।

वहां से आगे चल कर गुरु जी डेरा गाजी खान, मिठनपुर और हैदराबाद आदि नगरों में से गुजरते हुए कराची जा पहुंचे। वहां से पैदल ही अदन की बंदरगाह पर पहुंच गये। यहां से एक समुद्री जहाज में सवार होकर गुरु साहिब अरब देश में जद्देह नगर में जा उतरे। इस स्थान पर जिस घर में आप ठहरे थे, उसे आज भी 'गुरु नानक वली का दायरा' कहा जाता है। यहीं पर ही आपकी मुलाकात शाह शरफ नाम के एक हाजी फकीर के साथ हुई थी। आपने इस फकीर को फकीरी के अर्थ समझाये कि फकीरी धारण करने का अर्थ है दुनिया को नाशमान समझ कर इससे निर्लेप रहना और मोह-माया से ऊपर उठ जाना है। हाजियों ने गुरु साहिब से विनती की कि वे मक्का की यात्रा का विचार त्याग दें क्योंकि वहां किसी गैर मुसलमान को जाने की अनुमति नहीं है, लेकिन गुरु जी अपने संकल्प पर अडोल बने रहे।

रात्रि के समय गुरु साहिब मक्का पहुंच गये और जाकर काअबे की ओर पांव पसार कर सो गये। जीवन नाम के एक मुल्ला ने आपको जगा कर कहा कि आप कैसे मुसलमान हो जो यह भी नहीं जानते कि काअबे की ओर पांव करना कुफर की बात है, क्योंकि उस तरफ अल्लाह का निवास है? गुरु जी उसे कहने लगे, "भाई, मुझे पता नहीं था कि उस तरफ खुदा का घर है। आप मेरे पांव उस तरफ कर दो जिधर खुदा का घर नहीं।" अब उस मुल्ला के होश ठिकाने आ गये। उसे महसूस हो गया कि खुदा तो हर तरफ है। कौन-सी ऐसी दिशा या स्थान है जिधर खुदा नहीं रहता? उसने गुरु जी से क्षमा मांगी और कहा कि मुझसे बड़ी भूल हो गई है। काअबे का प्रमुख काजी रुकनदीन भी वहां पहुंच गया। गुरु जी ने उसे भी खुदा के सर्वव्यापक होने का सच्चा ज्ञान बख्शा। भाई गुरदास जी अपनी 'पहली वार' में इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखते हैं :

बाबा फिरि मक्के गइआ नील बसत्र धारे बनवारी।
आसा हथि किताब कछि कूजा बांग मुसल्ला धारी।
बैठा जाइ मसीत विचि जिथै हाजी हजि गुजारी।
जा बाबा सुता राति नो वलि महराबे पाइ पसारी।
जीवणि मारी लति दी केहड़ा सुता कुफर कुफारी।
लता वलि खुदाइ दे किउ करि पइआ होइ बजिगारी।
टंगों पकड़ि घसीटिआ फिरिआ मक्का कला दिखारी।
होइ हैरानु करेनि जुहारी ॥ *(वार १:३२)*

कठिन शबद : बनवारी- बनों के स्वामी, परमात्मा; आसा- सोटी, डंडा; कूजा- लोटा, मुसल्ला- चटाई; महराबे- काअबे की ओर, कुफर- कपटी, काफिर, गैर-मोमन; बजिगारी- पापी, जुहारी- नमस्कार।

२४ दिसंबर, १५१८ को गुरु जी अन्य हाजियों के साथ मदीना में जा पहुंचे। मदीना पहुंच कर हजरत मुहम्मद साहिब की कब्र के नजदीक फातिमा वाले दरवाजे के समक्ष बैठ कर कीर्तन आरंभ कर दिया, क्योंकि इस्लाम में गीत-संगीत वर्जित था इसलिए बहुत सारे मुसलमान हाथों में पत्थर लेकर आपको मारने के लिये इकट्ठे हो गये। गुरु साहिब इस शबद का गयान कर रहे थे :

आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी ॥

देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥
कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥
घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ (राग बसंत हिंडोल, पन्ना ११९१)

कठिन पद : देवल- मंदिर, धार्मिक स्थान; करु- टैक्स, कीरति- प्रथा, मुसला- चटाई, नील रूप- नीले वस्त्र, मीआ- मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिये उन जैसी भाषा का प्रयोग करना।

गुरु जी का उपदेश सुन कर सारे मुसलमान शांत हो गये। उनको मानवीय जीवन के बारे में नया बोध हो गया। उनकी आंखें खुल गईं। गुरु जी मदीना में कई दिनों तक प्रचार करते रहे। आपकी महिमा के बारे में वहां पर अनेक अनश्रुतियां प्रचलित हैं। मदीना में गुरु साहिब की एक पवित्र यादगार भी बनी हुई है। कहा जाता है कि गुरु जी ने वहां पर मौखिक परंपरा के अनुसार 'नसीहतनामा' का भी उच्चारण किया था।

मदीना से चल कर कई नगरों में से होते हुए गुरु जी मुसलमानों के एक और बड़े शहर बगदाद में पहुंच गये। बगदाद के बाहर बैठ कर आपने कीर्तन आरंभ कर दिया। वहां के पीर मुरशिद अब्दुल रहमान ने अपने एक सेवक अब्दुल वजीद को भेजा कि वह गुरु जी को बता दे कि इस्लाम में गीत-संगीत वर्जित है। मगर वजीद तो गुरु जी की बाणी को सुनकर वजद (मस्ती) में आ गया, वह सब कुछ भूल-सा गया। बहुत-से और लोग भी पहुंच गये। खुद पीर अब्दुल रहमान भी आ गया। गुरु जी कीर्तन करते रहे। सब तरफ आनंद और विस्माद छाया हुआ था। भाई गुरदास जी इस स्थिति का निरूपण करते हुए लिखते हैं :

फिरि बाबा गइआ बगदादि नो बाहरि जाइ कीआ असथाना।
इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
दिती बांगि निवाजि करि सुंनि समानि होआ जहाना।
सुंन मुंनि नगरी भई देखि पीर भइआ हैराना।
(वार १:३५)

कठिन पद : असथाना- ठिकाना, सुंनि समानि- खामोशी, शांति; भइआ- हो गया।

गुरु जी ने लोगों को समझाया कि इधर-उधर की बातें छोड़कर इंसान को प्रभु की बंदगी करनी चाहिये। बंदगी के बिना और कोई क्रिया-कर्म मनुष्य के साथ नहीं जाता। आपने इस पावन शबद का गायन किया :

सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥
(सिरीरागु, पन्ना २०)

बगदाद में भी गुरु साहिब की एक यादगार बनी हुई है। बगदाद से चलकर आप ईरान और तुर्किस्तान में से होते हुए अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में पहुंचे। बगदाद से काबुल तक की यह काफी लम्बी दूरी तय करते हुए आपने लोगों को सच्चा ज्ञान प्रकाश बख्शा। यहां से पेशावर के रास्ते आप हसन अब्दाल (पंजा साहिब) पहुंचे। इस स्थान पर पानी की बहुत तंगी थी। पानी के एकमात्र स्रोत पर वली कंधारी नामक एक अभिमानी फकीर ने कब्जा जमाया हुआ था। उसने गुरु साहिब की तरफ एक बड़ा-सा पत्थर लुढ़का कर आपको आतंकित करना चाहा परन्तु आपने अपने एक हाथ से उस पत्थर को रोक कर उस फकीर के अभिमान को चकनाचूर कर दिया। वली कंधारी को सत्य की समझ आ गई। उसने अपना अभिमान तज दिया। अब सब लोगों के लिए

(शेष पृष्ठ ४० पर)

श्री गुरु नानक देव जी की जीवन-यात्राएं

*-डॉ. दलविंदर सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी महान दार्शनिक, क्रांतिकारी, समाज-सुधारक, कवि, शिक्षक और अनथक यात्री थे। उनका संसार में आगमन भक्ति-काल और सूफीवाद समन्वय में अनूठा योगदान है। उन्होंने एक परमात्मा, एक भाईचारा और सर्व-समानता का संदेश विश्व में फैलाने हेतु हर द्वीप की यात्रा की और भ्रांति, विषाद, घृणा, अंतर्द्वंद, रीति-रत समाज, जाति-बांट आदि को समाप्त करने का आह्वान चलाया। प्यार, भ्रातृवाद, सहिष्णुता, सेवा, समर्पण तथा मुक्ति का संदेश देकर उन्होंने एक नये विश्व-सृजन का शुभारंभ किया।

उनकी यात्राएं कशमीर और रूस, दक्षिण में श्रीलंका, पूर्व में चीन, बर्मा आदि और पश्चिम में यूरोप हैं, जिनकी काल-बांट इस तरह है : पूर्व (प्रथम) १४९८-१५०९, दक्षिण (१५१०-१५१४), उत्तर-पूर्व (१५१५-१५१७) और चौथी पश्चिम (१५१७-१५२१)

श्री गुरु नानक देव जी की इन सब उदासियों (यात्राओं) की खोज लगातार जारी है और कई नए तथ्य लगातार सामने आ रहे हैं। इनके कुछेक कारण हैं:

१) गुरु नानक-काल की बहुत कम लिखित रूपी कृतियां।

२) जन्म-साखी में अपूर्ण तथा भ्रांति लिपित वर्णन।

३) दुर्गम स्थानों की यात्रा-खोज कष्ट भरी होना।

४) श्री गुरु नानक देव जी को अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग नामों से जानना। कुछेक नाम नीचे दिए गए हैं:

१. गुरु रिंपोश : दक्षिणी तिब्बत, भूटान, नेपाल, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
२. भद्र गुरु : पश्चिमी तिब्बत, मानसरोवर, कैलाश पर्वत के इलाके में
३. नन्हा बुद्ध : श्रीलंका
४. नानक ऋषि : नेपाल (धोमरी)
५. नानक पीर : जद्धा (अरब)
६. वली हिंद : मक्का (अरब), अलैपो (सिरिया) और ऊरा-त्युबे (रूस)
७. नानक वली : मिस्र (काहिरा)
८. गुरु नानक वली हिंद : तुर्किस्तान (रूस)
९. बाबा नानक : अलकूत और बगदाद (ईराक)
१०. नानक कदमदार : बुखारा (रूस)
११. पीर बालगदान : मजहर शरीफ
१२. बाबा फूसा : चीन

दूसरे नामों से सम्बंधित कुछ रचनाओं में उनको अनदेखा किया जाता रहा है, परंतु गाथाएं, प्रचलित कहानियां, दंत-कथाएं सम्बंधित किस्से, नाम से जुड़े स्थान या घटनाएं इस असलियत को जांच में मदद कर रही हैं।

श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित कुछेक नामों का उल्लेख यहां किया जाता है:

ननकाणा साहिब (पाकिस्तान), डेरा बाबा नानक, नानकसर (हड़प्पा), नानक झीरा (कर्नाटक), नानकमता (ऊधम सिंघ नगर,

**डायरेक्टर प्रिंसीपल, भाई महां सिंघ कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, श्री मुक्तसर साहिब (पंजाब)*

उत्तराखंड), कुरुकल मंडप (गुरु का गांव, श्री नानक थड़ा (नैनीताल, उत्तराखंड), नानक झील (उत्तराखंड), नानक लोधियाना (ढोलका, गुजरात), बाबा नानकाणा (यूगंडा, अफ्रीका, कंपाला के पास), नानक फूंगी (हांगकांग), नानकिंग, नानचियांग, नानचिंग (चीन), नानकेन (भारत-तिब्बत सरहद), नानकीला (नेपाल)।

श्री गुरु नानक देव जी के चिन्ह: हाथ, पांव तथा शरीर। पंजा साहिब, नानक झीरा बिदर, शाप जी (मानस), चुंगथांग (सिक्किम), गुरु डांगमार (उत्तर सिक्किम), मैचूखा (अरुणाचल), लेह (जम्मू-कशमीर), ढाका और सुजातपुर (बंगलादेश), कोटद्वार और श्रीनगर (उत्तराखंड), वाट सरकाट (बंका, थाईलैंड), ढिबर (श्रीलंका), नैनीताल (उत्तराखंड)। इसी तरह श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित पेड़, बाग, पर्व, दर्रे, तालाब, झीलें, थड़े आदि भी मिलते हैं।

रीठा साहिब, नानक बगीची (उत्तराखंड), थड़ा साहिब (दिल्ली), नानक थड़ा (नैनीताल), बाबा नानक की ढेरी (हलदौर सिजौर, उत्तराखंड), गुरु का बही (बनारस), नानक सागर (नानकमता, उत्तराखंड), नानक कुंड (बिहार), हजी (गुहाटी, आसाम), गुरु का बाग (पश्चिम बंगाल), नानकघर (मत्सय ध्वज हजो गुहाटी, आसाम), वाहिगुरु मठ (जगन्नाथपुरी, उड़ीसा), बाओ मठ (पुरी), गुरु घाटी (अजमेर), माल टेकरी, राम टेकरी (पूना) आदि इसके उदाहरण हैं।

श्री गुरु नानक देव जी के साथी भाई बाला जी और भाई मरदाना जी से सम्बंधित स्थान भी इसमें मददगार हो सकते हैं, जैसे : बालाकुंड, मरदाना कुंड (हजी-गुहाटी), मरदाना बाला कोट, मरदाना (कोलंबो) आदि। कुछेक स्थान गुरु जी के नजदीकी साथियों के नाम से हैं, जैसे मजनू टिल्ला, दिल्ली। कुछेक स्थानों पर श्री गुरु नानक देव जी की मूर्तियां भी स्थापित हुई मिलती हैं। यह अवश्य स्मरण रहे कि यह सिक्ख रहित मर्यादा का सरासर उल्लंघन है और इसका मुख्य कारण उन लोगों को सही गुरमति ज्ञान न होना है।

चुंगथांग, लाचेन, मुगुथांग लाचुंग (सिक्किम), त्वांग, मंचुखा, वालोंग (अरुणाचल प्रदेश), थ्यांगवो (नेपाल), लेह (लद्दाख), गोंफा राकश ताल (तिब्बत)। श्री गुरु नानक देव जी के नाम पर जुड़ी संगत के स्थान भी नानकशाही संगत (ढाका) नानकपंथी, मुरीद नानकी हैं। श्री गुरु नानक देव जी की यात्रा से सम्बंधित खोद भी पाई गई है: डिब्बर, बाटी कलोवा (श्रीलंका), बाकू (आजरबाय, रूस), प्याकोचिन (सिक्किम)। श्री गुरु नानक देव जी की हस्तलिखित पुस्तिका, शबद (अक्सराए, काबुल), थ्यागबोच (नेपाल), मंचुखा (अरुणाचल प्रदेश), लाचेन (सिक्किम), चुंगथांग (सिक्किम), कोटकपूरा (ढिलवां, पंजाब) में बताए गए हैं। चुंगथांग में गुरु नानक साहिब जी के नाम की पोथी गोंफा में थी जो कुछ देर पहले अग्नि-भेंट हो गयी।

इनके अलावा और भी इस तरह के तथ्य भविष्य की खोज में मददगार हो सकते हैं। खोजार्थियों को इन चिन्हों का समय पर विश्लेषण करके रिकार्ड बना लेना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि गुरु नानक साहिब सारे विश्व के गुरु हैं और उन्होंने जो भी किया पूरे विश्व के लिए किया। इसलिए उनके अनुयायी सिक्ख तो हैं ही इसके साथ-साथ अन्य मत वाले भी आपके प्रति श्रद्धा-सत्कार रखने वाले हैं, जिनकी पहचान करनी भी जरूरी है।



श्री गुरु नानक देव जी की बाणी
जपु जी साहिब का दार्शनिक मूल्यांकन

*-डॉ. भगवंत सिंघ**

'जपु जी' गुरु नानक साहिब जी की तत्व-प्रधान एवं बहुत ही महत्वपूर्ण बाणी है। यह उनकी सबसे अधिक प्रिय एवं प्रेरणाजनक बाणी है। इसके शाहकार बाणी होने के विषय में कोई एकाकी राय नहीं अपितु यह विचार लगभग सारे ही विदेशी एवं भारतीय विद्वानों की है। यह श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा की कुंजी है एवं इनकी कला-कौशलता का उत्कृष्ट नमूना है। इसके विषय की महानता एवं अमरता, विशालता और साझेदारी इसके रूप, विलक्षणता एवं कला-निपुणता, इसकी बोली और आभा की समर्थता, इसके बयान की सरलता एवं सार्थकता ने इसे नि:संदेह ही एक उत्कृष्ट बाणी बना दिया है। प्रसिद्ध चिंतक प्रो. पूरन सिंघ लिखते हैं:

"His own Song, Japji, makes him a creator whose genious puts seal on the ages."

डॉ. राधाकृष्णण जैसे विद्वान भी 'जपु जी' को गुरु नानक साहिब का "best known work" कहते हैं।

'जपु जी' गुरु नानक साहिब के धार्मिक, आध्यात्मिक, सदाचारक, सामाजिक, दार्शनिक तथा सभ्याचारक विचारों, भावों एवं अनुभवों का निचोड़ है, उनके द्वारा चलाए धर्म एवं मूल-सिद्धांतों का सार है, जो केवल तीन सौ तिरासी पंक्तियों/उक्तियों का दो हजार नब्बे शबदों में अंकित है।

प्रसिद्ध विद्वान पेन लिखता है "The Japji itself is a complete exposition of the Sikh faith."

प्रो. हरनाम सिंघ शान कहते हैं कि "यह कोई भूल अथवा अतिश्योक्ति नहीं होगी यदि हम यह कहें कि 'जपु' ही 'गुरु नानक' है और 'गुरु नानक' ही 'जपु' है।"

इन विद्वानों के और विचार ये हैं जिनसे जपु जी साहिब की सर्वोच्चता का अनुमान भली-भांति लगाया जा सकता है। 'जपु जी' को गुरु साहिबान के समय से ही समूचे सिक्ख दर्शन का खुलासा माना जाता रहा है। कुछ ऐसे विचारों एवं कारणों की वजह से ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रथम आदि स्वरूप के संपादक श्री गुरु अरजन देव जी ने इसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बिलकुल आरंभ में रखा है और इसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब का उत्थानक ही बना दिया है। इसी कारण इसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब की 'आदि बाणी' भी कह देते हैं। सम्पूर्ण सिक्ख फिलासफी इसमें समाई हुई है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मंगलाचरण के रूप में अंकित महावाक्य के पहले शबद '੧ੴ' को बीज-मंत्र एवं सारे महावाक्य का सार समझा जाता है। इस महावाक्य को मूल-मंत्र और 'जपु' का तत्व-सार समझा जाता है, इसी प्रकार 'जपु जी' को समूचे श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सारांश माना जाता है।

'जपु जी' की महानता इस बात से भी पता चलती है कि यह सिक्ख नित्य-नियम का सुखमूल है। पेन के अनुसार, "यह प्रत्येक . . . सिक्ख को मौखिक स्मरण है और वह प्रतिदिन

**संपादक 'जन साहित' (पंजाबी), भाषा भवन, भाषा विभाग, पटियाला-१४७००१, मो: ९८१४८-५१५००*

सवेरे इसका पाठ करता है। इसके नित्य पाठ की प्रथा गुरु साहिब के समय से ही आरंभ हो चुकी थी।" भाई गुरदास जी, जो उनके जीवनीकार हैं, बताते हैं कि जब श्री गुरु नानक देव जी ने उदासियां समाप्त कर लीं और करतारपुर में धर्म-कर्म की रीत-बांधनी आरंभ की तभी दैनिक जीवन की पहली मद 'पाठ' रखी।

इतिहास में इस बात के प्रमाण भी मिलते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी इसके पाठ की समाप्ति पर ही ज्योति-जोत समाये थे। अमृत तैयार करते समय सबसे पहला पाठ इसी बाणी का किया जाता है तथा सिक्ख हुक्मनामों में इसका पाठ करना जरूरी बताया गया है:

बिन जपु पढ़े प्रसाद ज खाद
ध्रिग है उसदा जीणा।

महाकवि भाई संतोख सिंघ चूड़ामणि बताते हैं कि "जपु जी का पाठ जन्म-जन्मांतरों का रोग दूर करने की सामर्थ्य रखता है।" प्रो पूरन सिंघ अपने निजी तजुर्बे के आधार पर कहते हैं:

"In actual experiments conducted by myself on myself, I find that without Japji one dies." -*The Spirit Born People*

'जपु जी' की महत्ता का इस बात से भी पता चलता है कि यही एक ऐसी बाणी है जो कितनी ही बोलियों में लिखी गई, अनुवाद की गई, छापी गई और गाई गई।

ग्रीनलीज के शब्दों में, "जैसे गीता और नई शाख हिंदू और ईसाई धर्म के बुनियादी उसूलों का खुलासा है, इसी प्रकार 'जपु जी' सिक्ख धर्म का खुलासा है।"

यह कहना भी अनुचित न होगा कि संसार के धार्मिक साहित्य में कोई भी रचना ऐसी नहीं है जिसमें प्रभु का स्वरूप एवं मनुष्य का मनोरथ इतनी शाइस्तगी एवं सहजता के साथ वर्णित किया गया हो।

Dr. Bitten Court इस बात की पुष्टि अपने अधोलिखित विचार के साथ करता है :

"Nanak placed first thing . . . The Bible really does not begin the Lekesbanik with one God . . ."

उपरोक्त विचारों से स्पष्ट होता है कि 'जपु जी' संसार साहित्य की एक अत्यंत श्रेष्ठ बाणी है।

'जपु जी साहिब' में आदर्श जीवन जीने का राह एवं मुक्ति प्राप्ति करने की विधि बताई गई है। जो मनुष्य नित्य-प्रति इस बाणी का सिमरन करता है, जाप करता है, वह केवल अपने दुख ही नहीं दूर करता बल्कि अपने साथ दूसरों को भी मुक्ति दिलाता है। इसके अंतिम सलोक में बताया गया है कि :

जिनी नाम धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

"Guru Nanak gave in the Japji the quiescence of Karam and if some Muslims were shy of this truth as preached by Guru Nanak, they should blame their own ingnorance of Islam . . ." *(Dr. Mohd. Iqbal)*

'जपु जी' का केंद्रीय विषय सत्य-स्वरूप परमात्मा और उसकी स्तुति है। यह उस पारब्रह्म परमेश्वर की महिमा और सिमरन है, उस सदा सलामत निरंकार को जपने का उपदेश है, जिसकी उत्तमता को प्रारंभिक श्लोक में इस प्रकार दर्शाया गया है:

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

नाम-मार्ग के राहगीर को सत्य तक

पहुंचने भाव सदाचारी और आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित किया गया है। गुरु जी ने मूल और व्यापक उपदेश दिया है :

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥
(पन्ना १)

सदाचार की पदवी उसके विपरीत चलने, उसकी हस्ती पर वाद-विवाद करने, उसकी जग-रचना के बारे में शास्त्रार्थ करने, योगी-भेष धारण करने आदि बाहरी आडंबरपूर्ण चिन्हों द्वारा प्राप्त नहीं की जा सकती। यह तो उसकी रजा में राजी रह कर, ज्ञान, धर्म, श्रम, कर्म की मंजिलों को तय करते हुए ही प्राप्त हो सकती है। धर्म से भाव अपने कर्त्तव्य की पहचान है जो सत्य के ज्ञान-मार्ग से ही पता चलती है। सत्य को पहचानने के लिए और फर्ज को निभाने के लिए श्रम जरूरी है, जो परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होता है। सदाचारी की पदवी अथवा सचखंड का निवास सबसे ऊपर की अवस्था है जिसे कर्म से प्राप्त किया जा सकता है:

चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥
(पन्ना ८)

श्री गुरु नानक देव जी की चौथी उदासी

(पृष्ठ ३५ का शेष)

पानी की व्यवस्था हुई।

हसन अब्दाल से आगे चल कर रावलपिंडी में से होते हुए गुरु जी सियालकोट पहुंच गये। यहां पर पूर्व की उदासी में गुरु जी को सत्कार देने वाला मूला खत्री रहता था। परंतु घर-परिवार का संकल्प भारी पड़ जाने पर वह इस बार गुरु जी को देखकर कहीं छिप गया। वहीं पर एक सांप ने उसे डस लिया और उसकी मृत्यु हो गई।

गुरु जी आगे सैदपुर (ऐमनाबाद) पहुंचे तो वहां पर बाबर की फौज ने लूट-पाट मचा रखी थी। गुरु जी भाई लालो के घर पहुंचे और लोगों से सहानुभूति व्यक्त की। बाबर बादशाह के आचार-विहार की आलोचना की क्योंकि वह लोगों पर अत्याचार कर रहा था। आपने एक शबद में फरमाया:

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥
करता तूं सभना का सोई ॥
जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥ (राग आसा, पन्ना ३६०)

इस तरह आम लोगों के प्रति अपने प्रेम और करुणा को प्रकट करते हुए गुरु जी ७ मार्गशीर्ष, १५७८ को वापस करतारपुर पहुंच गये। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अपनी इस चौथी उदासी में आपने अरब, ईरान, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों की यात्रा की और इस्लाम मत के लोगों को सत्य-मार्ग से अवगत कराया। इस उदासी के महत्व को साकार करते हुए भाई गुरदास जी अपनी पहली वार में लिखते हैं :

गड़ बगदादु निवाइ कै मका मदीना सभे निवाइआ ।
सिध चउरासीह मंडली खटि दरसनि पाखंडि जिणाइआ।
पाताला आकास लख जीती धरती जगत सबाइआ। . . .
हिंदू मुसलमाणि निवाइआ ॥ (वार १:३७)

जपु जी साहिब : केंद्रीय विचार

*-स. गुरदीश सिंघ भागोवालिया**

'जपु जी साहिब' आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी की विशेष बाणी है। इस बाणी को विद्वान क्षेत्रों में गुरु जी की शाहकार बाणी माना जाता है जबकि एक सच्चे सिक्ख के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सारी बाणी धुर की बाणी के रूप में समान भी है। जपु जी साहिब श्री गुरु ग्रंथ साहिब की और नित्तनेम की प्रभम बाणी है। यह गुरु नानक साहिब की परिपक्व चेतना तथा उनके रहस्यवादी अनुभव का कमाल है। प्रबंध काव्य के रूप में रची गई इस बाणी में गुरु जी ने संक्षिप्त तथा संयमपूर्ण सूत्रबद्ध शैली में प्रभु-नाम या जपु अथवा जाप अर्थात् सिमरन को केंद्रीय विचार के रूप में लिया है।

जपु जी साहिब में जाप या सिमरन के सभी संभव पक्षों पर इसके कर्त्ता गुरु नानक साहिब द्वारा पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। सिमरन क्या है? इसकी प्रचलित युक्तियां कौन-कौन हैं? उनमें क्या कमियां हैं? सिमरन के कौन-से ढंग-तरीके आदर्शक हैं? इसका महत्व क्या है? इन प्रश्नों का समाधान करते हुए गुरु पातशाह ने शाह मार्ग दिखाया है तथा मानव की रूहानी मंजिल की प्राप्ति हेतु उसका पथ-प्रर्दशन किया है।

मूल-मंत्र के उपरांत 'जपु' शब्द अलग रूप में अंकित है। यही इस बाणी का केंद्रीय विचार-बिंदु है और यह वास्तविक शीर्षक है। इससे आगे अंकित दो पावन पंक्तियां:

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

भी मूल-मंत्र की भांति परमात्मा का मंगलाचार अथवा आराधना ही हैं। पहली पउड़ी जो *"सोचै सोचि न होवई"* से आरंभ होती है, से केंद्रीय विचार की उसारी आरंभ हो जाती है जो अंतिम पउड़ी तक निरंतर चलती रहती है। हरेक पउड़ी में एक अलग विशेष विचार केंद्रीय विचार के साथ अभिन्न रूप में जुड़कर ही आया है।

पहली पउड़ी में गुरु साहिब प्रभु-प्राप्ति हेतु प्रचलित दो युक्तियां 'सोचै' और 'चुपै' से अपनी बात आरंभ करते हैं। 'सोचै' से भाव 'तीर्थ-स्नान' और 'चुपै' से भाव 'मौन समाधि' है। तीर्थ-स्नान को गुरु साहिब के समय न केवल भ्रमण करने वाले साधुओं द्वारा ही बल्कि साधारण लोगों द्वारा भी मुक्ति या आत्म-कल्याण का साधन माना जाता था। मौन समाधि विशेष साधुओं-संतों या योगियों द्वारा अपनायी जाती सबसे अधिक प्रचलित विधि थी। गुरु जी के अनुभव तथा चिंतन के अनुसार ये वाह्य अथवा बाहरमुखी युक्तियां हैं। आत्मिक कल्याण अंतरमुखी सुरति के बिना संभव नहीं। इसी संदर्भ में इस पउड़ी के अंत पर गुरु जी प्रश्न उठाते हैं :

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥

इसके साथ इस प्रश्न का उत्तर देते हैं:

हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥
(पन्ना १)

हमारे कुछ चिंतकों का यह विचार भी है कि समूची बाणी *"किव सचिआरा होईऐ"* या

**गांव एवं डाक भागोवाल, पत्ती खासा, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर।*

"किव कूड़ै तुटै पालि" का ही समाधान प्रस्तुत करती है। यह समाधान केंद्रीय विचार-बिंदु सच्चा नाम-सिमरन ही है।

दूसरी पउड़ी प्रभु के महान हुक्म का प्रचलन बताती है। रमज अथवा रहस्य है कि हुक्म का महान भेद समझा जाए। हउमै की निवृत्ति इसी प्रकार ही हो सकती है :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

गायन करने की युक्ति का वर्णन तीसरी पउड़ी में है। यह युक्ति नि:संदेह सही है। प्रभु का गायन उसके द्वारा सृजित जीव विभिन्न प्रसंगों अथवा बहुपक्षीय गुणों के कारण कर रहे हैं। चौथी पउड़ी में नाम-सिमरन का आदर्श समय अमृत वेला अर्थात् प्रभात का समय बताया है:

अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥
(पन्ना २)

पांचवीं पउड़ी आध्यात्मिक मार्ग में 'गुरु' या 'पथ-प्रदर्शक' का महत्व दृढ़ कराती है :

गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ . .
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥ (पन्ना २)

छठी पउड़ी पुन: तीर्थ-स्नान की बाहरमुखी युक्ति को अधूरी करार देती हुई आंतरिक स्नान का महत्व दृढ़ कराती है। सातवीं पउड़ी संसार का बढ़प्पन और प्रभु-नाम का परस्पर कोई संबंध न होने के तथ्य को उजागर करती है:

चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥
(पन्ना २)

इससे आगे 'सुणिआ' और 'मंनै' वाली चार-चार पउड़ियों की दो शृंखलाएं हैं। 'नाम' को सुनने और मानने, दोनों का महत्व गुरु साहिब ने अपने रहस्यवादी अनुभव द्वारा दृढ़ कराया है। इस अनुभव के अनुसार 'नाम' सुनने के साथ ही सिध, पीर और सुरि नाथ हुआ जा सकता है और 'नाम' सुनने से ही धरत, धवल और आकाश साकार हुए हैं। 'नाम' सुनने से ही देवतागण भए हैं। 'नाम' सुनने से सतु तथा संतोख के गुण उत्पन्न होते हैं और अठसठ तीर्थों का फल सुते सिद्ध अथवा स्वत: ही हासिल हो जाता है। 'मंनै' का महत्व सुनने से अधिक है। मान लेने वाले की तो अवस्था बयान से भी परे है:

मंने की गति कही न जाइ ॥
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥
कागदि कलम न लिखणहारु ॥
मंने का बहि करनि वीचारु ॥ (पन्ना ३)

सुरति के साथ सुनने और मान लेने वाला गुरु नानक साहिब के अनुसार पंच है। धरती को दया के पुत्र धर्म रूपी धौल ने 'नाम' के सहारे उठाया हुआ है (प्राचीन मिथिक बैल ने नहीं उठाया हुआ)। धरतियां अनगिनत हैं। सबका आधार 'नाम' ही है। इससे आगे 'असंख' वाली तीन पउड़ियां हैं। प्रभु-प्राप्ति की प्रचलित युक्तियां भी अनेकों हैं। विभिन्न युक्तियों के धारणी, सच्चे शूरवीर, मोनी, योगी उदासी, पाठक आदि भी असंख्य हैं। गायक असंख्य हैं तो चोर, हरामखोर, कूड़िओं अथवा झूठों तथा मलेछों अथवा नीच कार्य-हरकतें करने वालों का भी कोई शुमार नहीं हो सकता। कहने से तात्पर्य है कि संसार में अच्छी और बुरी दोनों प्रकार की शक्तियों का अस्तित्व है।

२०वीं और २१वीं पउड़ियां शरीर की सुच्चम अथवा निर्मलता रखने और तीर्थ, तप

एवं दान-पुन्य की, प्रभु को रीझाने के लिए लोगों में प्रचलित युक्तियों का विवरण देते हुए आंतरिक अथवा मन के शुद्धिकरण का महत्व दृढ़ कराती हैं। मन तथा आत्मा का शुद्धिकरण नाम का वास होने के लिए आवश्यक है।

२१वीं पउड़ी, जो कि इससे पहले की पउड़ियों से आकार में भी काफी लंबी है, उस समय तक के सृष्टि-उत्पत्ति संबंधी संकल्पों का चिंतन करती हुई, इसकी अनंतता तथा हिसाब से रहित व्यापकता के द्वारा *"लेखा छोडि अलेखै छूटह"* (पन्ना ७१३) वाला भाव हमारे दामन में बांधती है और हमें हिसाबों-किताबों में पड़ने की बजाय नाम-सिमरन का दामन पकड़ने के लिए प्रेरित करती है। अनंतता तथा अमोलकता का यह गायन ३३वीं पउड़ी तक निरंतर चलता है। ३४वीं पउड़ी समूची सृष्टि में धरती को विशेष 'धरमसाल' करार देती है। धरती के जीवों के कर्मों पर विचार होने का क्रम भी चल रहा है :

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥
करमी करमी होइ वीचारु ॥
सचा आपि सचा दरबारु ॥ *(पन्ना ७)*

इसी ३४वीं पउड़ी से पांच खंडों का वर्णन शुरू होता है, चाहे ३४वीं पउड़ी के धरम खंड के साथ संबंधित होने की सूचना आगे आने वाली ३५वीं पउड़ी की पहली पंक्ति में दी गई है। ३५वीं, ३६वीं और ३७वीं--तीन पउड़ियों में गिआन खंड, सरम खंड, करम खंड और सच खंड--चार खंडों का वर्णन है। ३८वीं पउड़ी उस आत्मिक टकसाल का वर्णन करती है, जिसमें शबद की सृजन-प्रक्रिया होती है। शबद नाम-सिमरन का ही रूप है। शबद ही संसार की उत्पत्ति का मूल रूप है। श्लोक की अंतिम दो पंक्तियां नाम-स्मरण करने वालों के उज्जवल मुख होने तथा आत्मिक कल्याण हो जाने के उपलक्ष्य में बताते हुए इस बाणी को संपूर्ण कर देती हैं। इस प्रकार जपु जी साहिब की बाणी नाम-सिमरन अथवा 'जपु' के केंद्रीय विचार-बिंदु के सभी संभव पक्षों पर भरपूर प्रकाश डाल जाती है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर रची बहुत ही महत्वपूर्ण बाणी है जिससे न केवल गुरु नानक नाम-लेवा सिक्ख बल्कि कुल संसार के विभिन्न धर्मों-संप्रदायों के जिज्ञासु लाभ लेते हुए अपना आत्मिक कल्याण सुनिश्चित करते आ रहे हैं। हमें भी इस बाणी के साथ जुड़ने का लाभ लेना चाहिए। 



बुजुर्गों के पास अपने अनुभव होते हैं

'गुरमति ज्ञान' सितंबर माह में "माता-पिता का मान : यही हमारी पहचान" आलेख अच्छा लगा। माता-पिता को परमात्मा के समान दर्जा प्राप्त है। बुजुर्गों के पास अपने अनुभव होते हैं। हम उनकी अच्छी सोच का लाभ लें। समाज का बड़ा दुखद पहलू है कि लोग अकेले रहने के लोभ में अपने माता-पिता को वृद्ध आश्रम में धकेल देते हैं। जब तक माता-पिता जीवित रहते हैं हम उनकी अच्छे ढंग से देखभाल नहीं कर पाते, मरने पर बड़े-बड़े विज्ञापन छपवाते हैं। दिखावटी बातों से माता-पिता तृप्त नहीं होते। अच्छा हो, हम उन्हें जीवित रहते प्रसन्न और तृप्त करने का प्रयास करें। -सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, हटा, दमोह। 

गुरु नानक साहिब द्वारा रचित 'पटी' बाणी का विषय-वस्तु

*-डॉ. जोगेशवर सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी विचारधारा के द्वारा एक नये समाज तथा सभ्याचार का सृजन किया। गुरु नानक साहिब की बाणी का सरोकार समूह मानवता है न कि केवल किसी विशेष उपक्षेत्र का विशेष समाज। आप जी ने जिस आदर्श को प्रस्तुत किया उसमें अंधविश्वास, स्वार्थ, ईर्ष्या को कोई स्थान प्राप्त नहीं है बल्कि व्यक्तिगत जीवन से सामाजिक जीवन को अधिक महत्व दिया गया है। गुरु नानक साहिब द्वारा राग आसा में रचित बाणी 'पटी' का विशेष महत्व है चूंकि यह एक लिपी-उन्मुख रचना है। वर्तमान गुरमुखी लिपी से इसका वर्ण-क्रम कुछ भिन्न है परंतु इससे यह संकेत अवश्य मिलता है कि 'पटी' बाणी की रचना तक गुरमुखी का वर्तमान क्रम निश्चित नहीं हुआ था परंतु इसके अक्षरों की गिनती और उच्चारण अवश्य निश्चित हो चुका था। यह बाणी कब अवतरित हुई, इसके बारे में सिक्ख धर्म के साथ जुड़े स्रोतों में अलग-अलग विचार अंकित हैं। 'पुरातन जन्म-साखी' के अनुसार:

"जब बाबा बरस सतां का होइआ तब कालू कहिआ तूं पढ़। तब गुरू नानक कउ पांधे पास लै गइआ। कालू कहिआ पांधे इस नूं पड़ाइ। तब पांधे पटी लिख दिती अखरां पैंतीस की मुहारणी। तब गुरू बाबा बाबा नानक लगा पढ़न राग आसा विच पटी महला १ बाणी होई।"

दूसरी ओर जन्म-साखी परंपरा में 'मिहरबान वाली जन्म-साखी', 'आदि साखीआं', 'बी-४०' आदि इस रचना की उथानका और गुरु-बाबे की बालपन में पांधे के साथ हुई गोष्ठि में नहीं मिलतीं बल्कि बाबे द्वारा 'पटी' उच्चारण की जगह *'जालि मोहु घसि मसु करि'* वाला शबद उच्चारण किये जाने का जिक्र है। सिक्ख साहित्य के कुछ विद्वानों ने 'पटी' बाणी का अवतरण पुरातन जन्म-साखी के अनुसार गुरु बाबे की प्रारंभिक विद्या के समय पांधे के साथ हुई गोष्ठि के आधार पर निश्चित किया है। इसके विपरीत अन्य विद्वानों ने इसको उच्च कोटि की, आध्यात्मिक तथा दार्शनिक विचारों की अनुभूति के साथ इसको प्रौढ़ अवस्था के अनुभव की उपज स्वीकार किया है। अवतरण के समय और स्थान से भी यदि इस बाणी को मुक्त करके देखा जाए तो हमारे सामने साक्षी है कि गुरु बाबा जी अनपढ़ नहीं बल्कि पढ़े-लिखे विद्वान थे। दूसरा, वर्णमाला को जैसे आप जी ने अर्थ एवं मूल्य प्रदान किये हैं उससे स्पष्ट है कि गुरु-बाबा जी का विद्या के बारे में अपना एक विलक्षण दृष्टिकोण था। गुरु-बाबे के समय परंपरागत विद्या की जो प्रणाली प्रचलित थी उसका संसार के साथ अधिक संबंध-सरोकार था। 'पटी' बाणी परमात्मा की स्तुति तथा मन को समझाने के उद्देश्य हेतु रची गई थी। नि:संदेह यह बाणी दुनिया से दीन (धर्म) की अधिक व्याख्या एवं विचार करती है। समकालीन धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियां तथा व्यवस्था पर इसमें कोई टिप्पणी विद्यमान नहीं

**गांव नौशहरा, मजीठा रोड, अमृतसर।*

है। शुद्ध तत्व-दर्शन, परम हस्ती, जगत और मनुष्य इसके केंद्रीय विषय हैं। एक ओर परम हस्ती की स्तुति और दूसरी ओर मनुष्य को उसके मुख्य उद्देश्य के बारे में शिक्षा देना ही इस बाणी के मूल सरोकार हैं। 'पटी' बाणी में मूल समस्या पढ़े-लिखे मनुष्य को हिसाब अथवा ऋण से मुक्त होने के महत्व से सुचेत करने के बारे में है। गुरु-बाबा जी जपु जी साहिब के अंतिम श्लोक में भी *"चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमि हदूरि"* कह कर दरगाह में मुक्त होने अथवा छूटने का जिक्र करते हैं। 'पटी' बाणी की 'रहाउ' वाली पंक्तियों में भी आप स्पष्ट करते हैं :

मन काहे भूले मूड़ मना ॥
जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥ (पन्ना ४३२)

उपर्युक्त पंक्तियों में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व में आंतरिक परिवर्तन लाता है इसलिए कि वह अपने ज्ञान द्वारा व्यवहारिक जीवन को सही दिशा दे सके। वस्तुत: पढ़ा हुआ विद्वान मनुष्य वही है जो कर्मों का हिसाब देने में सफल हो जाए। ऐसी शिक्षा का क्या लाभ, जिसके साथ कर्मों के बंधन से मुक्ति न हो सके। बाणी के अनुसार विद्वान उसी को माना गया है जो अक्षरों के ज्ञान के साथ अकथ को समझ एवं समझा सके। विद्वान वही है जो विद्या के अहंकार का परित्याग करके सदैव परमात्मा की कृपा का पात्र बनता है। वही वस्तुत: पढ़ा है और वही वास्तविक विद्वान है जो परमात्मा के साथ ज्ञान की सांझ उत्पन्न कर ले। विषय-वस्तु को यदि और अधिक स्पष्ट किया जाए तो बाणी के पाठ-पठन से यह तथ्य हमारे समक्ष स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य के लिए परमात्मा की कृपा और उसके गुणों का गायन या सिमरन ही मनुष्य का वास्तविक जीवन-उद्देश्य है। 'पटी' बाणी जहां मनुष्य को विद्या ग्रहण करने के लिए प्रेरणा देती है वहां वह मनुष्य को इस विद्या के ज्ञान द्वारा परमात्मा के निर्गुण और सगुण स्वरूप को समझने के लिए भी प्रेरित करती है। परमात्मा को *"अंतरि बाहरि रवि रहिआ"* कह कर स्पष्ट किया गया है कि परमात्मा ही सृष्टि का कर्त्ता है। *"ससै सोइ स्रिसटि जिनि साजी"* कह कर स्पष्ट किया गया है कि चार युगों, चार खाणियों का रचनहार वह स्वयं ही है। रचना और विनाश उसका खेल है और उसने अनेकों बार इस रचना का निर्माण किया और इसको ध्वस्त किया है। जैसे-जैसे उसको अच्छा लगता है तैसे-तैसे वह कर रहा है:

ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ (पन्ना ४३३)

'पटी' बाणी के अनुसार गुरु नानक साहिब ने केवल और केवल परमात्मा को ही उपमायोग्य दर्शाया है। गुरु साहिब के अनुसार उपमा केवल और केवल उसकी ही की जा सकती है जिसके गुणों का अंत न पाया जा सके। परमात्मा ही है जो खुंदकार रूप होकर सारी दुनिया में पातशाह के रूप में शोभा दे रहा है और उसने अपने हुक्म में सारे जगत को बांधा हुआ है। सर्वव्यापक परमात्मा ही रचना का मूल है जो सब जीवों को रिजक देने वाला है।

मनुष्य की घटित बुरी तकदीर के लिए उसके कर्मों को दोषी ठहराया गया है। बुराई सदैव मनुष्य के अपने कर्मों में ही होती है जबकि अज्ञानता का दोष वह दूसरों पर लागू करता है। किरत-कार तथा परिवार के मोह में मनुष्य को माया का मोह मीठा प्रतीत होने लगता है। मनुष्य यह भुला देता है कि वास्तविक विद्या दुख और सुख की मनोस्थिति से मुक्त होकर निर्लेप स्थिति में जीने का नाम है। माया

के मोह में जीव यह भूल जाता है कि मनुष्य दुनिया में 'घड़ी मुहति' (पल-दो पल) का अतिथि है। मनुष्य दुख में या अविद्या के कारण दूसरे मनुष्यों के साथ झगड़ता है और अपने अहंकार को दूसरों पर स्थापित करने की लोचा करता है। यह लोचा ही अंत में उसके साथ यमों का फंदा बन जाती है। गुरु साहिब बाणी में स्पष्ट करते हैं कि जब मनुष्य परमात्मा पर अपनी हउमै को कुर्बान कर देगा तभी वह अविद्या के भ्रम-जाल को समझने के सक्षम हो सकेगा और इसके प्रभाव से मुक्त हो जाएगा। परमात्मा की कृपा की दात अथवा ऊंची वस्तु प्राप्त करने के लिए जीव को प्रेरित किया गया है। जिस मनुष्य पर परमात्मा की कृपा प्रकट होती है केवल वही उसका सिमरन कर सकता है। परमात्मा की कृपा ही उसको माया से मुक्त करने में सहायक होती है। सिमरन परमात्मा की ऐसी दात है जो उसके कर्म (प्रसादि) गुण के साथ ही प्राप्त होती है :

--जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥ *(पन्ना ४३४)*

--चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ॥ *(पन्ना ४३३)*

बाणी का विषय-वस्तु कथनी और करनी के अंतर, सिद्धांत और व्यवहार के विरोध, एक सही पंडित या विद्वान की जगह पाखंडी का रूप प्रस्तुत करता है। बाणी, अक्षरों के ज्ञान के द्वारा एक सही विद्वान के साथ-साथ उसके सत्य-प्राप्ति के मार्गदर्शन की ओर संकेत करते हुए उस विद्या के ज्ञान को उत्तम मानती है जो पूर्ण सत्य का आभास कराने के योग्य हो। अत: मन को वश में रखने वाला हउमै-मुक्त, हुक्म मानने वाला, मोह-माया से निर्लेप, गुरु-शिक्षा का अनुसरण करने वाला, वेदों-शास्त्रों के ज्ञान अथवा ज्ञाता होने की जगह मन की शुद्धि पर बल देने वाला ही सही विद्वान कहलवाने का अधिकारी है। मन पर प्रबोधने वाला, आत्म-परीक्षणे करने वाला, सार-रस पीने वाला ही सही विद्वान है और ऐसे पंडित के उपदेश के साथ ही जगत के जीवों को परमात्मा के अस्तित्व की सांत्वना मिलती है। ऐसा विद्वान सदैव हरि-रंग में रंगा रहेगा। उसके हृदय में सदैव हरि की कथा होगी। ज्ञान को बाहर से ढूंढने की बजाय उसने उसको अंदर से प्रकट किया होगा। अमृत के झरने उसके भीतर निझर झरते होंगे। बाणी में ऐसे विद्वान को 'सदा आदेसु' किया गया है। इसके साथ ही स्पष्ट किया गया है कि सबसे उत्तम पंडित, ज्ञान का दाता, अमृत का कर्त्ता परमात्मा स्वयं ही है। अत: परमात्मा की रजा, उसके भाणे अथवा हुक्म में रहने वाला ही सच्चा पढ़ा-लिखा पंडित तथा विद्वान कहलवा सकता है। आयु के बढ़ने से, केश सफेद होने से अर्थात् वृद्ध-आयु के समय मनुष्य की धर्म-आश्रित अधिक प्रबल होती जाती है। गुरु साहिब बाणी में स्पष्ट करते हैं:

ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥
जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥ *(पन्ना ४३२)*

मनुष्य के जीवन-आदर्श की चर्चा करते हुए गुरु साहिब स्पष्ट करते हैं कि गुरमुख जीवन-मुक्त है, उसका पुन: जन्म नहीं है चूंकि उसने परम सत्य की अकथ कथा को समझ लिया है। गुरमुख गुरु के बताये मार्ग पर चलकर सदैव स्थिर रहने वाले परमात्मा को हर जगह देखता है, उसकी स्तुति करता है और परमात्मा को सर्वव्यापक समझता हुआ *'दुतीआ भाउ'* का परित्याग करके उसको एक करके जानता है। अत: उसकी परमात्मा में लिवलीनता उसको जन्म-मरण के चक्र से

(शेष पृष्ठ ४९ पर)

गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चरित बाणी : बारह माहा

*-डॉ. अंजूमन**

विरह की भावना को प्रस्तुत करने के लिए आरंभ से ही कवियों ने बारह माह का सहारा लिया है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक कवियों ने विभिन्न ऋतुओं के माध्यम से अपने प्रेम में मिलन और विरह की भावना को प्रस्तुत किया है। काव्य की इसी परंपरा को गुरु-कवियों ने भी अपनाया और अपने काव्य में बारह माहा का उपयोग कर परमात्मा से आत्मा के मिलन और विरह को बड़े ही उचित ढंग से विरचित किया है। इसकी एक अति सुंदर उदाहरण गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चरित 'तुखारी' राग के अंतर्गत बाणी 'बारह माहा' है।

गुरु नानक साहिब का समग्र जीवन महान साहित्यिक प्रवाह था। गुरु जी काव्य और संगीत की प्रतिमूर्ति थी। जपु जी, सिध गोसटि, ओअंकार, आसा की वार, माझ की वार, मलार की वार, पटी और बारह माहा (तुखारी राग) नामक लंबी बाणियां और ५७८ फुटकल शबद (पद्य), विभिन्न अवसरों पर संगीत की तानों के साथ गुरु जी ने अपने मधुर कंठ से उचारे हैं। ये बाणियां श्री गुरु ग्रंथ साहिब में २० रागों के अंतर्गत संकलित हैं।

बारह माहा : गुरु नानक साहिब की यह बाणी उनके अंतिम दिनों की मानी जाती है। यह 'तुखारी' राग के अंतर्गत संकलित है। जब वे करतारपुर में निवास करते थे तब उनको ऐसा अनुभव हुआ कि जीवात्मा रूपी स्त्री परमात्मा रूपी पति को मिलने के लिए जाने को तैयार हो रही है।

विषय-वस्तु : इस बाणी में आत्मा-परमात्मा के मिलन की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। यह प्रक्रिया वियोग से संयोग की तरफ सहज-भाव से विकास करती है। प्रेमिका को वियोग की परिस्थितियों से गुजरते हुए संयोग की ओर ले जाने वाला काव्य-रूप 'बारह माहा' है। आम तौर पर कवि पहले ११ मासों में वियोग का चित्रण करता है और अंतिम मास में संयोग-सुख का वर्णन करता है।

'बारह माहा' काव्य रूढ़ि के अनुसार वियोग की दशा उत्पन्न करने के लिए प्रेमी अथवा पति को परदेस भेजा जाता है और प्रेमिका को विरह की आग में जलती वर्णन करके उसकी मानसिक दशा को प्रकृति के प्रकरण में प्रस्तुत किया जाता है। यहां यह वर्णनयोग्य है कि प्रेमी और प्रेमिका का मिलन आत्मा और परमात्मा के मिलन के रूप में है। गुरबाणी में साधक रूपी स्त्री का वियोग पूर्वराग वाला है और प्रालब्ध कर्मों का तथा द्वैत-भाव के फलस्वरूप ही यह स्थिति प्राप्त हुई है।[१] इसका मुख्य कारण प्रेमिका (जीवात्मा) का अहंकार है। इस अहंकार को त्यागने के बाद ही वास्तविक तथा चिरइच्छित सुख की प्राप्ति हो सकती है परन्तु इसमें गुरु-कृपा की बहुत आवश्यकता है:

ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ (पन्ना ११०८)

जीवात्मा को परमात्मा के बिना अपनी तुच्छता का ज्ञान होने लगता है। इसी तुच्छता को खत्म करने और आत्म-शुद्धि के लिए वह

**गांव धौलपुर, डाक : तलवंडी लाल सिंघ, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर-१४३५०५ (पंजाब)*

प्रयत्न करती है। उसे सम्पूर्ण ब्रह्मांड में प्रभु बसा हुआ दिखाई पड़ता है और अपने मन में भी वह उस परमात्मा को पूर्ण रूप से महसूस करती है। उसकी स्थिति इस प्रकार की हो जाती है:

हरि रचना तेरी किआ गति मेरी
हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ *(पन्ना ११०७)*

प्रभु के विरह में जीवात्मा को सुख देने वाली प्रकृति भी दुखदायक प्रतीत होती है और वह भयभीत हो जाती है। वियोगिनी आत्मा को परमात्मा से वियोग के कारण बसंत ऋतु के फूल, भौरे आदि भी सुखदायक नहीं लगते, लेकिन वह सोचती है कि यदि उसके पति घर आ जाएं तो उसका हृदय रूपी वन खिल जाए। जैसे वैसाख के महीने में शाखाएं अपना रूप संवारती हैं उसी प्रकार जीवात्मा परमात्मा से मिलकर अपना रूप संवारना चाहती है। ज्येष्ठ के महीने में धरती तप रही है और वर्षा की प्रार्थना करती है। उसी प्रकार स्त्री भी अपना मान छोड़ प्रियतम के गुणों का स्मरण करती है। आषाढ़ के महीने में सूर्य की तेज गर्मी के कारण धरती दुख सहन करती है। सूर्य का रथ फिरता रहता है और स्त्री छाया ढूंढती है। सावन में बादल बरस कर धरती को सुख दे रहे हैं परंतु विरहणी जीवात्मा परमात्मा के बिना और भी अधिक दुखी हो रही है। यह दुख उसे और व्याकुल कर रहा है। भादों के महीने में प्रकृति पूर्ण यौवन प्राप्त कर चुकी है। सभी जीव-जंतु मौज मना रहे हैं, परंतु वह पति रूपी परमात्मा के बिना सुख प्राप्त नहीं कर पा रही। वह कहती है:

मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥
नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥ *(पन्ना ११०८)*

आश्विन मास है, शोक में डूबी स्त्री मर रही है। जीवात्मा-रूपी-स्त्री तभी प्रभु-रूपी-पति से मिलती है जब प्रभु उसे स्वयं मिलाता है, अन्यथा द्वैत-भाव में नष्ट हो जाती है। कार्तिक के महीने में कर्म का वही फल प्राप्त होता है जो प्रभु को अच्छा लगता है। ज्ञान-तत्व प्रकाशित होता है। गुरु नानक साहिब के बारह माहा के अनुसार अगहन के महीने में जो स्त्री (जीवात्मा) पति (परमात्मा) के आगे आंतरिक भक्ति करती है, वही स्वामी (प्रभु) को अच्छी लगती है। पौष मास में जीवात्मा कहती है, जिसको परमात्मा से प्रेम और स्नेह हो गया है, वह साधक-रूपी-स्त्री प्रेमपूर्वक रसिक प्रियतम को पाकर प्रसन्न होती है। माघ का महीना आ गया है। जीवात्मा (स्त्री) को साजन सहज-भाव से मिल गए। उनके गुणों को ग्रहण करके स्त्री ने अपने हृदय में धारण कर लिया है। फाल्गुन का महीना अंतिम और आनंद देने वाला है। जिन्हें प्रभु का प्रेम अच्छा लग गया, उनके मन बहुत प्रसन्न हैं।

सत्यस्वरूप परमात्मा यदि सहज-भाव से आ मिले तो बारह मासों की ऋतुएं और तिथियां तथा दिन, घड़ियां, मुहूर्त, पल आदि सभी अच्छे हो जाते हैं। इस प्रकार गुरु नानक साहिब ने 'बारह माहा' की पावन बाणी के द्वारा जीवात्मा के अहंकार को खत्म कर परमात्मा से उसके मिलन का रास्ता दिखा कर उसके घर और मन को आनंद से भर दिया है और अब उसका मन अन्य किसी तरफ नहीं भटकता। इस प्रकार जीवात्मा परमात्मा से मिलन कर मोक्ष की प्राप्ति करती है।

कलात्मकता : सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक गुरु नानक साहिब के प्रभु-प्रेम के निर्मल भावों को प्रकट करते हुए उनके अति सकुशल कवि-रूप को भी सहजता से दर्शाती है। उनकी बाणी की कलागत सर्वप्रमुख

विशेषता यह है कि इसमें अभिव्यक्ति के लिए लोक-काव्य-परंपराओं एवं पद्धतियों को अपनाया गया है। 'बारह माहा' की परंपरा संस्कृत साहित्य में उपलब्ध नहीं है; वहां षट्-ऋतु वर्णन द्वारा वियोग-संयोग की भावनाओं को अभिव्यक्त किया गया है। अपभ्रंश साहित्य में इस रूप की कतिपय कृतियां मिल जाती हैं। १०वीं और ११वीं शताब्दी में आधुनिक भारतीय भाषाओं के उद्भव से ही इस काव्य रूप का विकास हुआ जान पड़ता है। विचाराधीन 'बारह माह' उपलब्ध पंजाबी साहित्य में सबसे अधिक प्राचीन है।

साधारणत: 'बारह माहा' का आरंभ वर्ष के प्रथम महीने चेत से होता है। कई बार सावन, आषाढ़ आदि महीनों से भी इसका आरंभ किया गया है। गुरु नानक साहिब द्वारा विरचित 'बारह माहा' का आरंभ चेत मास से हुआ है। आरंभ के चार पद्य भूमिका के और शेष १३ पद्यों में से १२ पद्यों का सम्बंध प्रत्येक मास से है तथा अंतिम पद्य में गुरु जी ने अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। प्रत्येक पद्य छ: पंक्तियों का है, परंतु पंक्तियों मात्राओं को मुख्य न रखते हुए भाव-अभिव्यक्ति को ही प्रमुखता दी है।

इस बाणी के राग को भावना के अनुकूल चुना गया है। वियोगावस्था नायिका के लिए असहनीय होती है और तुषार का भी वनस्पति पर कुछ इसी प्रकार का प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त इसमें दार्शनिक तर्क-वितर्क के स्थान पर आत्मिक साधना एवं शुद्धि पर बल दिया गया है। भाषा सरल है जिसमें प्रादेशिक प्रभाव भी है। विरह की भावना की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

'बारह माहा' में प्रकृति का अत्यंत सुंदर चित्रण हुआ है। इस संबंध में गुरु जी की अनुभूति बड़ी सूक्ष्म है। इतना यथार्थ प्रकृति-चित्रण तत्कालीन काव्य में कम ही मिल पाया है। इस प्रकार गुरु नानक साहिब ने सुंदर प्रकृति-चित्रण द्वारा जीवात्मा के वियोग की अवस्था को संयोग की तरफ गति प्रदान की है। इस प्रकार गुरु नानक साहिब ने यह स्पष्ट करने की कृपालता की है कि किस प्रकार सच्चे मार्ग पर चलने वाली आत्मा का प्रभु-मिलन की मंजिल पाना संभव है। 

. . . 'पटी' बाणी का विषय-वस्तु *(पृष्ठ ४६ का शेष)*

मुक्त कर देती है:

ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥
गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥
(पन्ना ४३४)

गुरु नानक साहिब ने पांधे की साधारण मुहारनी से इसके आंतरिक तथा आध्यात्मिक अर्थों को उजागर करने हेतु 'पटी' बाणी उच्चारण की। इस प्रकार 'पटी' बाणी ज्ञान और अज्ञान के विरोध में से सृजित बाणी के रूप में हमें अपने अस्तित्व का बोध कराती है। भाव यह हुआ कि 'पटी' बाणी का विषय-वस्तु पढ़ाई अथवा ज्ञान के आंतरिक पक्षों के साथ जुड़कर इसकी प्रासंगिकता को अंकित करता है। सांसारिक अर्थों में पढ़े-लिखे को पुनर्सृजित करना 'पटी' बाणी का मूल सरोकार है। यह पढ़े-लिखे के गुण/अवगुण बताकर उसके दुनियावी चरित्र में से आध्यात्मिक सत्य की खोज करने वाली बाणी है। स्वाभाविक ही अक्षर-ज्ञान से दैवी ज्ञान का आभास और फिर परमात्मा की रचना में मनुष्य की स्थिति, जो उसकी अज्ञानता के कारण है, बाणी का ताना-पेटा बनती है और मनुष्य को सदाचारी होते हुए वास्तविक विद्वान बनने के साथ-साथ विद्या अथवा विद्वान के वास्तविक उद्देश्य को स्पष्ट करती है। 

'सलोक वारां ते वधीक महला १' का विषय-वस्तु

*-डॉ. जसविंदर कौर**

बाणी के शीर्षक से ही स्पष्ट है कि श्री गुरु नानक देव जी के जो श्लोक वारों के साथ शामिल होने के बाद बच गये उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अंत में मुंदावणी तथा रागमाला से पूर्व रखा गया। इसमें कुल ३३ श्लोक हैं, जिनमें से २८वां श्लोक श्री गुरु अमरदास जी का है। इस प्रकार गुरु नानक साहिब से संबंधित ३२ श्लोक रह जाते हैं। ये श्लोक चाहे सतही दृष्टि से देखने पर एक-दूसरे से पूर्णत: पृथक प्रतीत होते हैं परंतु इनमें प्रकट किये गये विचार गुरु नानक साहिब की विचारधारा की ही व्याख्या करते हैं।

इन श्लोकों में उस समय की अधोगति का वर्णन करते हुए आदर्श मार्ग सुझाया गया है। इस बात की चर्चा है कि दुनिया में उचित मार्ग पर चलने वाले दिखाई नहीं पड़ते। दुनिया की खातिर मनुष्य अपना धर्म भी खोकर बैठा हुआ है। वह अहंकार में ग्रसित है। जवान प्राणी को अपनी जवानी का अहंकार है, पर यह अहंकार व्यर्थ है, क्योंकि यह सदीवी नहीं है और इसके जाने में कोई विलंब नहीं होता।

कामादिक विकार आत्मिक जीवन के दुश्मन होते हैं। मनुष्य को मन और इंद्रियों की नीच प्रेरणा से बच कर रहना चाहिये और विकार रूपी दुष्टों को अंदर से निकालने के लिये प्रभु-स्तुति को सदा याद रखना चाहिये। असल समझदार मनुष्य वे होते हैं जो संसार-समुद्र में कामादिक विकारों की लहरों से पार निकल जाते हैं। संसार में विकारों की भरमार है। मोह के जाल में फंसा जीव अपने अंदर से प्रभु-प्रेम को खोये बैठा है। माया की खातिर जीव आत्मिक जीवन-रूपी धन से वंचित है। कामादिक विकार आत्मिक जीवन को खा जाने वाले बाघ हैं। जो मनुष्य लोभ आदिक आधार पर कर्म करता है वह अपने किये कार्यों का फल पाता है। वह सदा कामादिक विकारों का शिकार बना रहता है।

माया के मोह में फंसे जीव की इंद्रियों का सदा कोहराम मचा रहता है। ये इंद्रियां बुरे कार्यों में ही रुचित रहती हैं। जो मनुष्य-मात्र माया के लिये मारा-मारा फिरता है वह धन तो अवश्य कमा लेता है पर भय उसके मन में सदा व्याप्त रहता है। कामादिक के घेरे में लिप्त मनुष्य यह सब भूल जाता है। नाशवंत जगत के पासारे में मोह से बच कर रहना चाहिये :

तिस सउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु ॥
(पन्ना १४१०)

मनुष्य को यह ध्यान रखना चाहिये कि मन ही विकारों की जड़ है। मन को समझाते हुए गुरु नानक साहिब कहते हैं कि तुझे टेढ़े-मेढ़े रास्तों भाव कामादिक के पीछे लग कर नहीं चलना चाहिए। इन टेढ़े रास्तों पर चलने से आत्मिक मौत होती है और आवागमन का चक्र भी समाप्त नहीं होता।

विकारों की कालिमा मन को काला कर देती है। ऐसा मानव विकारों के तालाब में बड़े शोक से स्नान करता है। जैसे कौए की चोंच

**१४७, कबीर पार्क, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर।*

गंदगी से भरी रहती है उसी प्रकार विकारी मनुष्य का मुंह भी निंदा आदि गंदगी से भरा रहता है। विकारी मनुष्यों की संगत में परमात्मा की अंश 'जीव' को 'गुरु' रूपी सरोवर की महत्ता की समझ नहीं आती।

गुरु नानक साहिब ने उपरोक्त वर्णित मनुष्यों को *"फैल फकड़ु संसारु"* कहा है भाव ऐसे मनुष्य दिखावे के लिए काम करते हैं और अशुभ वचन बोलते हैं। ऐसे मनुष्यों को गुरु साहिब 'अंधे' कहते हैं। वे यह भी मानते हैं कि ऐसे मनुष्य गुण-विहीन होने पर भी अहंकार में फंसे रहते हैं। इस तरह के मनुष्यों की अज्ञानता के संबंध में गुरु साहिब का फरमान है :

मनहु जि अंधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥
मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥
इकि कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥
इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति ॥
इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥
नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥ *(पन्ना १४११)*

इस प्रकार मनुष्य के साथ मित्रता रखने वाला भी अज्ञानता और माया के भंवर में फंस जाता है। उसे यह अहसास नहीं रहता कि मौत किसी समय भी आ सकती है। ऐसा मनुष्य बहुत बड़ी-बड़ी डींगें हांकता है पर वह पतन की ओर ही जाता है :

मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥
(पन्ना १४१२)

इस स्थिति से उभरने का मार्ग भी इन श्लोकों में दर्शाया गया है। इसके लिये मनुष्य को गुरु के आदेशानुसार चलने, नाम जपने और प्रभु-हुक्म मानने की सलाह दी गई है। गुरु नानक साहिब सत्य की प्राप्ति के लिये शरीर को कठिन तपस्या से कष्ट देने का मार्ग नहीं सुझाते। 'सलोक वारां ते वधीक महला १' के अनुसार विकारों के अग्नि रूपी भवसागर को वही पार कर सकता है जिसको इसे तैर कर पार करने की विधि आती हो। जिसे यह विधि नहीं आती उसे उसकी शरण लेनी होगी जो इस विधि को जानता है। ऐसा सिर्फ गुरु की शरण में जाने से ही हो सकता है, और कोई साधन या विधि यहां काम नहीं आ सकती :

सहसै जीअरा परि रहिओ मा कउ अवरु न ढंगु ॥
नानक गुरमुखि छुटीऐ हरि प्रीतम सिउ संगु ॥
(पन्ना १४१०)

जो जीव-स्त्री तृष्णा की अग्नि से छुटकारा पाना चाहती है उसे चाहिये कि वह शीतल जल (आनंद) की प्राप्ति के लिये गुरु-आज्ञा में ही जीवन व्यतीत करे :

अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधि जलु नाहि ॥
जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥
जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥
नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥
(पन्ना १४११)

गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। गुरु की दीक्षा-प्राप्ति के उपरांत ही जीवन स्वयं के असली स्वरूप की पहचान कर सकता है और जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है, प्रभु-प्राप्ति कर सकता है :

बाघु मरै मनु मारीऐ जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ॥
आपु पछाणै हरि मिलै बहुड़ि न मरणा होइ ॥
(पन्ना १४१०)

'गुरु' सरोवर है। उसकी शरण दीवार के आश्रय के समान है। गुरु की कृपा-दृष्टि हो

जाने पर जीव मल रहित हो जाते हैं :

कीचड़ि हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥
नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥
(पन्ना १४११)

दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त जीव का ध्येय प्रभु-प्रेम और प्रभु-भक्ति है। उसके अतिरिक्त अन्य समस्त क्रियाएं अहं भाव को ही बढ़ावा देती हैं :

जनमे का फलु किआ गणी जां हरि भगति न भाउ ॥
पैधा खाधा बादि है जां मनि दूजा भाउ ॥
(पन्ना १४११)

प्रभु की प्रेमा-भक्ति को ही परम ध्येय समझने वाले ज्ञानी पुरुष बहुत कम होते हैं। ऐसे ज्ञानी पुरुष जानते हैं कि जब एक प्रभु-प्रेम के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं, व्यक्तियों आदि से प्रेम किया जायेगा तो उसका अच्छा खाना, पहनना आदि व्यर्थ जायेगा क्योंकि ऐसा मनुष्य मात्र नाशवान जगत को ही अपने ध्यान का केंद्र बनाये रखता है। तीर्थ-स्नान आदि के माध्यम से कोई मनुष्य शरीर को पवित्र नहीं कर सकता क्योंकि यह बना ही ऐसा है कि इसको विकारों का कीचड़ सदैव लगा रहता है।

मनुष्य को यह ध्यान रखना चाहिये कि प्रभु जीव को आध्यात्मिक लाभ-प्राप्ति हेतु इस जगत में भेजता है, पर ज्यादातर लोग आध्यात्मिक जीवन की कमाई किये बिना ही जगत से चले जाते हैं।

जीव को यह नहीं भूलना चाहिये कि प्रभु सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान है :

सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥
(पन्ना १४१२)

परमात्मा सब कुछ कर सकने की सामर्थ्य भी रखता है। वह सब कुछ पैदा करके, उसे नष्ट करके देखता है। कोई भी अवतार उसकी बराबरी नहीं कर सकता :

नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥
(पन्ना १४१२)

गुरु के सम्मुख रहने वाला मनुष्य यह विश्वास रखता है कि प्रभु सर्वगुण-युक्त है और उसकी मर्यादा में कोई दोष नहीं है। ऐसे मनुष्य सारे गुणों से युक्त प्रभु में सदैव तल्लीन रहते हैं :

पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥
नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे मांहि समांही ॥
(पन्ना १४१२)

पर प्रभु-प्राप्ति का मार्ग अति कठिन है। इसके लिये जीव को अपना सब कुछ न्यौछावर करना पड़ता है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

जिस मनुष्य के हृदय में प्रभु उपजता है तुरंत उसका अहं समाप्त हो जाता है। उसके अंदर स्वार्थ का जोर नहीं रह जाता। प्रभु-चरणों की प्रीति से अहं भाव की समाप्ति हो जाती है। पर प्रभु-प्रेम की चोट उस मनुष्य को ही लगती है जिसे प्रभु स्वयं ऐसा करने की ओर लगाता है। प्रभु ही मनुष्य के हृदय को अपने प्रेम से बांधता है और फिर यह प्रेम रूपी तीर सदा के लिये वहीं बना रहता है :

नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥
चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥
जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥
पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥
(पन्ना १४११)

आदर्श मनुष्य भी वही है जो प्रभु-प्रेम में लिप्त रहता है। गुरु नानक साहिब आदर्श ब्राह्मण के लक्षणों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि जो ब्राह्मण प्रभु के साथ गहरा संबंध रखता है, जो जप-कर्म करता है, तप-कर्म करता है, संयम-कर्म करता है, जो प्रभु-भक्ति को ही जप, तप, संयम समझता है, जो मृदु स्वभाव और संतोष धारण करता है, जो माया-मोह के बंधनों से स्वतंत्र है वही ब्राह्मण सत्कारयोग्य है।

जो खत्री (क्षत्रिय) कामादिक दुश्मनों की समाप्ति के लिये अच्छे कर्म करने वाला योद्धा बनता है, जो अपने जीवन को औरों के भले का साधन बनाता है, जो शरीर रूपी खेत में प्रभु-नाम रूपी बीज बोता है, ऐसा खत्री ही प्रभु-दर पर स्थान प्राप्त करता है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय के माध्यम से गुरु नानक साहिब समझाते हैं कि आदर्श मनुष्य सर्वगुण-संपन्न प्रभु की रचित जगत-मर्यादा को कभी नहीं भूलते। वे सदा गुणों के मालिक प्रभु की याद में लीन रहते हैं। यही मनुष्य-जीवन का परम-ध्येय है:

नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे मांहि समांही ॥
(पन्ना १४१२)

इस प्रकार हम देखते हैं कि इन श्लोकों में गुरु नानक साहिब मानव-जीवन के परिष्कार पर ही अपना ध्यान केंद्रित रखते हैं। वे मनुष्य को विकारों से सावधान रहने के साथ-साथ कर्म-कांडों तथा कुरीतियों से भी किनारा करने का मार्ग सुझाते हैं। गुरु साहिब जीव को अपने सुधार का मार्ग सुझाने के साथ-साथ समाज की तत्कालीन स्थिति को भी ध्यान में रखते हैं, इस लोक के साथ-साथ परलोक में भी बुरे कर्मों के फल की ओर से सुचेत करते हैं। उनके अनुसार अगर इस जन्म में आत्मिक मृत्यु है तो परलोक में अग्नि के तालाब की भयानकता भी है। पर साथ ही गुरु जी ने इनसे बचने के लिये गुरु-शरण में जाकर सद्कर्म और भक्ति के मार्ग का निर्देश किया है। इस मार्ग पर प्रशस्त जीव को प्रभु-कृपा प्राप्त होती है जो अंत में प्रभु-मिलाप का माध्यम बनती है। उपरोक्त वर्णित मार्ग पर चल कर जीव अपने जीवन के अंतिम पड़ाव प्रभु-मिलाप तक पहुंच जाता है और आवागमन के चक्र से सदा के लिये मुक्त भी हो जाता है। गुरु नानक साहिब द्वारा दर्शाया गया मार्ग आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। गुरु जी का दर्शाया मार्ग विश्व-बंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित कर विश्व-शांति का साधन बन सकता है।

आवश्यक सूचना

'गुरमति ज्ञान' धार्मिक पत्रिका है। इसमें गुरबाणी की पंक्तियां छपी होने के कारण इसे रद्दी आदि में न बेचा जाए। पाठकगण पत्रिका पढ़ने के बाद अपनी आवश्यकतानुसार छः-छः महीने की पत्रिकाएं एकत्र कर जिल्द बनवा कर संभाल सकते हैं। यदि ऐसा संभव न हो या संभालकर रखने की व्यवस्था न हो सके तो पढ़ने के बाद पत्रिका किसी दूसरे पाठक/मित्र आदि को दे दी जाए या किसी पुस्तकालय या गुरुद्वारे में पहुंचा दी जाए। ऐसा करने से गुरबाणी के साथ-साथ पत्रिका का भी मान-सम्मान बना रहेगा। *-संपादक।*

वार का रूपाकार, परंपरा तथा वार मलार की महला १

*-ज्ञानी मोहन सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ३१ रागों के अंदर बाणी दर्ज है जिनके नाम इस प्रकार हैं:

(१) सिरीरागु (२) माझ (३) गउड़ी, (४) आसा (५) गूजरी (६) देवगंधारी (७) बिहागड़ा (८) वडहंसु (९) सोरठि (१०) धनासरी (११) जैतसरी (१२) टोडी (१३) बैराड़ी (१४) तिलंग (१५) सूही (१६) बिलावल (१७) गोंड (१८) रामकली (१९) नट नाराइन (२०) माली गउड़ा (२१) मारू (२२) तुखारी (२३) केदारा (२४) भैरउ (२५) बसंत (२६) सारग (२७) मलार (२८) कानड़ा (२९) कलिआन (३०) परभाती (३१) जैजावंती

इस आलेख में राग, वार, धुनी के अलावा मलार राग और उसकी वार के बारे में विचार करेंगे।

राग : संगीत-विद्या विद्वानों के अनुसार ऐसा स्वर-प्रबंध है जिसके सुनने से मन में प्रेम उपजता है। रागों के कई मतभेद और देश-भेद हैं। कइयों ने भैरव, मलार, सिरीरागु, बसंत, हिंडोल और दीपक को प्रधान राग माना है परंतु कइयों ने मालव, मलार, सिरीरागु, बसंत, हिंडोल और करणाट मुख्य राग माने हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज राग माला ने यह स्पष्ट किया है कि शेष रागमालाओं से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रागमाला अलग है, जिससे स्पष्ट है कि गुरमति संगीत अलग मत है। 'गुरमति संगीत निरणै' के अनुसार छः राग भैरव, मालाकउस, हिंडोल, दीपक, सिरीरागु और मेघ राग मुख्य राग माने गए हैं।

वार: वार से भाव वो रचना है जिसमें शूरवीरता का वर्णन हो भाव युद्ध सम्बंधी काव्य। हिंदोस्तान एक ऐसी धरती है जिस पर समय-समय अनेकों आक्रमणकारी चढ़ कर आये। जिन बहादुर लोगों ने उन आक्रमणकारियों का डटकर सामना किया उनकी शूरवीरता के प्रसंग गाकर सुनाने की रीति चली। इस समस्त प्रसंग को 'वार' कहा जाता था। 'वार' साधारणत: जंगों-युद्धों के बारे में ही हुआ करती थी। बाद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने मीरी-पीरी की दो तलवारें पहनकर लोगों के मनों में वीर रस उत्पन्न करने के लिए ढाडियों से ये वारें गायन करवाईं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाईस वारों में से तीन वारें श्री गुरु नानक देव जी की उच्चारण की हुई हैं--मलार की वार, माझ की वार और आसा की वार। मलार की वार और माझ की वार दोनों वारों की सत्ताईस-सत्ताईस पउड़ियां गुरु नानक साहिब की उच्चारण की हुई हैं। दोनों वारों की पउड़ियों की आठ-आठ पंक्तियां हैं तथा दोनों का विषय-वस्तु तृष्णा की अग्नि है।

धुनी : 'धुनी' से भाव गायन करने की धारना अथवा गायन करने का ढंग है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज बाईस वारों में नौ वारों के प्रारंभ में शीर्षक लिखे हैं, जैसा कि माझ की वार के आरंभ में "मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ

****L**-६/९०५, गली नं. ३/४, न्यू शहीद ऊधम सिंघ नगर, श्री अमृतसर। मो: ९७७९६-०८०५०*

की धुनी गावणी" लिखा है; गूजरी की वार के आरंभ में "सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी", वडहंस की वार के आरंभ में "लला बहलीमां की धुनि गावणी" और मलार की वार के आरंभ में "राणे कैलास तथा मालदे की धुनि" अंकित किया हुआ है जिसके अर्थ हैं कि जिस लय में ऊपर दिये गए शीर्षकों वाले योद्धाओं की वार गायन की गई है उसी लय में ये वारें गायन करने का पंचम पातशाह जी ने आदेश दिया है।

मलार राग : 'गुरमति संगीत निरणै' के अनुसार मलार मेघ राग की रागनी है जो सोरठि, मधमाधणी तथा कानड़ा, तीनों के संयोग से बनती है। मलार मेघ राग का पुत्र भी माना जाता है और मेघ गोंड तथा सारंग के संयोग से बना है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मलार सत्ताइसवें स्थान पर है। यह वर्षा ऋतु का राग है। 'नाद बिनोद' के अनुसार मलार मेघ, गोंड तथा सारंग के संयोग से बनता है। इसके गायन करने का समय वर्षा ऋतु है। 'राधा गोबिंद संगीत' के अनुसार यह औड़व (पांच सुर का राग) है और इसके गायन का समय प्रात: काल है। 'सुर ताल समूह' के अनुसार मलार सारंग, सोरठि तथा बिलावल को मिलाकर बनता है। मलार खाड़व (छ: सुर का राग) है। यह हर समय तथा विशेषत: आधी रात के समय गायन किया जाता है।

मलार राग श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना १२५४ से १२९३ तक है। इसमें गुरु साहिबान के अतिरिक्त भक्त नामदेव जी के दो और भक्त रविदास जी के तीन शबद हैं। वार तथा भक्त-बाणी से पूर्व गुरु साहिबान के ७० शबद हैं जिनमें से महले पहले, तीसरे, चौथे और पांचवें के क्रमश: ९, १३, ९ और ३० शबद हैं; महले पहले तथा तीसरे की क्रमश: पांच और तीन असटपदियां हैं और महले पांचवें का एक छंत है।

मलार की वार महला १ : साहिब श्री गुरु नानक देव जी ने मलार की वार ऐमनाबाद (सैदपुर) के युद्ध की पीड़ा को अपनी आंखों के साथ देखने के बाद लिखी। इस वार में रणभूमि और इसमें लड़ने वाले योद्धाओं का जिक्र है और साथ ही उस जंग का, जो महाबली योद्धा अकाल पुरख की है तथा उस युद्ध का, जो संसार रूपी रणभूमि पर हुआ, जैसा कि :

पउड़ी ॥ आपे छिंझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥
लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥
मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ ॥
आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥
सभना खसमु एकु है गुरमुखि जाणीऐ ॥
हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ॥
सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीऐ ॥
नानक सचा सबदु सलाहि सचु पछाणीऐ ॥४॥
(पन्ना १२८०)

इस वार की कुल अट्ठाईस पउड़ियां हैं। इनमें से सत्ताईस पउड़ियां श्री गुरु नानक देव जी की हैं और एक सत्ताइसवीं पउड़ी श्री गुरु अरजन देव जी की उच्चारण की हुई है, चूंकि इस पउड़ी के साथ 'पउड़ी नवी म: ५' लिखा हुआ है। इस वार में कुल अठावन श्लोक हैं। चौबीस सलोक श्री गुरु नानक देव जी के, पांच श्री गुरु अंगद देव जी के, सत्ताईस श्री गुरु अमरदास जी के और दो श्री गुरु अरजन देव जी के हैं।

राणे कैलास तथा मालदे की धुनि : इस वार के आरंभ में आये शीर्षक 'राणे कैलास तथा मालदे की धुनि' के पीछे एक कथा मिलती है कि राणा कैलास देउ और राणा मालदेउ दो सगे राजपूत भाई थे। पिता के कालवश हो जाने के

बाद दोनों भाइयों के बीच संपत्ति-विभाजन के विषय को लेकर मन-मुटाव हो गया जो बाद में घमासान युद्ध का कारण बना। युद्ध के मध्य मालदेउ ने कैलास देउ को बंदी बना लिया। कैलास देउ ने अपनी भूल को मान लिया जिस पर मालदेउ ने उसको क्षमा कर दिया और आधा राज्य उसको सौंप दिया। उसके इस कर्त्तव्य को देखकर ढाडियों ने प्रसंग लिखे जिसको 'वार' कहा गया। उसी लय-प्रबंध में 'मलार की वार' लिखी होने के कारण पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस वार पर यह शीर्षक लिखकर इस वार को उसी वार की धुनी में गायन करने का आदेश दिया। धुनी वाली वार की एक पउड़ी इस प्रकार है:

धरत घोड़ा परबत पलाण सिर टट्टर अंबर।
नउ सै नदी नड़िंनवे राणा जल कंबर।
ढुका राइ अमीर दे कर मेघ अडंबर।
आनत खंडा राणिआ कैलाशे अंदर।
बिज्जली जिउ चमकाणीआं तेगां विच अंबर।
मालदेव कैलास नूं बंनिआ कर संबर।
फिर अद्धा धन माल दे छडिआ गढ़ अंदर।
मालदेउ जस खटिआ वांग साह सिकंदर।

उपर्युक्त आठ-तुकी पउड़ी के साथ मलार की वार की आठों पंक्तियों वाली धुनि मिलाई गई है:

पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥
अंबरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥
विणु थंम्हा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥
सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥
कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥
तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥
तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥
सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥१॥
(पन्ना १२७९)

'मलार की वार' का पउड़ी-क्रमानुसार भाव इस प्रकार है :

१) उस परमेश्वर ने अपना आप प्रकट करके सारी सृष्टि की साजना की है। धरती, आकाश, चंद्रमा, सूरज आदि सभी में उस प्रभु की ज्योति काम कर रही है। सारी सृष्टि मानो उस हरि का दरबार है जिसमें वह स्वयं तख्त पर बैठा हुआ है। उस परमात्मा की हस्ती ही सदैव स्थिर रहने वाली है शेष सब सृष्टि नाश होने वाली है, जैसे ऊपर भी उल्लेख दर्ज किया है:

सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥
कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥

२) वह प्रभु सारी कायनात में विद्यमान है। बड़े-बड़े अवतार भी उसका स्वरूप बयान नहीं कर सके, उस हरि का हुक्म मानकर ही उसको पाया जा सकता है। परमेश्वर को मिलने का एक ही रास्ता यह है कि गुरु में से उस अरूप हस्ती के दर्शन करना जिसके अंदर परमात्मा ने अपना आप समाया हुआ है :

ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइआ ॥ . . .
गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥
सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥२॥ (पन्ना १२७९)

३) परमात्मा ने ही सब संसार को विभिन्न व्यवसायों में लगाया हुआ है तथा वह स्वयं छुपा बैठा है। बड़े-बड़े अवतार भी परमात्मा के इस रहस्य को न पा सके। वह प्रभु हरेक जीव के अंदर तख्त रचाकर बैठा हुआ है :

ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न पाइआ ॥
सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥
दुनीआ धंधै लाइ आपु छपाइआ ॥ (पन्ना १२७९)

४) यह संसार मानो कल्पनाओं का अखाड़ा है जहां भले-बुरे का खेल हो रहा है तथा इस खेल को परमेश्वर स्वयं ही करा रहा है।

५) उस परमेश्वर ने ही भलाई और बुराई के

दो गुट बना कर स्वयं ही उनमें झगड़ा उत्पन्न किया तथा स्वयं ही धर्म रूपी बिचोला (मध्यस्थ व्यक्ति) है। गुरु की मति के साथ काम-क्रोध को मारने वाले शूरवीर हैं। सच्चे नाम का सेवन करने वाले ही तुझे अच्छे लगते हैं। इसलिए जो तुझे ध्यान में लाते हैं मैं उन पर कुर्बान जाता हूं :

दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥ . . .
मनमुख कचे कूड़िआर तिन्ही निहचउ दरगह हारिआ ॥
गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्ही मारिआ ॥
सचै अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥
से भगत तुधु भावदे सचै नाइ पिआरिआ ॥
सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्हा विटहु हउ वारिआ ॥५॥ *(पन्ना १२८०)*

६) इस पउड़ी में सतिगुरु उपदेश देते हैं कि सदा उस करता पुरख को याद करना चाहिए जो क्षण भर में सारी सृष्टि का निर्माण करने तथा उसको ध्वस्त करने वाला है। जिस पर वह प्रभु कृपा करे उसको अपने उपदेश द्वारा अकाल पुरख की स्तुति के भंडार बख्शता है और उस सच्ची दरगाह में उस मनुष्य के कर्मों का हिसाब सम्मान के साथ निपट जाता है :

सो हरि सदा सरेवीऐ जिसु करत न लागै वार ॥
आडाणे आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ . . .
मनमुख अगै लेखा मंगीऐ बहुती होवै मार ॥
गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ . . . ॥६॥ *(पन्ना १२८०-८१)*

७) इस पउड़ी में यह उपदेश दिया है कि वही जीव जगत में नजर आ रहे अंधकार और अत्याचार में सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे जो अकाल पुरख के चरणों के साथ प्रीति लगाये रखेंगे तथा इस संसार में कमल के फूल की भांति निर्लेप रहेंगे। मैं उन पर बलिहार जाता हूं:

हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहे लिव लाइ ॥
जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ . . . ॥७॥ *(पन्ना १२८१)*

८) इस पउड़ी में गुरु साहिब उस करता पुरख की अनंतता का वर्णन करते हैं। उन्होंने परमेश्वर को अतुल्य बढ़ाई वाला बताया है। उसके गुणों की विचार करने से वह हरि सर्वव्यापक रूप में दृश्टव्य हो जाता है। जो जीव गुरु की मति द्वारा जागे हुए हैं वे अपना घर भाव जीवन विकारों से बचा कर रखते हैं :

अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ . . .
गुरमती जागे तिन्ही घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥ *(पन्ना १२८२)*

९) इस पउड़ी में पातशाह संसार के अस्तित्व में आने से पहले की स्थिति वर्णन करते हैं कि जब यह सृष्टि अस्तित्व में नहीं आई थी उस समय कोई भूख, प्यास और काम आदि विकार नहीं थे, परंतु संसार के अस्तित्व में आते ही यह सब कुछ उत्पन्न हो गया। बड़े-बड़े नाथ, जती, योगी भी यह नहीं समझ सके कि यह सभी खेल परमेश्वर ने स्वयं ही पैदा किया है और इससे बचाने वाला भी वह स्वयं ही है, परमात्मा के हुक्म के बिना कुछ प्राप्त नहीं हो सकता। जिस जीव को परमेश्वर ने गुरु द्वारा शबद-कला को समझाया है उसको ज्ञान हो गया है तथा वही इस अग्नि से बचे रहते हैं :

नाथ जती सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ . . .
जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ . . .
अगनि उपाई वादु भूख तिहाइआ ॥
दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥

रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥९॥
(पन्ना १२८२)

१०) इस पउड़ी में यह उपदेश है कि सभी कर्म वह परमेश्वर स्वयं ही कराता है और स्वयं ही हिसाब मांगता है; उसके हुक्म के बिना कुछ नहीं हो सकता। वह अपनी स्वेच्छा से दातें देने वाला है, फिर अन्य किसी और के आगे रोने की जरूरत नहीं, उस देनहार परमात्मा के आगे ही अरदास करनी बनती है :

आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥
आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥ . . .
नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहारु ॥१०॥
(पन्ना १२८२-८३)

११) इस पउड़ी में फरमान है कि समस्त जगत का रचयिता वेपरवाह मालिक, वो परमेश्वर स्वयं ही है। वह प्रभु सच्चा तथा सदा स्थिर रहने वाला है। शेष समस्त सृष्टि आवागमन की प्रतीक है। जो जीव सिमरन करते हैं उनका संसार में आना सफल है। नाम रूपी एक कण असंख्य पापों को काट देता है :

सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥
तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ . .
आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ . . .
कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥११॥
(पन्ना १२८३)

१२) इस पउड़ी में गुरु साहिब फरमान करते हैं कि हे प्रभु! सृष्टि के कई भाग हैं जिनकी गणना नहीं की जा सकती। तूने चौरासी लाख योनियों के जीव पैदा किये। कई पातशाह कहलवाते हैं और कई भिखारी हैं। राज्य, धन-संपदा आदि का गर्व करने वाले नाम के बिना रासधारियों के समान हैं। अंत में वे भटकते हैं क्योंकि झूठ मर जाता है। अंत में वह सच्चा वाहिगुरु जो करता है वही होता है:

खंड पताल असंख मै गणत न होई ॥ . . .
लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ . . .
इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥
इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥
विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥
कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥१२॥
(पन्ना १२८३)

१३) तेरहवीं पउड़ी की वीचार इस प्रकार है कि जो मनुष्य मायावश होकर अवगुण कमाते हैं वे दरगाह में जलील होते हैं, वे जूए में मनुष्य-जन्म हार जाते हैं और उनका संसार पर आना व्यर्थ है। गुरमुख गुरु-शबद की वीचार के द्वारा तीनों गुणों की वीचार में न पड़कर नाम की कमाई में लगे रहते हैं, परंतु नाम के साथ वही जुड़ सकते हैं जिनको तू बख्श कर स्वयं जोड़ ले:

गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ . . .
जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचारु ॥१३॥
(पन्ना १२८४)

१४) इस पउड़ी में सिद्धांत यह है कि नाम भुलाकर बेमुख हुए जीव देखने को तो मनुष्य लगते हैं परंतु भीतर से पशु हैं। वे स्वयं-उन्मुख झूठे मनुष्य भूतनों की भांति फिरते हैं। शबद द्वारा यह ज्ञान मिलता है कि वह सच्चा हरि सर्वव्यापक है। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि हे भाई! पूरे सतिगुरों ने यह दिखा दिया है कि नाम ही सभी सुखों का खजाना है:

मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥
पसू माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ . . .
नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥१४॥
(पन्ना १२८४)

१५) पंद्रहवीं पउड़ी में यह फरमान है कि जंगलों में जाकर बैठने, मौन धार लेने, शरीर पर ठंड

सहन करने, पानी में बैठ कर तपस्या करने, तन पर राख मलाने, जटें बढ़ा लेने, धूणियां रमा लेने से वह सच्चा सतिगुरु खुश नहीं होता। जो उस मालिक को स्मरण करते हैं उनका इस संसार पर आना सफल है तथा प्रभु मालिक के द्वार पर वही शोभा प्राप्त करते हैं:

इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥
इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥
इकि भसम चढ़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ . .
विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥
सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥१५॥

(पन्ना १२८४-८५)

१६) जैन मत वाले भूले बैठे हैं परमेश्वर को, वे भूले हुए ही आये हैं। वे नाम जपने की जगह अपने बालों को खींचते, मैले-कुचैले रहते हैं। वे मन करके जूठे रहते हैं। वे भ्रम में भूले होने के कारण सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि यह मनुष्य-जन्म का सही रास्ता नहीं है :

इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ . . .
हथी सिर खोहाइ न भदु कराइआ ॥
कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ . .
बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥१६॥

(पन्ना १२८५)

१७) इस पउड़ी में साहिब फरमान करते हैं कि राग, नाद, व्रत, रास आदि सभी हठ-कर्म व्यर्थ हैं। इनसे प्रभु की प्राप्ति नहीं होती। गुरु के सम्मुख रहने वाला जीव परमेश्वर की भक्ति तथा प्यार के साथ भीगता है तथा इसी के साथ ही आत्मिक शांति की प्राप्ति होती है:

सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥
इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥
इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥
इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥
हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥१७॥

(पन्ना १२८५)

१८) इस पउड़ी का संक्षिप्त सार यह है कि परमेश्वर गुरु के द्वारा मिलता है। पूरे गुरु के शबद के द्वारा अंदर बस रहे प्रभु-तीर्थ पर स्नान करने से मन पापों से स्वच्छ होकर सच्चे प्रभु का ध्यान कर सकता है तथा उसी का इस संसार पर आना सफल है :

पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ . . .
हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥
सबदि मरै मनु मारि धंनु जणेदी माइआ ॥१८॥

(पन्न १२८६)

१९) इस पउड़ी में साहिब फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर सबसे बड़ा है। वह सबका मालिक है। वह दाता है तथा उसके सामने सब भिखारी हैं। वह प्रभु प्रेमा-भक्ति पर रीझता अथवा खुश होता है तथा भक्ति परमात्मा की कृपा के साथ ही हो सकती है। जो जीव हरि की सेवा में जुटे रहते हैं उनको ही सुखों की प्राप्ति होती है:

अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥
तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ . . .
गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥
तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥१९॥

(पन्ना १२८६)

२०) गुरु के बिना सारा संसार बांवरा हुआ फिरता है, हरि के बगैर दूसरों के साथ भाव माया-मोह के साथ मन लगाकर जलील हो रहा है। जो जीव अपनी मर्जी छोड़कर गुरु से परमेश्वर की रजा में रहने की युक्ति सीख लेता है उसको ही आत्मिक सुखों की प्राप्ति होती है:

बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ . .
दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस नो किरपा करे

रजाई ॥२०॥ *(पन्ना १२८७)*

२१) इस पउड़ी में सच के साथ सांझ डालने का उपदेश देते हुए सतिगुरु फरमान करते हैं कि जो जीव गुरु के हुक्म में चलते हैं उनको सच्ची जीवन-युक्ति का पता चलता है। वह गुरु ही संसार-सागर से पार कराने के सक्षम है। जो सच में लीन होकर सच्ची कमाई करते हैं वे रब्बी दरगाह में सम्मान प्राप्त करते हैं :

लिखिआ पलै पाइ सो सचु जाणीऐ ॥ . . .
गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥२१॥
(पन्न १२८८)

२२) यह पउड़ी रब्बी भय तथा भाउ के सिद्धांत को दृढ़ करने का संदेश देने वाली है। इस पउड़ी में बताया गया है कि संसार के भय के कारण जीव भटकता है तथा भटकाव के कारण वह प्रभु-चरणों के साथ नहीं जुड़ सकता। यही कारण है कि मनुष्य तृष्णा की अग्नि में जलता रहता है। रब्बी भय को मन में बसा लेने से मुक्त-द्वार ढूंढ लिया जाता है तथा मन सहज मनोस्थिति में आ जाता है। गुरु-मति पर चलने से भाव गुरु के भय के साथ संसार-सागर से पार उतारा हो जाता है तथा यह रब्बी भय गुरु से ही प्राप्त होता है :

भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥
सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ . .
भै ते भैजलु लंघीऐ गुरमती वीचारु ॥ . . .
नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥२२॥ *(पन्ना १२८८)*

२३) जीवन-मार्ग में जीव की विद्वता भी सहायक नहीं हो सकती क्योंकि विद्वानों को भी हिसाब देना पड़ता है। 'नाम' के बिना समस्त झूठ का व्यापार है। वह प्रभु अपने हुक्म में ही जीवन तथा भोजन देता है। यह बात यकीनी है कि परमेश्वर के घर केवल 'नाम' ही श्रेष्ठ है तथा यह 'नाम' गुरु की शरण पड़ने से ही प्राप्त होता है:

पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥
विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ . . .
हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥२३॥
(पन्ना १२८८)

२४) इस पउड़ी में साहिब फरमान करते हैं कि उस सच्चे प्रभु का नाम ही जपना चाहिए, क्योंकि नाम के बिना अन्य चुस्ती-चालाकी की क्रियाएं सब झूठी हैं तथा अहंकार उत्पन्न करती हैं और जलती पर दुविधा का तेल डालती हैं, इसलिए हरि के हुक्म को बूझ कर, विद्वता के अहंकार को त्याग कर उस प्रभु की स्मृति में लीन हुआ जाए तभी आवागमन से मुक्ति मिल सकती है :

पढ़ीऐ नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥ . . .
सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइआ ॥
चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥
बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ . . .
नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥२४॥
(पन्ना १२८९)

२५) इस पउड़ी में फरमान है कि भगवे पहनावे को धारण करके देश-देशांतरों का रटन करने से प्रभु नहीं मिलता। गुरु का शबद बहुमूल्य रत्न के समान है जिसको परमेश्वर द्वारा दी रोशनी के साथ ही देखा जा सकता है। वह प्रभु सदा स्थिर अथवा कायम रहने वाला है जिसका दीदार गुरु-शबद के द्वारा ही हो सकता है :

इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥
देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइआ ॥
गुर का सबदु रतंनु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ . . .
इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा

भाइआ ॥२५॥ *(पन्ना १२९०)*

२६) छब्बीसवीं पउड़ी में साहिब फरमान करते हैं कि जीवों की अपनी-अपनी करनी अनुसार ही दुख-सुख प्राप्त होता है। तृष्णा की अग्नि संसार में धधक रही है। उसके अधीन ही जीव चोग चुग रहे हैं। होता वही है जो उस प्रभु को अच्छा लगता है। जिसको परमेश्वर के हुक्म से गुरु रूपी जहाज मिल जाता है वही पार उतर जाता है :

सिरि सिरि होइ निबेड़ु हुकमि चलाइआ ॥
तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइआ ॥ . . .
सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥
अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥
फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ . . . ॥२६॥
(पन्ना १२९०)

२७) अट्ठाईसवीं पउड़ी में यह दर्शाया है कि सारी रचना उस प्रभु की अपनी ही रची हुई है। वह जिससे चाहे नाम जपा सकता है। करतार हर जगह विद्यमान है परंतु जीव के भीतर के अज्ञान के भटकाव के कारण वो परमेश्वर का दीदार नहीं कर सकता। जिस पर वह स्वयं कृपा करे वह नाम के साथ जुड़ कर हरि में लीन हो जाता है :

तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ . .
जिसु क्रिपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥
तू करता पुरखु अगंमु है रविआ सभ ठाई ॥
जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥२८॥१॥सुधु *(पन्ना १२९१)*



लघु कथा

मां

एक मां के चार बेटे थे। मां को बेटों पर बड़ा गर्व था। उन्हें बढ़ते देख कर वो फूले नहीं समाती थी। मां खाना खिलाती, दूध पिलाती, नहलाती, खिलौने देती, पढ़ाती, दुलारती। वे भी मां से हमेशा चिपके रहते थे। एक पल मां को नहीं छोड़ते। चारों मां पर अपना पहला हक जताते। जब मां रोटी परोसती सब बच्चे चिल्ला-चिल्ला कर कहते :

पहला--पहले मुझे . . . मां मेरी है . . .
दूसरा--पहले मुझे . . . मां मेरी है . . .
तीसरा--पहले मुझे . . . मां मेरी है . . .
चौथा--पहले मुझे . . . मां मेरी है . . .

अब बच्चे बड़े हो गये। व्यवसाय करने लगे। घर-बार वाले हो गये। अपने को अत्यधिक व्यस्त बताते। मां से दूर भागते। अब जब मां को कभी-कभार किसी चीज की जरूरत पड़ती तो बेटे कहते :

पहला--मां तेरी है . . .
दूसरा--मां तेरी है . . .
तीसरा--मां तेरी है . . .
चौथा--मां तेरी है . . .



--डॉ लीला मोदी, २९१, मोती स्मृति, टिपटा, कोटा (राजस्थान)। मो: ९६३६९२२६०४

'सिध गोसटि' बाणी का विषय-वस्तु

*-बीबा सरबजीत कौर**

श्री गुरु नानक देव जी एक संत, महापुरुष एवं सिक्खों के प्रथम गुरु हुए हैं, जिन्होंने अपनी अलाही बाणी से न सिर्फ सामंतवादी युग की पीड़ित जनता के हृदय को सुखद अहसास करवाया, बल्कि बाबर जैसे अत्याचारी विदेशी हमलावर को अपनी बाणी में *"पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ"* कहकर दुतकारा और भारतवासियों में वीरता का जज्बा पैदा करने की जोरदार कोशिश की। इसी प्रकार 'सिध गोसटि' बाणी श्री गुरु नानक देव जी की उच्च-कोटि की कला-कृति के साथ दार्शनिकता, सदाचारक एवं उच्चतम मनुष्य के चरित्र-निर्माण के आत्म-चिंतन की प्रेरणा वाली महानतम बाणी है। इस बाणी में गुरु जी की सिधों के साथ हुई गोष्ठि में हुए सवालों-जवाबों को काव्यात्मक शैली में उच्चतम कल्पना-शक्ति के गुणों के साथ प्रस्तुत किया गया है। मध्यकालीन भारत की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का अवलोकन करके यह तथ्य सामने आता है कि वह युग चारों ओर से विसंगतियों, सामाजिक बुराइयों, धार्मिक आडंबरों एवं राजनीतिक दुराचारों का युग था। एक तरफ कट्टर मुस्लिम हमलावर भारतवर्ष पर राज्य स्थापित करके निर्दोश जनता पर अत्याचार कर रहे थे, तो दूसरी ओर भारतीय समाज में हिंदू सामंतवाद, वर्ण-आधारित समाज व अनेकों कुरीतियों का आडंबर रचाकर जनता को भ्रमित कर रहे थे। जातिवाद भारतीय सामाज की नींव को खोखला कर रहा था और ढोंगी एवं अत्याचारी 'साधु' भारत की गरीब जनता को रिद्धियों-सिद्धियों के डरावे देकर सामाजिक बुराइयों को पनपने की राह दे रहे थे, जिसे देखकर गुरु नानक साहिब ने भारतवर्ष का भ्रमण किया।

विद्वानों का विचार है कि गुरु नानक साहिब ने यह बाणी अपनी तीसरी उदासी के बाद करतारपुर से कुछ दूरी पर स्थित, जहां योगियों का बड़ा डेरा था, वहां हुई गोष्ठि के बाद रची थी। गुरु नानक साहिब ने विश्व-भ्रमण के दौरान अनेकों सामाजिक विसंगतियों की आलोचना करके न सिर्फ उन्हें दूर करने की कोशिश की बल्कि अत्याचारी शासकों के खिलाफ आवाज भी उठाई। समाज की ऐसी शोषणहारी एवं अत्याचारी अवस्था में गुरु नानक साहिब के विचार मौलिक एवं समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुए, क्योंकि उनकी विचारधारा नवीन थी जो जातिवाद और धार्मिक कर्मकांडों के विपरीत वैज्ञानिक, तर्कशील दृष्टि से समाज के नव-निर्माण के लिए सहायक भी थी। गुरु नानक साहिब का मुख्य उद्देश्य समाज में नवीनता के लिए सहायक सिद्ध हुआ। अब हम अपनी चर्चा को सीमित करते हुए उनकी बाणी 'सिध गोसटि' के ऊपर विचार केंद्रित करते हैं।

'सिध गोसटि' बाणी का आधार गुरु नानक साहिब की सिधों के साथ हुई गोष्ठि (विचार-विमर्श) है। इसकी कुल ७३ पउड़ियां हैं। इसमें आये विचारों को गुरु जी ने पउड़ियों के माध्यम से एक श्रृंखला में बांधा है। गुरु

**पुत्री स. महिंगा सिंघ, गांव-डाक : खस्ता मीरां जी, तह: इस्माइलाबाद, जिला कुरूक्षेत्र (हरियाणा)*

नानक साहिब फरमाते हैं कि सिध-योगी सभा लगाए बैठे हैं और धार्मिक विषय पर विचार-चर्चा हो रही है :

सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥
(पन्ना ९३८)

इसकी बाद की पंक्तियों में गुरु नानक साहिब परमात्मा की स्तुति करते हुए उन्हें नमस्कार करते हैं :

तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥
मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥
नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥
किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥
साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥ (पन्ना ९३८)

गुरु नानक साहिब 'सिध गोसटि' बाणी का आरंभ ही इस विचार से करते हैं कि एक मनुष्य की सामाजिक अगुवाई एक सच्चे महापुरुष या गुरु के बिना नहीं हो सकती। सत्य की पहचान से स्वाभाविक ही परमात्मा का मिलन संभव है। इन पंक्तियों का केंद्रीय विचार यही है कि जंगलों में भटकने से या घोर शारीरिक कष्ट उठाने से हमें सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। परमात्मा की प्राप्ति के लिए हमें उसके नाम को हृदय में बसाकर अपने अंदर के विकारों को मिटाना होगा, तभी हमें सत्य की प्राप्ति हो सकती है। इसी प्रकार इसके बाद की पंक्तियों में भी गुरु नानक साहिब सिधों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए अनेकों अंधविश्वासों का खंडन करते हैं। जिन पंक्तियों को 'सिध गोसटि' बाणी की मूल केंद्रीय विचारधारा कहा जा सकता है वे गुरु नानक साहिब चरपट नाथ योगी के प्रश्न के उत्तर में इस प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥
रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥
अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥
(पन्ना ९३८)

इन पंक्तियों में हमारे समाज के विकास एवं उच्चतम मनुष्य के चरित्र-निर्माण की सारी चेतना विद्यमान है। अगर हम इन पंक्तियों को महान मनुष्य की अंतःचेतना का मार्गदर्शन कह कर पुकारें तो कोई अतिकथनी नहीं होगी। जो मनुष्य संसार में रहता हुआ भी एकांत का आनंद उठा सकता है, जिंदगी की आशाओं का भरपूर आनंद लेता हुआ भी अंदर से निरलेप रह सकता है और हमेशा परमात्मा की याद में लीन रहता है, वही उस सच्चे परमात्मा के दर्शन करके अन्य लोगों को सच्चे मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। इससे आगे की पंक्तियों में गुरु जी ने एक सेहतमंद समाज के निर्माण के लिए उच्च मनुष्य के चरित्र-निर्माण के लिए धार्मिक आडंबरों का त्याग करने की प्रेरणा दी है। योगी 'लोहरीया' के प्रश्न का उत्तर गुरु जी ने इस प्रकार दिया :

दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥
बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥
इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥
नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ॥
अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥
कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सुसमझ परी ॥
खिंथा झोली भरपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ॥
साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥ (पन्ना ९३९)

इन पंक्तियों में गुरु नानक साहिब ने

मनुष्य को आत्मिक विकास का सही मार्ग बताते हुए 'सिध गोसटि' बाणी में तत्कालीन समाज की दूसरी सबसे बड़ी समस्या को प्रस्तुत किया है। इसमें गुरु नानक साहिब योग में पैदा हुए धार्मिक आडंबरों का जोरदार खंडन करते हैं। योग मत में प्रचलित १२ फिरकों में वैचारिक मतभेद भी गुरु जी को व्यर्थ लगते हैं। असल में हर एक प्राणी उस एक ही परमात्मा की संतान है और एकता के सिद्धांत को वही प्राणी समझ सकता है जो मन में लगातार परमात्मा का नाम बसाये रखता है। इस प्रकार गुरु नानक साहिब सिधों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उनकी अनेकों सामाजिक बुराइयों एवं धार्मिक कर्मकांडों का निवारण करते हैं। इसी प्रकार इस बाणी की अगली पंक्तियों में गुरु नानक साहिब बुरे विचारों को त्यागने की प्रेरणा देते हुए सच्चे गुरु की महिमा का गुणगान करते हैं:

दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥
मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥
सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥
नानक हउमै मेटि समाइ ॥ *(पन्ना ९३९)*

असल में यहां गुरु जी अपने समकालीन समाज में भूली-भटकी जनता को ज्ञान के प्रकाश में अग्रसर करने के लिए एवं बुरे विचारों के त्याग के लिए सच्चे गुरु से मार्गदर्शन की जरूरत पर बल देते हैं। सच्चा गुरु ही मनुष्य की सामाजिक एवं आध्यात्मिक प्रगति का आधार होता है जिससे अहंकार एवं अन्य मानसिक विकारों से छुटकारा पाया जा सकता है। फिर जब सिधों ने गुरु जी से प्रश्न पूछा कि आप जी ने भी तो घर का त्याग किया है, तो गुरु जी ने उत्तर दिया :

गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥
दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ *(पन्ना ९३९)*

भावार्थ यह है कि हमने गुरमुखों भाव समाज के सूझवान पुरुषों को पैदा करने के लिए एवं अपने विचारों से समाज की उत्पत्ति के लिए घर का त्याग किया। फिर सिधों ने सृष्टि-रचना के बारे में प्रश्न पूछे तो गुरु जी ने *"आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले"* कहकर चुप करवा दिया। गुरु जी ने 'ब्राह्मण साधना' के बारे में उठाये गये प्रश्नों के उत्तर में कहा:

सुंन निरंतरि दीजै बंधु ॥
उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥
सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥
नानक साचे भावै साचा ॥ *(पन्ना ९३९)*

यह प्रश्न सुंन-समाधि, प्राणायाम, नाड़ी चक्कर आदि आडंबरों से परमात्मा की प्राप्ति से संबंधित थे, जिसमें गुरु नानक साहिब ने इन सबसे सदाचारक एवं आत्मिक साधना को उचित बताया। अपने इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए गुरु जी भारतीय इतिहास एवं मिथिहास के हवाले देते हुए कहते हैं :

गुरमुखि बांधिओ सेतु बिधातै ॥
लंका लूटी दैत संतापै ॥
रामचंदि मारिओ अहि रावणु ॥
भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥
गुरमुखि साइरि पाहण तारे ॥
गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥ *(पन्ना ९४२)*

गुरु जी श्री रामचंद्र जी की लंका में हुई विजय का उदाहरण देते हुए विचार प्रकट करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार श्री रामचंद्र जी ने पुल बनवाया था और अहंकारी रावण का अभिमान तोड़कर उन्हें मार गिराया था उसी प्रकार परमात्मा ने नाम रूपी पुल का निर्माण करके अहंकार को मारने का मार्ग बताया है। गुरु की कृपा से तेंतीस करोड़ अर्थात् अनगिनत लोगों का उद्धार हो चुका है।

गुरु जी ने यहां 'शबद' अर्थात् 'प्रभु के नाम-सिमरन' की महिमा का गुणगान करते हुए

कहा है कि 'शबद' के उच्चारण से हम चंद्रमा जैसे अपार शीतलता रूपी ज्ञान को अपने मन में बसा सकते हैं। अगर हमारी आत्मा में ज्ञान का प्रकाश विद्यमान हो तो हमें जीवन में दुख और सुख एक जैसे ही लगते हैं। ऐसी अवस्था में पहुंचे मनुष्य परमात्मा में विलीन हो जाते हैं और परमात्मा उनकी सहायता खुद करते हैं। ऐसी अवस्था में पहुंचने के लिए उचित मार्गदर्शन एवं सच्चे गुरु की आवश्यकता होती है और मनुष्य के मन से मौत का भय खत्म हो जाता है। इसके बाद योगी गुरु जी से सवाल करते हैं कि वो कौन-सी अवस्था है जहां पर बुरे विचारों का आवागमन समाप्त हो जाता है, तो गुरु जी उत्तर देते हैं कि सतिगुरु के मेल के साथ ही ऐसी अवस्था समाप्त हो जाती है। मनमर्जी करने वाले मनुष्य मानसिक विकारों से ग्रस्त होते हैं। जो मनुष्य गुरु का आदेश मानकर अहंकार की समाप्ति कर लेता है उसे प्रभु के दरबार एवं जगत में मान प्राप्त होता है।

इस प्रकार गुरु नानक साहिब जी द्वारा प्रभु-प्राप्ति के लिए मानसिक विकारों के त्याग के साथ सच्चे प्रभु को मनुष्य की सामाजिक अगुवाई का आधार बनाया गया है। 'सिध गोसटि' की अंतिम पंक्तियों में गुरु नानक साहिब ने परमात्मा की अनंतता एवं सर्वव्यापक हस्ती का वर्णन किया है। परमात्मा सारी सृष्टि का पालनहार है और सारी लोकाई उस अपरंपार परमात्मा की संतान है :

तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥
तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥
साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥
मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥
अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥
नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥ *(पन्ना ९४६)*

इस प्रकार गुरु जी ने परमात्मा की सर्वशक्तिमान हस्ती का उल्लेख किया है, जो हमें सब प्रकार के धार्मिक आडंबरों से ऊंचा उठकर बिना किसी भेदभाव के प्रभु-प्रेम में विलीन होना सिखाती है।

'सिध गोसटि' बाणी की उपरोक्त चर्चा के बाद हम इसे निःसंदेह ही आत्मिक-ज्ञान का पुनर्निर्माण मान सकते हैं, क्योंकि यह हमें अपने अंदर के विकारों से उठकर निरंतर मानवता के कल्याण के सेहतमंद समाज के नव-निर्माण का उपदेश देती है। आज भी समाज में अंधविश्वास एवं भ्रष्टाचार का बोलबाला है, जो हमारे समाज की नींव को खोखला कर रहा है। जातिवाद, भाषावाद एवं क्षेत्रीयवाद मानवता को हमेशा शर्मसार ही करते आये हैं। विश्व स्तर पर नस्लवाद की समस्या के अमानवीय पक्ष हमें निरंतर दुखित करते हैं। हमारा यह उत्तरदायित्व बनता है कि हम आपसी विचार-विमर्श के जरिये 'सिध गोसटि' बाणी की सर्वकालीन एवं विश्वव्यापी विचारधारा को उच्च मनुष्य-चरित्र विकास से जोड़कर प्रस्तुत करें, ताकि एक सेहतमंद एवं सर्वगुण संपन्न समाज का निर्माण हो सके।

सहायक पुस्तकें :

१. "सिध गोसटि : इक सरवपक्खी अधिऐन", (भूमिका), डॉ. हरबंस सिंघ
२. "सिध गोसटि : इक सरवपक्खी अधिऐन", डॉ. मोहन सिंघ रतन



गुरु नानक साहिब की बाणी 'माझ की वार' का विषय-वस्तु

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्यता को पापों की दलदल से निकालने के लिए जिस मानवता की बात बाणी 'माझ की वार' में कही है वो आज भी उतनी ही भावपूर्ण है जितनी उस समय थी।

श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से पहले कई धर्म थे। उन धर्मों के उपदेश थे कि जो लोग उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलेंगे, प्रभु की दरगाह में चित्रगुप्त, जिस रहबर, देवी-देवता, जिसकी उन्होंने पूजा की है, उनसे सिफारिश करेगा। उनके अनुसार मरने के बाद स्वर्ग या बहिश्त मिलेगा। यदि उनके आदेशों का उल्लंघन करेगा तो उनको दोजख या नरक की आग में जलना पड़ेगा। उस समय कर्मकांडों और पाखंडों का बोलबाला था। प्राय: लोग घर को त्याग कर जंगलों में जाकर भटकते थे। उस समय की जो दशा थी उसका वर्णन श्री गुरु नानक देव जी ने किया और सवाल किया कि इस कलयुगी स्वभाव में से जीव का किस प्रकार छुटकारा हो?

समाज : श्री गुरु नानक देव जी के आगमन के समय समाज जात-पात के बंधनों में बंधा हुआ था। सभी दूसरों का हक छीन रहे थे। कलयुग कैंची की तरह बन गया था। राजे कसाई बन गए थे, धर्म पंख लगाकर कहीं उड़ गया था, झूठ अमावस की काली रात की तरह हुंकारता था, सच का चंद्रमा कहीं भी दिखाई नहीं देता था। हर तरफ झूठ का बोलबाला था। श्री गुरु नानक देव जी उच्चारण करते हैं कि इस सच रूपी चंद्रमा को खोजते-खोजते व्याकुल हो गया हूं। इस गहन अंधेरे में रास्ता नहीं दिखाई देता। अहम की भावना के कारण दुखों में फंसी प्रजा रो रही है। इससे छुटकारा कैसे मिले?

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ *(पन्ना १४५)*

बाणी 'माझ की वार' श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की गई है जो कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना १३७ से १५० तक सुशोभित है। 'माझ की वार' पउड़ियों का संग्रह है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ तैयार करते समय ४६ श्लोक श्री गुरु अरजन देव जी ने 'माझ की वार' के साथ मिलाकर बाणी दर्ज करवाई। वार की सत्ताईस पउड़ियां हैं। हर पउड़ी की आठ-आठ पंक्तियां हैं। १४ पउड़ियां ऐसी हैं जिनके साथ श्री गुरु नानक देव जी के २९ श्लोक हैं। श्री गुरु अंगद देव जी के १२ श्लोक, श्री गुरु अमरदास जी के ३ तथा श्री गुरु रामदास जी के २ श्लोक हैं।

मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ *(पन्ना १३७)*

'मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा' दो राजपूत सरदार अकबर के दरबार में थे। मुरीद खां मलक जाति का तथा चंद्रहड़ा सोही जाति का था। दोनों का आपसी मनमुटाव था। एक बार अकबर ने मुरीद खां को काबुल की मुहिम पर भेजा। उसने अपने शत्रु पर विजय पा ली, पर राज-प्रबंध में देर हो गई। चंद्रहड़े ने बादशाह

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना। मो: ९८८८१-२६६९०*

के पास शिकायत की कि मुरीद खां बागी हो गया है, अत: मलक के विरुद्ध फौज देकर उसे भेजा गया। दोनों ही युद्ध करते हुए मारे गए। ढाढियों ने इस युद्ध की वार गाई। यह वार देश में प्रचलित हुई। श्री गुरु अरजन देव जी ने ऊपर लिखा शीर्षक देकर आज्ञा दी कि श्री गुरु नानक देव जी की बाणी 'माझ की वार' उसी धुन (सुर) में गानी है जिसमें मुरीद खां वाली गाई जाती है।

मनुष्य के जीवन की अवस्था : मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक की अवस्था तथा क्रिया-कलाप श्री गुरु नानक देव जी का निम्न श्लोक दर्शाता है:

"मनुष्य रूपी जीव दस वर्ष का जीव बचपन में होता है, बीस वर्ष का होकर काम-चेष्टा की अवस्था में पहुंचता है, तीस वर्ष का सुंदर कहलाता है, चालीस साल में भरपूर यौवन, पचास तक आते-आते पांव जवानी से नीचे की ओर सरकने लगता है, साठ वर्ष में बुढ़ापा आ जाता है, सत्तर वर्ष का जीवन अक्ल की दृष्टि से कमजोर होने लगता है, अस्सी वर्ष का काम करने लायक नहीं रहता, नब्बे साल का चारपाई से नहीं हिल सकता, अपना आप नहीं संभाल पाता। मैंने यह देखा है कि यह जगत सफेद पलस्तरी मंदिर है, एक छलावा है, जो देखने में सुंदर लगता है पर है धूएं (अस्थिर) का।" श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के अनुसार :

दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥
चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥
सतरि का मतिहीणु असीहां का विउहारु न पावै ॥
नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥
ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥ *(पन्ना १३८)*

गुरु जी की शिक्षानुसार गृहस्थ-जीवन : कई मनुष्य कंद-मूल खाकर जंगलों में भटकते हुए अपना निर्वाह करते हैं, कई भगवा वेष बना जोगी-सन्यासी बनकर घूमते हैं, पर उनके मन में लालच होता है, कपड़े और भोजन की लालसा में घिरे रहते हैं, अपने जन्म को व्यर्थ ही गंवा देते हैं। ऐसे व्यक्ति न तो गृहस्थी और न ही फकीर बन पाते हैं। उन्हें मृत्यु का भय सदा सताता रहता है। जब मनुष्य प्रभु का सेवक बन जाता है और गुरु के निर्मल उपदेशों का पालन करता है तो फिर मौत का भय उनके पास नहीं आता। गुरु का उपदेश मन में बसा होने के कारण वह गृहस्थ में रहता हुआ भी त्यागी है। गुरु नानक साहिब उपदेश देते हैं:

इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥
इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥
अंदरि त्रिसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥
बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥
(पन्ना १४०)

जन्म-मौत का वरतारा परमात्मा की रजा में: प्रभु ने आप ही जगत पैदा करके आप ही इसको चलाने वाला है। मोह-ममता के अधिक प्रभाव में संसार प्रभु की याद से दूर हो गया है। जगत के अंदर तृष्णा की आग जल रही है। इस प्रकार जीव जन्म-मृत्यु के चक्कर में पड़ा रहता है। माया का मोह गुरु की शरण के बिना नहीं छूटता :

तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥
मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ *(पन्ना १३८)*

दुख-सुख : श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य को समझाते हुए कहते हैं कि दुख को देखकर भागना और हमेशा ही सुख की कामना करते रहने से मानव सदा दुखी रहता है। दुख और सुख तो कपड़ों की तरह हैं। दुख और सुख सब पर आते हैं। जब मनुष्य दुख को भी परमात्मा की देन समझ कर सह लेता है और कोई शिकायत

नहीं करता तो उसको दुख, दुख नहीं लगता :
सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥
(पन्ना १४९)

झूठ से बचो : जो मनुष्य झूठ बोलकर स्वयं दूसरों का हक छीनता है और दूसरों को उपदेश देता है कि झूठ मत बोलो, ऐसे व्यक्ति का अंत ऐसा होता है कि वह स्वयं तो डूबता ही है अपने साथी को भी ले डूबता है :

कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥
अवरी नो समझावणि जाइ ॥ (पन्ना १३९-४०)

पराया हक खाने से बचो : पराया हक मुसलमानों के लिए सूअर और हिंदुओं के लिए गाय खाने के समान है। गुरु, पीर-पैगंबर मनुष्य की तभी सिफारिश करता है यदि मनुष्य पराया हक न छीने। केवल बातों से ही बहिश्त में नहीं जाया जा सकता। सच को असली जीवन में अपनाने से ही मानव को नजात मिल सकती है। बहस आदि बातों के मसाले हराम के माल में डालने से हक का माल नहीं बन जाते। झूठी बातों से झूठ ही मिलता है:

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥
गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥
मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥
नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥ (पन्ना १४१)

प्रभु को सभी महीनों, ऋतुओं, हर पल, घड़ी, स्थान, मुहूर्त में याद किया जा सकता है। प्रभु का सिमरन करने के लिए किसी भी प्रकार की कोई रोक नहीं है। तिथि आदि का लेखा-जोखा करके प्रभु को पाना ऐसा ज्ञानी, विद्वान मूर्ख कहलाता है, क्योंकि उसके अंदर लोभ है, अहंकार है :

पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥
(पन्ना १४०)

सतिगुरु की महिमा : प्रभु जिस पर दयालु होते हैं उसकी सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं और संसार के सभी दुख प्राप्त हो जाते हैं। सतिगुरु की कृपा से ही मनुष्य को परमात्मा पर पूरा भरोसा हो जाता है। किसी भी प्रकार के दुख, पीड़ा आदि के आने पर कभी उलाहना नहीं देता, दुख में दुखी नहीं होता बल्कि परमात्मा के भाणे में ही खुश रहता है। दुख-क्लेश तो दूर, उसे मौत का भी डर नहीं रहता। जिस पर प्रभु की कृपा हो जाए उसे मानो संसार की नौ निद्धियां-अट्ठारह सिद्धियां प्राप्त हो गई हों, क्योंकि वह तो समस्त खजाने के मालिक सच्चे प्रभु से जुड़ा हुआ है। सतिगुरु जी का फरमान है :

सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥
सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥
(पन्ना १४९)

समूचा भाव : यह विभिन्न रूप-रंगों वाला माया-जाल-रूपी संसार परमात्मा की रचना है और परमात्मा का ही रूप है, पर जीव इसके मोह-जाल में तृष्णा के अधीन होकर परमात्मा को भूल कर असलियत से दूर हो जाता है और दुखी रहता है। इस अग्नि-जाल से बचने के लिए न तो विद्या, न ही धन-दौलत, न ही ऊंची जाति, न ही जंगल में रहकर शरीर को कष्ट देना सहायता कर सकता है। सांसारिक भोग-विलास की वस्तुओं के मोह में लिप्त होने के कारण अहं की भावना से भरा रहना केवल मूर्खता है, यह मनुष्य को पागल बना देता है और मनुष्य के आत्मिक जीवन को नष्ट कर देता है। इस अहंकार की भावना से पैदा हुई आशाओं के कारण मनुष्य देने वाले 'दाता' को भूल जाता है। गुरु की शरण में जाने से ही

(शेष पृष्ठ ७७ पर)

गुरु नानक साहिब की बाणी में तत्कालीन राजनैतिक अराजकता का विरोध

*–स. बिक्रमजीत सिंघ**

गुरु नानक साहिब की बाणी में अंकित निम्न चार शबदों :

१. खुरासान खसमाना कीआ हिंदोसतान डराइआ ॥
(पन्ना ३६०)

२. जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
(पन्ना ४१७)

३. कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥
(पन्ना ४१७-१८)

४. जैसी मै आवै खसम की बाणी . . . ॥
(पन्ना ७२२)

का संबंध बाबर (समकालीन मुगल बादशाह) की तरफ से हिंदोस्तान पर किये हमलों के साथ है, जिनमें हिंदोस्तानियों की हुई बर्बादी और कत्लोगारत को बयान किया गया है और यह बताया गया है कि इन सभी हालातों का असल जिम्मेदार कौन है?

इस लेख में हम इन चार शबदों के राजनीतिक और आध्यात्मिक पक्ष का अध्ययन करेंगे।

सबसे पहले हमें यह जानना जरूरी है कि उपरोक्त चार शबद न तो एक सूत्र में दर्ज हुए हैं और न ही एक राग में हैं, परन्तु इसके बावजूद भी कुछ विद्वानों के अनुसार इस शबद-समूह को 'बाबर के जुल्मों के खिलाफ उच्चरित बाणी' कह कर पुकारा जाता है जो कि उचित नहीं माना जा सकता। कुछ लोग इसे 'बाबर-बाणी' कहते हैं, क्योंकि गुरु नानक साहिब ने इन चार शबदों में से एक शबद में खुद 'बाबर बाणी' शबद का प्रयोग किया है। यह शबद 'राग आसा' में है :

बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥
(पन्ना ४१७)

जिसका अर्थ है कि 'जुल्म का दौर', 'बाबर का हुक्म' अथवा उसका 'अधिकार' अर्थात् जब बाबर का राज्य हिंदोस्तान में फैल गया और बाबर ने जब हिंदोस्तान पर कब्जा कर लिया तो किसी भी व्यक्ति को रोटी तक नसीब न हुई। इस तरह यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह बाबर बादशाह के जुल्मों का मुंहतोड़ जवाब देती हुए गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चरित बाणी है जो गुरु जी को अकाल पुरख से प्राप्त हुई है। इस बाबत गुरु जी फरमाते हैं:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ *(पन्ना ७२२)*

अब अगर हम इन चार शबदों के समूह के नामकरण की समस्या को एक तरफ कर दें तो एक बात यकीन से कही जा सकती है कि गुरु नानक साहिब ने समकालीन सामाजिक हालातों और बाबर के हमले का जिस शिद्धत और हिम्मत से जो चित्रण किया है, इस तरह का जिक्र किसी हिंदोस्तानी समकालीन अथवा पूर्वकालीन भक्ति-काव्य में नहीं मिलता। किसी घटना का ऐसा वास्तविक जिक्र किसी भी कवि या धर्म-पुरुष ने नहीं किया।

'जन्म-साखी साहित्य' के अनुसार बाबर ने हिंदोस्तान पर जब हमला किया उस समय गुरु

**S/o S. Ranjeet Singh, 2946/7 Bazar Loharan, Chowk Lashmansar, Sri Amritsar (Pb.)*

नानक साहिब ऐमनाबाद में भाई लालो जी के घर ठहरे हुए थे। गुरु जी ने अपनी आंखों से हिंदोस्तान में लोधी सलतनत का पतन और मुगल साम्राज्य की स्थापना होती देखी। इस समूचे राज्य-पलट में स्थानीय जनता को जो कष्ट, दुख और पीड़ा सहनी पड़ी उसके बारे में गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी में राजनीतिक और आध्यात्मिक पक्ष से पूरी संवेदना और शिद्धत से लिखा है।

अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर हिंदोस्तान में यह सब क्यों और कैसे हुआ? हिंदोस्तानियों की इस त्रासदी का जिम्मेदार कौन था? बाबर का इन सबके साथ क्या संबंध था जिसके बारे में गुरु नानक साहिब को भी इस समूचे घटनाक्रम का जिक्र करना पड़ा? यहां पर गुरु नानक साहिब की बाणी में चार शबदों का संबंध बाबर के हिंदोस्तान पर हुए चार हमलों से है, इसलिये इस पर विचार करने से पहले हमें संक्षेप में बाबर के बारे में जान लेना आवश्यक होगा।

बाबर १४ फरवरी १४८३ ई को पैदा हुआ और १२ वर्ष की आयु में अपने पिता उमर शेख की मृत्यु के बाद 'फरगना' का बादशाह बना। बाबर की मां चंगेज खान के वंश (१४वीं पीढ़ी) में से थी और बाबर का पिता तैमूर की अंश में से पांचवीं पीढ़ी की तुर्की नस्ल का मुसलमान था। इस तरह बाबर मंगोल और तुर्कों के मिश्रित खून की पैदाइश थी। उसमें मंगोल जाति के वहिशीपन और तुर्कों की दलेरी के गुण थे। १५०४ ई में बाबर काबुल का बादशाह भी बन गया और १५११-१२ तक वह अपने राज्य की सीमा को बढ़ाता हुआ खुरासान का मालिक भी बन गया। जब बाबर १५०४ को काबुल पर कब्जा कर चुका था तो उसी समय से उसके मन में हिंदोस्तान पर विजय हासिल करने का विचार बैठ गया था। इसके बारे में बाबर अपने एक बयान में स्पष्ट करता है कि "१५०४ से जब मैंने काबुल का राज्य प्राप्त किया है, तब से लेकर अब (१५२६) तक मैंने हिंदोस्तान को जीतने का विचार कभी नहीं त्यागा था।"

इस बात से यह मालूम होता है कि बाबर शुरू से ही हिंदोस्तान को जीतने की तमन्ना रखता था, इसलिये वह १५०४ ई से ही इधर (हिंदोस्तान) आने की तैयारियां कर रहा था।

गुरु नानक साहिब का काल १४६९ ई से लेकर १५३९ ई तक का था। गुरु नानक साहिब के जन्म के समय भारत में बहलोल लोधी का राज्य था जो १४८९ ई तक रहा। फिर १४८९ ई से लेकर १५१७ ई तक सिकंदर लोधी का राज्य था। १५१७ ई से लेकर १५२६ ई तक इब्राहिम लोधी बादशाह था। इसी समय बाबर ने हमले किये और आखिर १५२६ ई को इब्राहिम लोधी को पानीपत की जंग में मार कर खुद भारत (हिंदोस्तान) पर कब्जा कर लिया। इस तरह बाबर के हमलों से जो देश की हालत हुई, जो बर्बादी हुई, सब कुछ गुरु नानक साहिब ने अपनी आंखों से देखा, लोगों की चीख-पुकार अपने कानों से सुनी।

राग तिलंग में इस समूची दहशत और दर्दनाक स्थिति का बयान करते हुए गुरु नानक साहिब बता रहे हैं कि जिस तरह का ज्ञान उनको हो रहा है, जो हालात वे देख रहे हैं उसी तरह बयान करता हूं:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ *(पन्ना ७२२)*

उपरोक्त पंक्तियों में गुरु जी फरमा रहे हैं

कि बाबर जालिमों की फौज (बारात) लेकर काबुल से चल कर यहां आ गया है और वह हिंदोस्तान के शासकों को मार कर अपनी ताकत के जोर के साथ उनसे नजराने ले रहा है, सभी तरफ खून ही खून बह रहा है।

इन चार शबदों में बाबर के हमलों के दौरान व्यापक स्तर पर शहरियों की जान-माल की बर्बादी हुई। इस दुर्दशा को बहुत ही मार्मिक तरीके से बयान किया गया है। गुरु जी ने कहा कि बहुमूल्य रत्न जैसे देश को मुगलों ने बर्बाद कर दिया है :

रतन विगाड़ि विगोए कूंती मुइआ सार न काई ॥ *(पन्ना ३६०)*

हमलों के दौरान लोगों के घर-घाट, पूजा-स्थल भी जला दिये गये, अमीर शहजादों को मौत के घाट उतार दिया और उनके सर मिट्टी में मिला दिये गए। मुगलों ने जो तबाही मचाई और जो कत्लेआम किया उसे गुरु नानक साहिब जी ने *"मास पुरी विचि आखु मसोला"* और *"खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥"* के शब्दों से अभिव्यक्त किया है। गुरु नानक साहिब ने यहां यह बताया है कि काजी, ब्राह्मण, सबकी भले पुरुषों वाली मर्यादा समाप्त हो चुकी है। हर तरफ शैतानियत और हैवानियत ही है :

काजीआ बामणा की गल थकी
अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ *(पन्ना ७२२)*

बाबर के हमले ने ऐसा आतंक फैलाया है कि लोगों को डर के कारण खाना-पीना भी भूल गया।

इन चार शबदों के समूह में उपरोक्त बातें हमले के दौरान हुए विनाश की दर्दनाक स्थिति बयान करती हैं। इन शबदों का आंतरिक भाव असल में यह है कि गुरु नानक साहिब साम्राज्य व राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिये शुरू की गई ऐसी जंग के हिमायती नहीं थे। गुरु नानक साहिब की नजरों में अगर कोई शक्तिशाली किसी दूसरे शक्तिशाली को मारे तो मन में रोष नहीं:

जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥ *(पन्ना ३६०)*

परंतु अगर एक ताकतवर भेड़िया (बाबर) गायों (आम लोग-प्रजा) के झुंड पर हमला करे तो उनकी रक्षा करनी मालिक की जिम्मेदारी होती है अर्थात् मुगल सैनिकों के हाथों से जो हिंदोस्तानियों की दशा हुई इसके लिये सीधे तौर पर लोधी शासक जिम्मेदार था, क्योंकि हमलावर से प्रजा को बचाना शासक का कर्त्तव्य होता है:

सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥
(पन्ना ३६०)

इसके अलावा गुरु जी के अनुसार जंग के दौरान निहत्थे व बेगुनाह लोगों पर हमला करना मानवी मूल्यों का उल्लंघन ही नहीं बल्कि अनैतिकता का प्रगटावा है।

अगर गुरु नानक साहिब के इन चार शबदों के समूह के भीतर राजनीतिक पक्ष को और गहराई से देखा जाए तो इस बात का पता चलता है कि गुरु साहिब ने एक जागरूक राजनीतिक शख्सियत की तरह देश को बाहरी संकट से बचाने के लिए लोधी शासकों के अधूरे प्रबंध पर भी उंगली उठाई है, क्योंकि लोधी शासक जंग के समय पुरोहित वर्ग की सेवाएं प्राप्त करते थे, ताकि उनके जादू-मंत्रों द्वारा दुश्मन को हराया जा सके। ऐसे स्रोतों की निरर्थकता बयान करते हुए गुरु जी बताते हैं कि मीर बाबर के हमले को रोकने के लिए किसी भी पीर-फकीर का मंत्र कारगर साबित नहीं हुआ। इस बाबत गुरु जी फरमाते हैं :

कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥ *(पन्ना ४१७)*

गुरु साहिब के अनुसार इस संकट से निकला जा सकता था अगर इस बारे में पहले से कोई रणनीति तैयार की होती। लोधी शासकों का इखलाकी पतन, चरित्रहीन होना तथा विकारमयी जीवन उनकी पराजय का कारण बना:

साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥
(पन्ना ४१७)

उपरोक्त कारणों में बाबर के अपने साम्राज्य को बढ़ाने और लोधी शासकों का गैर-कूटनीतिक जंग में अपने जौहर न दिखाना, गरीब, मजलूम जनता का मरना इत्यादि बुरे राजनीतिक सुरक्षा प्रबंधों तथा शासकों की कमजोरियों पर गहरी चोट है।

इन सब समकालीन सामाजिक हालातों का चित्रण गुरु नानक साहिब द्वारा केवल इतिहास बताना नहीं बल्कि यह बताना है कि असल में बुरे हालात कब पैदा होते हैं और इन सबके लिये जिम्मेदार कौन है। इसकी चर्चा हम इन शबदों के आध्यात्मिक पक्ष में करेंगे।

आध्यात्मिक पक्ष

मुगलों के हमलों से हिंदोस्तान में जो राजनीतिक बदलाव आया उसे गुरु नानक साहिब ने ब्रह्मांड की योजना की एक कड़ी बताया है। इतिहास के घटनाक्रम में चाहे कोई न कोई कारण जरूर होता है परन्तु गुरु साहिब के मुताबिक यह कारण परमात्मा खुद है। परमात्मा इतिहास में दखल-अंदाजी करता है, परन्तु इसके लिए वह साधन मनुष्य को ही बनाता है। यहां बाबर परमात्मा का सृजक पात्र है जो यम-रूप होकर हमला करता है और चला जाता है :

. . . जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ (पन्ना ३६०)

परमात्मा की नजरों में उसकी अस्ति एक कीड़े के बराबर है जो केवल दाना खाता है और चला जाता है :

खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥
(पन्ना ३६०)

गुरु नानक साहिब के अनुसार जब परमात्मा ने किसी को बर्बाद करना होता है तो उसमें से अच्छे गुण गायब कर देता है, जैसे लोधी शासकों के हुये :

जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥ (पन्ना ४१७)

परमात्मा बर्बादी का दोष अपने सर पर नहीं लेता बल्कि किसी मौत-रूप दूत के जरिए यह कार्य करता है:

आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ (पन्ना ३६०)

संसार में परमात्मा की इच्छा के अनुसार सब कुछ होता है। मनुष्य के हाथ में कुछ भी नहीं। दुख एवं सुख उसका एक खेल है:

दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥
(पन्ना ४१७)

जोड़ना और तोड़ना उसके बढ़प्पन का बर्ताव है। पल में ही बड़ी-बड़ी बादशाहत नाश हो जाती है :

आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥
(पन्ना ३६०)

ऐसे गुरु साहिब ने इतिहास को परमात्मा के हुक्म अनुसार बनता दिखाया है। गुरु साहिब के अनुसार बाबर कोई अंतिम हमलावर नहीं। जो लोग प्रभु का सिमरन नहीं करेंगे अथवा शुभ काम नहीं करेंगे उन लोगों को सजा देने के लिए परमात्मा किसी और (मर्द के चेले) की सृजना कर सकता है। वे लोग जो परमात्मा को याद नहीं करते उन्हें वह अपनी याद दिलवा सकता है।

इस शबद-समूह की बाणी का असल में

विषय-वस्तु यही है कि जो लोग चाहे किसी भी जाति के हों, परमात्मा के नाम को धन की बहुतात में, जवानी और सुंदरता के अहंकार में भूल जाते हैं (जैसे लोधी शासक परमात्मा को भूल चुके थे)। परमात्मा उन लोगों को दंड जरूर देता है और अपने नाम की याद दिलाता है। प्रभु जो कुछ भी कर रहा है उसका अंत कोई भी नहीं पा सकता। वह खुद ही अनेक प्रकार के नजारे बना कर खुद ही उनको देखता है:

आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ
करि करि देखहि वेस ॥ *(पन्ना ४१७)*

गुरु नानक साहिब के मुताबिक परमात्मा के हुक्म के समक्ष मनुष्य की कोई पेश नहीं जा सकती। हुक्म का मालिक प्रभु समूची सृष्टि को अपने हुक्म अनुसार चला कर प्रसन्न होता है और मनुष्य अपने किये कर्मों के अनुसार लिखा ही भोगता है।

मनुष्य धन, जवानी और सुंदरता के साथ मोहित हो जाता है। धन का लालच मनुष्य को इस सीमा तक ले जाता है कि वह अपनी खुद की जरूरत पूरी करने के लिए ज्यादा धन इकट्ठा करना चाहता है, लेकिन धन और यौवन का बहुतात में मोह मनुष्य का नाश करता है:

धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥
(पन्ना ४१७)

मनुष्य जो दुख अथवा सजा का भागीदार बनता है उसका मूल कारण यही है कि वह समय रहते पहले से ही विवेक बुद्धि से कार्य नहीं करता। वह धन और यौवन के नशे में प्रभु और उसके रास्ते को त्याग देता है। अगर कोई मनुष्य अथवा कौम आने वाले समय के बारे में पहले से ही सोच-विचार करे और अपने फर्ज को पहचाने तो आने वाले समय में मुसीबतों का सामना नहीं करना पड़ता :

अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥
(पन्ना ४१७)

गुरु साहिब फरमाते हैं कि इस धन-दौलत की खातिर बहुत-से लोग तबाह हुए हैं। इस धन-दौलत की बड़ी बात यही है कि यह पाप किये बिना इकट्ठी नहीं होती और मरने के बाद मनुष्य के साथ नहीं जाती।

इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४४१)

सार रूप में हम यह कह सकते हैं कि गुरु नानक साहिब के उच्चारण किये इन चार शबदों के समूह, जिनमें समकालीन राजनीतिक साम्राज्य के कारणों का आध्यात्मीकरण किया गया है, में गुरु जी ने यह बताया है कि हर एक मनुष्य को उसके किये कर्मों का फल मिलता है। परमात्मा के समक्ष बाबर तो क्या किसी भी मनुष्य की कोई अस्ति नहीं, परमात्मा के किये का अंत नहीं। जो मनुष्य धन-दौलत के नशे में फंस कर रह जाते हैं वे भविष्य में आने वाली समस्याओं से बचने के लिए विवेक बुद्धि से काम लें। परमात्मा हर काम अपनी मर्जी के अनुसार करता है और अनेक ही रचनाओं को खत्म करने और दोबारा बनाने की अत्यंत शक्ति रखता है।

सहायक पुस्तकें :

1. Erskine : A History of under first two soveriegns of the House of Taimur : Babar and Hamayun, Vol. I, Longman, 1854
2. Hymns of Guru Nanak, Language Deptt. Punjab, India.
३. बाबरबाणी दा इतिहासक विषलेशण (पंजाबी): डॉ. सुखदिआल सिंघ, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, अमृतसर।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में मानवीय अधिकारों (राजनीतिक) का निरूपण

*-डॉ. रणजीत जीवन कौर**

मानवीय अधिकार मनुष्य को प्रकृति द्वारा प्रदत्त वे अधिकार हैं जिनके अभाव में वह मनुष्योचित जीवन नहीं जी सकता। वस्तुत: मानवीय अधिकार वो आधारभूत स्वतंत्रता है जो मनुष्य को उसकी सम्पूर्ण क्षमताओं, विशेषताओं और चेतना को प्रफुल्लित करने में सहायक होती है। मानवीय अधिकार वास्तव में वे अधिकार हैं जो मनुष्य को मात्र मनुष्य होने के कारण ही प्राप्त होते हैं, भले उसकी नागरिकता, राष्ट्रीयता, नस्ल, क्षेत्रीयता, भाषा, लिंग, योग्यता आदि कुछ भी हो। संयुक्त शष्ट्र संघ ने मानवीय अधिकारों से संबंधित एक विश्वव्यापी घोषणा-पत्र जारी किया है जिसके ३० अनुच्छेदों में सभी संभव मानवीय अधिकारों को सूचीबद्ध किया गया है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विश्वव्यापी घोषणा-पत्र में दर्ज समस्त मानवीय अधिकारों के सम्बंध में बड़ी ही स्पष्ट धारणाएं मौजूद हैं। दरअसल मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए गुरु साहिबान ने बड़ी बुलंद और असरदायक आवाज उठाई थी। गुरु साहिबान की मानवीय अधिकारों के प्रति दृष्टि बड़ी ठोस, स्पष्ट और विलक्षण है। गुरु साहिबान मानवीय समता और स्वतंत्रता के पक्ष में बड़ी निडरता से खड़े दिखाई देते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब ने मानवीय अधिकारों को उनकी संपूर्णता और समग्रता में स्वीकार किया है। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, न्यायिक . . . आदि जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जिससे सम्बंधित मानवीय अधिकारों की चर्चा गुरबाणी में न की गई हो। इस आलेख में हम राजनीतिक मानवीय अधिकारों को चर्चा के विषय के रूप में लिया जा रहा है।

प्रथम पातशाह की बाणी में राजनीतिक मानवीय अधिकार : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राजनीति एवं राजनीतिक मुद्दों से सम्बंधित चेतना बड़ी स्पष्ट एवं मुखर है। यहां भी गुरु नानक साहिब की बाणी में यह जागरूकता बड़ी महत्वपूर्ण एवं उच्च स्तर की है। मध्य काल के संत साहित्य में आम तौर पर संतों ने अपने राजनीतिक दृष्टिकोण का चित्रण नहीं किया है, परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब और विशेष कर प्रथम पातशाह की बाणी में तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था सम्बंधी अत्यंत महत्वपूर्ण टिप्पणियां प्राप्त होती हैं।

वास्तव में गुरबाणी में एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था सम्बंधी ठोस विचारधारा मिलती है। प्रथम पातशाह के चिंतन से आरंभ हुई यह विचार-शृंखला श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के 'मीरी' के संकल्प से शक्ति प्राप्त करती हुई दशमेश पिता तक पहुंच कर संपूर्ण स्वरूप धारण करती है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रफुल्लित हुआ राजनीतिक चिंतन लोकतांत्रिक एवं लोक-कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है। इस राज्य को गुरबाणी में 'बेगम पुरा' एवं 'हलेमी राज' की अवधारणा के रूप में स्थापित किया गया है। इस संकल्प का आधार गुरु नानक साहिब की ही राजनीतिक चेतना है।

राजनीतिक शोषण का विरोध : गुरु साहिबान का काल सामंतवादी राज्य-व्यवस्था का काल

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब।*

था। राजा या बादशाह सारी भूमि का स्वामी होता था जो अपने सामंतों एवं जागीरदारों के माध्यम से भूमि की व्यवस्था करवाता था। प्रजा कृषि-सम्बंधी वस्तुओं का उत्पादन करती थी। सामंत एवं जागीरदार उत्पादन का एक निश्चित भाग एकत्र कर राजा या बादशाह तक पहुंचाते थे। राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था और उसे असीमित अधिकार प्राप्त थे। इन असीमित अधिकारों ने राजाओं को दंभी, अहंकारी और निरंकुश बना दिया था। वे अपनी शक्तियों का दुरुपयोग प्रजा का शोषण करने और उस पर अत्याचार करने के लिए करते थे। गुरु नानक साहिब इस भयानक हालत का वर्णन करते हुए कथन करते हैं :

राजे सीह मुकदम कुते ॥
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (पन्ना १२८८)

यहां गुरु साहिब ने राज्य-व्यवस्था के अत्याचारी रूप की सख्त प्रताड़ना की है। गुरु जी का स्पष्ट आशय है कि किसी भी मनुष्य पर किसी भी रूप में राजनीतिक अत्याचार नहीं होना चाहिए। मनुष्य को किसी राज-प्रबंध में खुशहाल, शांतमयी एवं सुरक्षित जीवन जीने का हक है, परंतु राजा-श्रेणी कसाइयों की भांति अत्याचारी एवं बेरहम हो गई है :

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥
हउ भालि विकुंनी होई ॥
आधेरै राहु न कोई ॥ (पन्ना १४५)

गुरु नानक साहिब ने राजनीतिक शोषण एवं अत्याचार की जड़ पर चोट की है। आप फरमाते हैं कि राजाओं की लोभ-भोग से भरी प्रवृत्ति ने उन्हें कर्त्तव्यों से विमुख कर रखा है और उनसे अनगिनत पातक करवाती है। इस संदर्भ में गुरु जी ने समाज में व्याप्त लोभ, लालच और काम-वासना को प्रकट करने के लिए 'राज-व्यवस्था' के प्रतीकों का प्रयोग किया है:

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥
कामु नेबु सदि पूछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥
(पन्ना ४६८)

अर्थात् लोभ और पाप आज राजा बन बैठे हैं और झूठ उनका चौधरी है। काम इनके दरबार का नायब है जिसके साथ बैठ-बैठ कर ये सलाह-मशविरा करते हैं।

गुरु नानक साहिब ने राजा-वर्ग की निरंकुशता का विरोध ऐसे समय में किया जब 'राजाओं के दैवीय अधिकार' का सिद्धांत प्रचलित था। इस सिद्धांत का सार यह था कि राजा अपनी सत्ता सीधे ईश्वर से प्राप्त करता है। वह अपनी प्रजा और कानून से ऊपर है। राजा कानून बनाता है, कानून राजा नहीं बनाता। राजा सिर्फ ईश्वर या अपनी आत्मा के अधीन है। प्रजा के प्रति उसकी कोई वैधानिक जिम्मेदारी नहीं। यदि राजा बुरा भी है तो प्रजा को उसके खिलाफ बगावत करने का कोई हक नहीं है। राजा के विरुद्ध बगावत ईश्वर के विरुद्ध बगावत है। प्रजा के पापों के कारण जब ईश्वर ने उन्हें सजा देनी होती है तो वह उन पर अत्याचारी राजा बैठा देता है।

ऐसे माहौल में, जब राजाओं के प्रति ऐसी धारणाएं प्रचलित थीं तब गुरु नानक साहिब ने राजाओं की शोषक एवं अत्याचारी प्रवृत्ति पर कठोर शब्दों से चोट की। यह साबित करता है कि गुरु जी आम जनता के राजनीतिक मानवीय हकों के संदर्भ में कितने जागरूक एवं चेतन थे। यही नहीं, गुरु जी उनके राजनीतिक अधिकारों के कितने ही बड़े पैरोकार और समर्थक भी थे।

राजनीतिक अत्याचारों का विरोध : राजाओं

द्वारा निर्दोष जनता पर किये जा रहे अत्याचारों का मुखर विरोध गुरबाणी में मिलता है। इस संदर्भ में सबसे तीखी और जबरदस्त मिसालें गुरु नानक साहिब द्वारा तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था के विरुद्ध उठाई आवाज में रचित बाणी में मिलती हैं। इस बाणी में बाबर के हमले और उसके फलस्वरूप हुई तबाही का वर्णन है। बाणी के मात्र चार शबदों में हमले के समय के विनाश और संताप को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। गुरु साहिब फरमाते हैं:

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ . . . (पन्ना ७२२)

गुरु नानक साहिब ने बाबर की फौज को 'पाप की बारात' कहा है, जिसने सारे 'सरम-धरम' नष्ट कर डाले हैं। जो लोग आनंद से जीवन व्यतीत करते थे वे अब सिर मुंडवाये बैठे हैं और उनके सिर पर धूल पड़ रही है :

जिन सिरि सोहनि पटीआ मांगी पाइ संधूरु ॥
से सिर काती मुंनीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥
(पन्ना ४१७)

गुरु जी ने बाबर के अत्याचारों का बड़ा मुखर और जबरदस्त विरोध किया है :

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥
(पन्ना ३६०)

घटिया राज-प्रबंध : राजाओं की बदइखलाकी

गुरु नानक साहिब ने राजाओं की नैतिक गिरावट को घटिया राज-प्रबंध के लिए जिम्मेदार माना। बाणी में गुरु साहिब ने स्थानीय राजाओं की बाबर से पराजय का कारण उनकी भोगवादी प्रवृत्ति एवं ऐशप्रस्ती को माना है:

अगो दे जे चेतीऐ तां काइतु मिलै सजाइ ॥
साहां सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥
(पन्ना ४१७)

गुरु जी के अनुसार राजाओं की भोग-प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई है कि वे कर्त्तव्यहीन होकर राज्य-प्रबंध के कर्त्तव्यों को भूल गये हैं। हर तरफ अन्याय पसरा हुआ है। राजा लालची और स्वार्थी हो गये हैं तथा कोई भी काम रिश्वत मिले बिना नहीं करते :

दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥
लए दिते विणु रहै न कोइ ॥
राजा निआउ करे हथि होइ ॥
कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥ (पन्ना ३५०)

श्रेष्ठ राज-प्रबंध : सियासत पर इखलाक का नियंत्रण : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उस राज्य को श्रेष्ठ माना गया है जहां इंसाफ और सत्य का शासन हो, लोक निर्भय हों और लोक-मत का सम्मान किया जाता हो। गुरबाणी में सदाचार पर आधारित राज्य को ही उत्तम कहा गया है। राजनीति पर सदाचार का नियंत्रण यहां अनिवार्य माना गया है।

गुरु नानक साहिब जी का स्पष्ट फरमान है कि जो राजा लोक-राय का निरादर करते हैं वे भविष्य में मुसीबतें झेलते हैं :

हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥
(पन्ना ४७०-७१)

आदर्श राजा : श्रेष्ठ राज-प्रबंध इस बात पर निर्भर करता है कि राजा स्वयं कैसा है। गुरबाणी में आदर्श राजा के कर्त्तव्यों के सम्बंध में स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं। प्रथम पातशाह का कथन है कि राजाओं को अपनी बदनीयतें त्याग कर जन-सेवक बनकर सदा विनम्रता से रहना चाहिए:

सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥
गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥

बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥
(पन्ना ७२१)

गुरबाणी में 'अकाल पुरख' को प्रतीक रूप में आदर्श राजा वर्णन किया गया है। गुरु नानक साहिब फरमाते हैं कि अकाल पुरख सारी सृष्टि का राजा है और वह सबके काम संवारता है। इसी तरह यह संकेत है कि राजा को भी निरालम रहते हुए लोक-सेवा करनी चाहिए :

तू एकंकारु निरालमु राजा ॥
तू आपि सवारहि जन के काजा ॥
(पन्ना १०३९)

राजनीतिक खुदमुखतारी की अवधारणा :

राजनीतिक खुदमुखतारी का अर्थ राज-प्रबंध में सीधे तौर पर हिस्सा लेना है। राज-प्रबंध सम्बंधी निर्णयों में जनता के विचारों और उनकी राय को पूरा-पूरा सम्मान देना इस राजनीतिक खुदमुखतारी का मूल आधार है। वर्तमान काल में दुनिया में बहु-देशों द्वारा अपनाई गई राज-व्यवस्था 'लोक-तंत्र' राजनीतिक खुदमुखतारी के सम्बंध में बेहतरीन व्यवस्था के रूप में जानी जाती है, जिसमें लोक (लोगों) को स्वयं राज-प्रबंध चुनने का अधिकार है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का राजनीति सम्बंधी दृष्टिकोण भी लोक-हित से प्रेरित राज्य-व्यवस्था वाला है। गुरबाणी के अनुसार राज्य-व्यवस्था में लोक-मत को पूरा सम्मान मिलना चाहिए और राज-प्रबंध में जनता की राय की पूरी दखलंदाजी होनी चाहिए। गुरु नानक साहिब का कथन है कि तख्त (गद्दी) पर वही गुणी राजा टिक पाता है जो लोक-मत के भय में रहकर उसके अनुसार चलता है:

राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥
(पन्ना ९९२)

इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में और विशेषकर प्रथम पातशाह गुरु नानक साहिब की बाणी में हर तरह के राजनीतिक शोषण एवं अत्याचारों का निषेध किया गया है और मनुष्य के राजनीतिक अधिकारों की पुरजोर पैरवी मौजूद है। गुरबाणी लोक-हितैषी राज्य-व्यवस्था की अवधारणा को पुष्ट करते हुए मनुष्य की राजनीतिक खुदमुखतारी का पक्ष लेती है।

. . . 'माझ की वार' का विषय-वस्तु

(पृष्ठ ६८ का शेष)

'मैं-मेरा' की भावना मिटती है, गुरु से 'नाम' मिलता है, प्रेम प्राप्त होता है, जो आत्मा का भोजन है। जैसे-जैसे जीव को ज्ञान प्राप्त होता है यह तृष्णा की आग बुझने लगती है, मौत का भय दूर होता है और परमात्मा ही सच्चा साथी प्रतीत होने लगता है। अत: प्रभु-दर पर सिफत-सलाह की ही याचना करनी चाहिए। ज्यों-ज्यों इस सिफत-सलाह से जुड़ते जाएंगे यह जीवन का आधार बन जायेगी। सांसारिक मान-सम्मान सब तुच्छ हैं, सिफत द्वारा सिफतों का मालिक स्वयं ही मिल जायेगा।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चारण की गई बाणी 'माझ की वार' मानवता के कल्याण के लिए है जो उसके लौकिक और पारलौकिक दोनों ही प्रकार के जीवन के लिए है। संसार में रहते हुए मनुष्य कैसी जीवन-शैली अपनाए, उसका आचार-व्यवहार कैसा हो, उसके लिए सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक या सभ्याचारक वातावरण कैसा हो जिसमें रहकर वह सभ्य मनुष्य बन सके और जीवन सफल कर सके। यही शिक्षा और दिशा बाणी 'माझ की वार' में मिलती है।

श्री गुरु नानक देव जी का 'आरती-दर्शन'

*-स. सतविंदर सिंघ**

'आरती' संस्कृत के शब्द 'आरात्रिक' का अपभ्रंश रूप है, जिसका भाव है देवता की मूर्ति अथवा किसी पूज्य हस्ती के आगे दीये घुमाकर पूजन करना।

हिंदू मतानुसार थाल में दीये जला कर चार बार मूर्ति के चरणों के आगे, दो बार नाभि के आगे, एक बार मुंह पर और सात बार सारे शरीर पर घुमाए जाते हैं।

मध्ययुगीन सर्गुण भक्तों में आरती उतारने की धारणा आम प्रचलित थी। वैष्णव, शैव और साकत अपने-अपने इष्ट देव की आरती उतारते थे। निर्गुण उपासक भक्तों ने इस दिखावे की आरती को व्यर्थ समझकर प्रभु का नाम-स्मरण करने को ही 'असल आरती' बताया है।

श्री गुरु नानक देव जी ने हिंदू धर्म में प्रचलित आरती के पुरातन संकल्प की जगह नवीन कद्रों-कीमतों वाली आरती का विधान पेश किया है।

श्री गुरु नानक देव जी अपनी प्रथम उदासी के दौरान आसाम, कछार, पूर्वी बंगाल और बर्मा की यात्रा करते हुए उड़ीसा प्रांत में स्थित हिंदुओं के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान जगन्नाथपुरी पहुंचे। आषाढ़ के महीने में वहां जगन्नाथ का भंडारा होता है और रथ-यात्रा निकाली जाती है। अंधविश्वास के कारण लोगों में यह धारणा थी कि रथ के पहियों के नीचे अपने आप को कुचलवाने वाले मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

गुरु जी लोगों को इस प्रकार के अंधविश्वासों से निजात दिलाने और सच्चे धर्म का उपदेश देने के उद्देश्य से जगन्नाथपुरी पहुंचे थे।

संध्या के समय मंदिर के पुजारियों ने गुरु जी को जगन्नाथ की 'आरती' में शामिल होने का आमंत्रण दिया। गुरु जी आमंत्रण स्वीकार करके आरती में शामिल हो गए। उन्होंने देखा कि पुजारी एक बहुत बड़े हीरे-जड़ित सोने के थाल में घी के दीये जला कर जगन्नाथ की मूर्ति के सामने दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे वृत्ताकार घुमाते हुए स्तुति के साथ आरती उतारने लगे। कुछ पुजारी मूर्ति पर चंवर करने और नगाड़े बजाने लगे। साथ-साथ मूर्ति पर पुष्प-वर्षा भी की जा रही थी।

'आरती' होते समय गुरु जी वहां से निकलकर विराट निर्गुण प्रभु के पैदा किये हुए अनंत सर्गुण पसारे द्वारा की जा रही 'आरती' में शामिल हो गए। मंदिर के पुजारियों ने गुरु जी को जगन्नाथ की आरती में शामिल न होने का उलाहना दिया।

गुरु जी ने कहा, "मैं तो सर्वत्र और सर्वव्यापक परमात्मा की सहज 'आरती' कर रहा था, आप लोग ही मेरी आरती में शामिल नहीं हुए।" पुजारियों ने कहा, "कृप्या हमें भी बताइए कि आप किस प्रकार की 'आरती' कर रहे थे?" गुरु जी ने परमात्मा की विराट 'आरती' का नियोजन करते हुए शबद 'आरती' को इस प्रकार गायन करना प्रारंभ किया :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने
तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे

**सहायक रीसर्च स्कालर, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शिरोमणि गु: प्र: कमेटी, श्री अमृतसर।*

सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥
कैसी आरती होइ भवखंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥रहाउ॥
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ
सहस मूरति नना एक तोही ॥
सह पद बिमल नन इक पद गंध बिनु
सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो
अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥
क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ
होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥ (पन्ना ६६३)

भावार्थ : "हे प्रभु! तुम्हारी विराट 'आरती' के निमित्त आकाश रूपी थाल में सूर्य एवं चंद्रमा दीपक बने हुए हैं और तारा-मंडल उस थाल में मोती के रूप में जड़े हैं। पर्वत को स्पर्श करके आने वाली सुगंधित वायु आरती की धूप है। वायु चंवर कर रही है। हे ज्योतिस्वरूप प्रभु! वनों में खिली समस्त वनस्पति और समस्त पुष्प आरती के लिये पुष्प बने हुए हैं। तुम्हारी 'आरती' कैसे हो सकती है? भवखंडन, अनाहद शबद, एक-रस ध्वनि, जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड एवं घट-घट में निरंतर बज रही है, मानो आरती में नगाड़े का कार्य कर रही है। हे प्रभु! समस्त जीवों में व्यापक होने के कारण तुम्हारे हजारों नेत्र हैं, मगर निराकार होने के कारण तुम्हारा कोई नेत्र नहीं। सर्गुण स्वरूप में हजारों तुम्हारी मूर्तियां (शक्लें) हैं, हजारों पवित्र चरण और नाक हैं, मगर निर्गुण स्वरूप में तुम्हारी कोई मूर्ति नहीं, कोई चरण नहीं, कोई नाक नहीं। तुम्हारा यह चमत्कारिक दृश्य देखकर मैं मोहित हो गया हूं। हे प्रभु! जो तुम्हें अच्छा लगता है वही वास्तविक 'आरती' है। सभी प्राणियों के भीतर ज्योतिस्वरूप परमात्मा की प्रचंड ज्योति प्रकाशित है। माया, मोह, लिप्सा के कारण यह ज्योति दबी रहती है। गुरु-कृपा से यह ज्योति प्रकट होती है। हरि के कमल रूपी चरणों में मेरा मन लोभी बना रहता है। मुझे प्रतिदिन तुम्हारे नाम की प्यास लगी रहती है।" गुरु नानक साहिब जी कहते हैं, "हे प्रभु! मुझ पपीहे को अपनी कृपा का जल दो, जिससे तुम्हारे 'नाम' में मेरा निवास हो जाए।"

इस शबद में गुरु नानक साहिब जी 'आरती' के उस स्वरूप का वर्णन करते हैं जिसमें निरंकार का पैदा किया हुआ असीम सर्गुण पसारा उसके अपने हुक्म में निरंतर आरती कर रहा है। यह उसके अपने पसारे अनंत खंडों-ब्रह्मंडों द्वारा की जा रही 'आरती' है। इस 'आरती' की सामग्री और इसका होना उस निरंकार की अपनी क्रिया है, किसी और की नहीं। निरंकार का सारा सर्गुण पसारा उसके हुक्म में अनंत बहु-पसारी 'आरती' निरंतर कर रहा है।

इस प्रकार गुरु जी ने प्रभु के निर्गुण और सर्गुण स्वरूप को चित्रित करते हुए दोनों की अभेदता को स्थापित करके विशाल ब्रह्मांड को अपनी रचना में समो लिया है।

गुरु जी कहते हैं कि उस विलक्षण कारीगर ने आकाश, सूर्य, चंद्रमा, नक्षत्रगण, पृथ्वी, वायु, ज्योति आदि का निर्माण किया है। उसी की आज्ञा से सब मर्यादा में स्थित है और अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। सभी जड़-चेतन के अंतर्गत उसी जगत-प्रकाशमान का प्रकाश भासित हो रहा है। ऐसे प्रभु की शक्ति और महिमा को भूलकर लोगों ने मूर्तियों को ही सब कुछ समझ रखा है। गुरु महाराज ने उन्हें बतलाया कि

(शेष पृष्ठ ८२ पर)

विश्व-बंधुत्व के अलंबरदार : श्री गुरु नानक देव जी

*-डॉ. मनजीत कौर**

सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी (१४६९-१५३९) एक महान आध्यात्मिक गुरु हुए हैं, जिनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था- परस्पर विरोधी सम्प्रदायों के बीच होने वाले संघर्षों का खात्मा करना जिनके चलते भारतीय समाज संत्रस्त था। जो मानवीय मूल्य विघटित हो रहे थे, उनको समाप्त कर परस्पर प्यार एवं सद्भाव कायम करना उनका जीवन-उद्देश्य था। उनका संदेश समस्त कर्मकाण्डों एवं रूढ़ियों से परे उस परम-विश्वास के मूल तक पहुंचना था जो परमात्म-विवेक का सार-तत्व है। यह एक ऐसा मार्ग है जो जीवन को उदात्त एवं सौहार्द वाला बना सके, जो दूसरे समस्त विश्वासों के प्रति सहिष्णु तथा दलितों के प्रति करुणापूर्ण बना रहे। इस सन्दर्भ में श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी आज भी प्रासंगिक है तथा भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

श्री गुरु नानक देव जी समन्वय एवं विश्व-बन्धुत्व के अलम्बरदार थे। विविध विद्वानों के चिन्तनानुसार गुरदेव की समन्वय साधना को कतिपय उदाहरणों द्वारा समझा जा सकता है। भाई संतोख सिंघ जी ने आप जी के 'नानक' नाम की महत्ता 'नानक प्रकाश' में इस प्रकार वर्णन की है—*'अनक रहित परमातम जोई। नानक नाम कहावै सोई।'* अर्थात् 'न' नहीं है जिसमें 'अनक' अर्थात् वह परमात्मा 'नानक' नाम कहलाता है। भाई गुरदास जी ने आप जी के अवतार धारण करने की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कितना सटीक लिखा है:

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ
मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ
तारे छपि अंधेरु पलोआ। (वार १:२७)

जॉन मैलकम अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ए स्कैच ऑफ दी सिक्खज़' में संकेत करते हैं— "ब्रह्मा तथा मुहम्मद के एकदम प्रतिकूल विश्वासों में समता प्रतिष्ठापित करने की उदात्त एवं परोपकारी भावना से प्रेरित होकर श्री गुरु नानक देव जी ने हिन्दुओं और मुसलमानों को अपने सिद्धांतों के झण्डे के नीचे इकट्ठे करने का सफल प्रयत्न किया। इस प्रयत्न में उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों के अपने-अपने विश्वासों एवं प्रथाओं के उन अंशों को छोड़ने के लिए प्रेरित किया, जिन्हें वे उनके पूजनीय इष्टों के प्रति अशोभनीय समझते थे।" डॉ. जयराम मिश्र के मतानुसार : "गुरु नानक साहिब सारे संसार के हितैषी एवं विश्व-बन्धु थे। उनकी यह प्रबल इच्छा थी कि सभी देशों के लोग समान रूप से सांसारिक अभ्युदय तथा परमार्थक उन्नति की प्राप्ति करें। सभी समान रूप के प्रेम-पूर्वक रहें, सब में पारस्परिक सौहार्द की भावना बढ़े।" डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के चिन्तनानुसार : "गुरु नानक देव जी सभी मानव-मात्र की सहज समानता में विश्वास रखते थे, चाहे वे किसी की जाति, धर्म या वर्ण से सम्बंध रखता हो।" श्री गुरु अरजन देव जी के शब्दों में श्री गुरु नानक देव जी अकाल पुरख की प्रतिमूर्ति है। डॉ. इकबाल के अनुसार वे 'मर्दे-कामिल' थे।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि श्री

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ मो: ०१४१-२६५०३७०

गुरु नानक देव जी महान सुमेलकारी संत हुए हैं उनका विरोध किसी धर्म, जाति या धर्म-ग्रंथ से नहीं था, अपितु समयानुसार उनमें प्रविष्ट हुई कुरीतियों तथा आडम्बरों से था तथा स्वार्थी, धर्मावलम्बियों के व्यवहारिक रूप से था, जो स्वार्थवश दंभ एवं पाखंड आदि से धर्मान्धता पैदा कर मानव-मानव के बीच वैमनस्य के बीज बो रहे थे।

इन समस्त कपटपूर्ण व्यवहारों एवं विचारों से ग्रसित मानवता को उभारने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने समन्वय-भाव को दृढ़ किया।

सम्पूर्ण सृष्टि को उस अकाल पुरख की रचना मानने वाले गुरदेव कण-कण में उसकी ज्योति के दीदार करते हुए फरमान करते हैं :

सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

साधारण मनुष्य के लिए हिन्दू तथा मुसलमान दो अलग-अलग धर्म थे, जो कभी एक नहीं हो सकते थे, लेकिन श्री गुरु नानक देव जी ने भ्रमित मानवता को समझाते हुए कहा कि द्वेष और घृणा को त्याग दें तो ये दोनों धर्म, आत्मा को ऊंचा उठाने के लिए केवल दो मार्ग हैं :

राह दोवै खसमु एको जाणु ॥
गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥
सगल रूप वरन मन माही ॥
कहु नानक एको सालाही ॥ (पन्ना २२३)

वस्तुत: जब कोई साधक सर्वशक्तिमान सत्ता का अनुभव कर उसी का प्रकाश सर्वत्र देखता है तो वैषम्य भावना एवं घृणा स्वयं तिरोहित हो जाती है। इस उच्चावस्था को प्राप्त हुआ व्यक्ति सबको भ्रातृ-भावना एवं प्रेम का संदेश देता है। ऐसा ही श्री गुरु नानक देव जी ने किया। सच्चा पंडित एवं सच्चा मुसलमान कहलवाने का कौन अधिकारी है, इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥
जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥
सील संतोख का रखै धरमु ॥
बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥
सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥ (पन्ना १४११)

अर्थात् सच्चा ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म (प्रभु) में लीन हो चुका है तथा जप, तप संयमशील कर्म करता हुआ, शील एवं संतोष रूपी धर्म को धारण करने वाला है। श्री गुरु नानक देव जी के चिन्तनानुसार जिसने लौकिक बंधनों को विनिष्ट कर दिया वही ब्राह्मण मेरे लिए पूजनीय है।

सच्चे मुसलमान की परिभाषा श्री गुरु नानक देव जी इस प्रकार करते हैं :

पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥
नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥
(पन्ना १४१)

अर्थात् मुसलमान के लिए पांच नमाजें हैं, पांच उन्हें अदा करने के समय तथा पांच ही उनके नाम हैं। सच्ची नमाज की व्याख्या करते हुए गुरदेव का फरमान है : सत्य बोलना पहली नमाज, मेहनत की कमाई दूसरी नमाज, खुदा से सबका भला मांगना तीसरी, मन व नीयत को साफ रखना चौथी नमाज तथा परमात्मा की स्तुति व यशोगान करना पांचवी नमाज है। इन पांचों के साथ जब उच्च आचरण का कलमा पढ़ा जाए तभी कोई स्वयं को सच्चा मुसलमान कहलवाने का अधिकारी है। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार इस तरह की नमाजों व कलमों से रहित जितने भी हैं वे झूठे हैं तथा झूठे की प्रतिष्ठा भी झूठी होती है। कहने का भाव है कि अगर करनी व कथनी में समन्वय न हो तो सब दिखावा है, ढोंग है, सब

व्यर्थ है।

करनी एवं कथनी की समानता पर जोर देते हुए गुरदेव का उपदेश है कि सच्चा हिंदू और सच्चा मुसलमान वही है जो जिस तरह के धार्मिक कार्य सम्पादित करता है वे समस्त कर्म हृदय से किए जाएं न कि केवल दिखावे हेतु। करनी व कथनी की समानता के बिना किए गए समस्त कार्य मात्र लोक-दिखावा ही होंगे, उनसे संस्कार निर्मित नहीं होंगे।

करनी व कथनी की समानता के साथ-साथ श्री गुरु नानक देव जी के चिन्तन की एक विलक्षणता स्त्री को पुरुष के समान दर्जा दिलवाने हेतु बुलंद आवाज में जो नारा दिया, उसकी बदौलत सिख समाज में आज भी नारी का गौरवमयी स्थान है। गुरदेव का कथन है:

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

(पन्ना ४७३)

अर्थात् संतों, पीरों, पैगंबरो राजाओं की जननी कैसे बुरी हो सकती है? यह स्त्री-पुरुष समन्वय का उद्घोष वाक्य था। समाज में समानता लाने हेतु श्री गुरु नानक देव जी ने पहले-पहल लंगर-प्रथा चलाई, जिसमें राजा-रंक, अमीर-गरीब, छोटा-बड़ा, स्त्री-पुरुष सभी वर्गों-धर्मों के लोग एक ही पंक्ति में बैठ कर लंगर छकते थे। इस तरह ऊंच-नीच के भेद को मिटा कर समता की ज्योति जलाने की साधना उनकी समन्वय साधना का ज्वलन्त उदाहरण है।

वस्तुत: श्री गुरु नानक देव जी एक महान समन्वय-साधक, चिन्तक थे, जिन्होंने समन्वय-साधना से युगों से प्रस्त एवं पीड़ित मानवता को एक नई दृष्टि प्रदान की। जीवन के प्रत्येक धरातल से मानव-शोषण का उन्मूलन कर दिग्भ्रमित मानवता को एकता के झण्डे के नीचे ला खड़ा करने की उनकी सत्ता-साधना उनकी समन्वयात्मक एवं उदार दृष्टि की जीती-जागती मिसाल है, तभी तो दोनों मजहबों के लोग उन्हें श्रद्धा एवं निष्ठापूर्वक 'गुरु' एवं 'पीर' मान कर सिजदा करते हैं। उनकी अद्वैत भावना एवं समन्वय-साधना को चित्रित करते ये शब्द कितने सार्थक प्रतीत होते हैं :

बाबा नानक शाह फकीर,
हिन्दू का गुरु मुसलमान का पीर।



श्री गुरु नानक देव जी का 'आरती-दर्शन'

(पृष्ठ ७९ का शेष)

आप लोग प्रेम और श्रद्धा से परमात्मा द्वारा निर्मित प्राणियों की सेवा कीजिए, सर्वनिर्माता परमात्मा का सदैव चिंतन कीजिए, यही जगन्नाथ की असल 'आरती' है। प्रभु के नाम के अतिरिक्त दिखावे की 'आरती' आदि आडंबर सब झूठे हैं।

इस बाणी में गुरु जी ने संगीत और लय का अद्भुत संयोग किया है। विचारों और भावों की गहराई के साथ-साथ संकुचित शैली और स्पष्ट अलंकारक भाषा का प्रयोग किया है।

श्री गुरु नानक देव जी का एक और शबद *"गगन मै थालु"* कुछ लग-मात्रा के भेद से पन्ना १३ पर 'सोहिला' बाणी में भी दर्ज है।

सिक्ख धर्म में 'आरती' को निरूपण करते *"गगन मै थालु"* शबद का उच्चारण किया जाता है। इस शबद के उच्चारण करने से एक अनंत निरंकार चेतंन प्रभु और उसके हुक्म द्वारा पैदा किया हुआ सारा सर्गुण पसारा मानव सुरति में प्रकट हो जाता है। मानव सुरति निरंकार की आरती करके अनंत खंडों-ब्रह्मंडों की ओर बहुत लंबी उड़ान भरने लगती है, ब्रह्म-चेतना विगस जाती है, सब में उसी की ज्योति समायी हुई महसूस होती है।



संगीत एवं अध्यात्म की अनोखी मिसाल : गुरमति संगीत

-डॉ. शकुंतला नागर, श्रीमती नीलू*

पंजाब भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं कलात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रदेश है। यहां की संस्कृति मानव को साहस और वीरता का पाठ पढ़ाने के साथ-साथ बुजुर्गों एवं प्राचीन परंपराओं को श्रद्धा एवं संरक्षण प्रदान करती है। पंजाब प्रदेश मुख्यत: सिक्ख धर्म का अनुयायी है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विभिन्न गुरु साहिबान तथा भक्त साहिबान की पवित्र बाणी, विचारों, संदेशों अथवा संकीर्तनों को सांगीतिक आधार पर लिपिबद्ध किया गया है। आदि गुरु श्री गुरु नानक साहिब से लेकर परवर्ती काल के लगभग सभी गुरु साहिबान की बाणी को यह पवित्र ग्रंथ आधार प्रदान करता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब राग व ताल आदि संगीत के सभी संस्कारों से युक्त है। संगीत की इसी परंपरा को हम 'गुरमति संगीत' के नाम से जानते हैं।

डॉ. गुरनाम सिंघ के अनुसार, "गुरमति संगीत शताब्दियों पुरातन सिक्ख धर्म की अद्वितीय संगीत परंपरा है, जिसे गुरु नानक साहिब जी से लेकर समस्त गुरु साहिबान ने मर्यादित स्वरूप में प्रचारित किया। गुरु नानक साहिब ने समाज को संगीत एवं संकीर्तनों के माध्यम से मानवता का पाठ पढ़ाया। आदि से अंत तक संगीत उनके जीवन का प्रमुख अंग रहा, क्योंकि यह परंपरा गुरु नानक साहिब से ही आरंभ होती है। अत: इस परंपरा में रागबद्ध संकीर्तनों का प्रचार होना स्वाभाविक ही है। गुरु नानक साहिब अपने साथ भाई मरदाना जी को लेकर संगीत एवं संकीर्तनों आदि के माध्यम से मानव की पीड़ाओं को हरने का कार्य करते थे। गुरु नानक साहिब ने समाज में संगीत और संकीर्तनों आदि का प्रचार करने के साथ-साथ उसके महत्व से भी लोगों को अवगत कराया।

गुरमति कीर्तन परंपरा को समृद्ध करने में रबाबियों का भी विशेष योगदान रहा है। गुरु-घर के प्रथम रबाबी भाई मरदाना जी ने जीवन-पर्यन्त लगभग ५८ वर्ष गुरु नानक साहिब के सानिध्य में कीर्तन की सेवा की। गुरु नानक साहिब की रचना शैली में काव्य का लालित्य, भावों का माधुर्य तथा विचारों की भव्यता आदि सभी गुण विद्यमान हैं। डॉ. गीता पैंतल के अनुसार, "गुरु नानक साहिब ने संकीर्तन एवं अपने विचारों के प्रचार के लिए आरंभ से संगीत का आधार लिया, बल्कि ऐसा कहा जा सकता है कि इन्होंने संगीत के पुनरुत्थान के लिए ही जन्म लिया था।"

ऐसा माना जाता है कि संगीत की विद्या इनको जन्म से ही प्राप्त हुई थी। संगीत शिक्षण से सम्बंधित इनके विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती। कहते हैं कि गुरु नानक साहिब के संगीत में इतना प्रभाव था कि यह साधारण जन के मन को शीघ्र ही पवित्रता एवं शांति प्रदान करने में सक्षम था। आज इनके द्वारा प्रचारित अनेक कीर्तन मानव की आध्यात्मिक भावनाओं को आधार प्रदान कर रहे हैं। गुरदेव

*H.NO. 147, Jawahar Nagar, Tehsil Camp, Panipat (Haryana) Mob. : 09813575005

का सदा ही यह प्रयत्न रहता था कि धर्म के नाम पर समाज में कोई संप्रदायगत विभिन्नताएं न आने पाएं। उनकी बाणी अथवा विचार सदा-सर्वदा धार्मिक एकता और सद्भावना का संदेश देते रहे हैं और आज भी देते हैं। सांगीतिक दृष्टि से श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अनुशीलन से पता चलता है कि गुरदेव ने कीर्तन अथवा बाणी को शास्त्रीय संगीत के आधार पर ही उच्चारित किया है। संगीत के विशिष्ट विधि-विधानों का समावेश उनके कीर्तन में स्वाभाविक रूप से ही विद्यमान रहता था। गुरु जी को 'आसा' राग अत्यन्त प्रिय था, इसी कारण उन्होंने 'आसा दी वार' बाणी का उच्चारण किया।

गुरु नानक साहिब ने अपनी बाणी का गायन मुख्य रूप से उन्नीस रागों में किया है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक मिश्रित रागों का भी प्रयोग हुआ। डॉ. गुरनाम सिंघ के अनुसार, "शबद-कीर्तन के अन्तर्गत किसी बाणी अथवा रचना का प्रस्तुतीकरण निर्धारित रागों, राग-प्रकारों, गायन-शैलियों, सांगीतिक संकेतों तथा रहाउ व अंक इत्यादि निर्देशों के अनुशासन के अधीन ही किया जाता है।"

श्री गुरु नानक देव जी की परंपरा का निर्वाह उनके बाद भी सभी गुरु साहिबान ने किया और यह परंपरा आज भी उसी रूप में प्रवाहित हो रही है। इसी संदर्भ में डॉ. गुरनाम सिंघ का कथन इस प्रकार है : "श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी को जहां रागों व गायन-शैलियों द्वारा विशिष्ट कीर्तन-परंपरा के रूप में अंकित किया गया है, वहीं बाणी के विभिन्न फरमान, सांगीतिक संकेत तथा शीर्षक गुरमति संगीत के मौलिक सांगीतिक प्रबंध का सृजन कर रहे हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के गुरमति-सिद्धांतों पर आधारित इस संगीत-परंपरा के मौलिक विधान को संगीत की वैज्ञानिक विधि द्वारा अधिक सार्थक रूप में पहचाना जा सकता है। इस परंपरा में अपनी बाणी को जनता तक पहुंचाने के लिए उन्होंने रागबद्ध संगीत का प्रयोग किया था। अत: अन्य गुरु साहिबान ने भी रागबद्ध संगीत को महत्व प्रदान करते हुए समाज में हरि-कीर्तन के प्रचार पर ही बल दिया। विद्वानों के अनुसार यह राग-संगीत ही सिक्ख कीर्तन की आत्मा है।

सिक्ख धर्म के दूसरे गुरु श्री गुरु अंगद देव जी हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने 'सेवा' एवं 'हुक्म' मानने के आधार पर गुरगद्दी प्रदान की। गुरु-पद प्राप्त होने से पहले ये 'भाई लाहिणा' के नाम से जाने जाते थे। श्री गुरु नानक देव जी ने ही इनका नाम 'अंगद' रखा था। श्री गुरु अंगद देव जी ने भी श्री गुरु नानक देव जी की परंपरा को आशीर्वाद एवं कर्त्तव्य-स्वरूप समझकर उसका निष्ठा एवं लगन से पालन किया। इन्होंने भी अनेक रागों में अनेक शबदों की रचना की। आप भी अपनी बाणी अथवा धर्म का प्रचार संगीत एवं कीर्तन के माध्यम से करते थे। ये प्रतिदिन स्नान आदि से निवृत्त होकर 'जपु जी' साहिब का पाठ करने के बाद अपने दरबार के कीर्तनियों से 'आसा दी वार' का कीर्तन सुना करते थे, जिसका प्रचलन गुरु नानक साहिब ने किया था। इसी संगीत एवं संकीर्तन का यह क्रम किसी न किसी रूप में सारा दिन चलता रहता था। आपके दरबार में 'भाई सद्दू एवं भाई बद्दू' नामक दो अन्य रबाबी सिक्ख भी कीर्तन किया करते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अंगद देव जी की बाणी केवल श्लोकों के रूप में संकलित है। श्लोकों की संख्या ६३ है। इनकी बाणी में कुल

आठ रागों का प्रयोग हुआ है, परन्तु प्रो. करतार सिंघ ने श्री गुरु अंगद देव जी के रागों की संख्या दस बताई है। इन्होंने भी गुरु नानक साहिब की भांति अपने दो पुत्रों का परित्याग किया और अपने गुरु-भक्त-शिष्य (गुरु) 'अमरदास' जी को अपना उत्तराधिकारी बनाया। सन् १५५२ ई में आप खडूर साहिब में ज्योति जोति समा गए।

इस धर्म के तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी हुए हैं। इन्होंने गोइंदवाल शहर में लंगर की परंपरा शुरू करवायी। सामाजिक दृष्टि से यह परंपरा महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि यहां पर सभी धर्मों और जातियों के लोग एक साथ प्रसाद ग्रहण करते थे। अत: समाज से ऊंच-नीच एवं छुआ-छूत जैसी कुप्रथा को दूर करने का यह एक सफल प्रयास था। ये भी कीर्तन के प्रति निष्ठा रखते थे। इन्होंने भी अपने पूर्वजों की भांति रागबद्ध संकीर्तनों का निर्माण किया एवं उनको जनता में प्रचारित किया। डॉ. गीता पैंतल के अनुसार, इनकी सबसे प्रसिद्ध बाणी 'अनंदु साहिब' है, जो राग रामकली में निबद्ध है। ऐसा माना जाता है कि यह बाणी आज भी उसी रूप में गाई जाती है जिस प्रकार गुरु जी के समय में गाई जाती थी। श्री गुरु अमरदास जी ने भी अपने से पूर्ववर्ती गुरु साहिबान की एवं अपनी बाणी को अपने पौत्र 'संहस राम' के द्वारा दो भागों में लिपिबद्ध करवाया। इसमें इन्होंने भक्त साहिबान की बाणी अथवा विचारों को भी स्थान दिया। इन्होंने अपनी बाणी को कुल सत्रह रागों में निबद्ध किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आपके द्वारा रचित शबदों की संख्या ८९१ है। आपने अपने बाद 'भाई जेठा जी' को गुरु-पद के लिए मनोनीत किया और इनके साथ ही अपनी पुत्री का विवाह सम्पन्न किया।

भाई जेठा जी ही बाद में श्री गुरु रामदास जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये इस पंथ के चौथे 'गुरु' हुए हैं। आपकी बाणी पूर्ववर्ती गुरु साहिबान से कुछ भिन्न है। आपकी बाणी का प्रमुख विषय जीवात्मा-परमात्मा के विरुद्ध उत्पन्न संसार के प्रति वैराग्य-भावना से है। इनकी बाणी अत्यंत हृदयस्पर्शी एवं भाव-विभोर करने वाली है। कुछ विद्वानों के अनुसार पूर्ववर्ती गुरु साहिबान द्वारा व्यवहृत उन्नीस रागों के अतिरिक्त आपने ग्यारह अन्य रागों का भी प्रयोग किया है। आपने कुल ३० रागों में अपनी बाणी को निबद्ध किया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित आपके शबदों की कुल संख्या ६४४ है।

श्री गुरु रामदास जी के बाद गुरु का पद उनके सपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को मिला। ये श्री गुरु रामदास जी की सबसे छोटी संतान थे। ये इस परंपरा के पांचवें गुरु हुए हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनके द्वारा रचित कुल २३१३ शबद संकलित हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये संगीत-विद्या में पूर्णत: पारंगत थे। इसका प्रमाण इनके द्वारा रचित की गई बाणी से सहज ही मिल जाता है। डॉ. गीता पैंतल के अनुसार धुन और राग के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरु जी ने कहा था कि "जो धुन अथवा राग गाया जाए उसमें 'ओअंकार' अथवा परमात्मा के प्रति प्रीति प्रदर्शित होनी चाहिए। वह सर्वव्यापी है और उसके दर्शन गुरु के माध्यम से ही हो सकते हैं। इसी लिए कीर्तन करने वालों को *'भलो भलो रे कीरतनीआ'* कह कर पुकारा है और कहा है कि "तुम धन्य हो! जो कि कीर्तन द्वारा परमात्मा का गुणगान करते हो।"

श्री गुरु अरजन देव जी ने ही अपनी

और बाकी गुरु साहिबान की बाणी को संगीत के संस्कारों के अनुसार संकलित करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब को साकार रूप प्रदान करने का महत कार्य सन् १६०४ ई में किया। डॉ गुरनाम सिंघ के अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान की बाणी के अतिरिक्त इनके पूर्वकालीन तथा समकालीन संतों व भक्तों की बाणी को भी दर्ज किया गया है। इस बाणी को पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संकलन तथा संपादन-प्रक्रिया के अधीन विशेष संगीत विधान में निबद्ध किया गया है, जो रागों के अनुसार बाणी वर्गीकरण से प्रत्यक्ष है। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी बाणी को तीस रागों में निबद्ध किया है। गुरु जी ने श्री हरिमंदर साहिब के सरोवर के निर्माण-कार्य को पूरा करवाया। इस नगर का नाम पहले 'रामदासपुर' और बाद में 'अमृतसर' प्रचलित हो गया।

ईर्ष्या के कारण मुगल बादशाह जहांगीर ने गुरदेव को बंदी बना लिया और ३० मई सन् १६०६ ई को विभिन्न यातनाएं देकर इनको शहीद कर दिया गया। पंचम पातशाह ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रागों को समय के अनुसार पांच भागों में विभाजित करके उन्हें कीर्तन की पांच चौंकियों का नाम प्रदान किया। इनमें क्रमश: प्रथम 'आसा दी वार' की चौंकी है। यह रात्रि के लगभग दो बजे से आरंभ होती है। इसके बाद 'अनंदु' की चौंकी का समय आता है। यह राग रामकली में निबद्ध है और 'अनंदु साहिब' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद 'चरण कमल' चौंकी का समय आता है। इसे 'बिलावल की चौंकी' भी कहा जाता है। इसका समय दिन के दस बजे से लेकर दोपहर तीन बजे तक है। इसके बाद 'सोदरु' की चौंकी का समय आता है। इसका गायन समय सूर्यास्त है। इसको सायंकालीन संधिप्रकाश का समय भी कहा जा सकता है। इसके बाद अंतिम चौंकी के रूप में 'सुख-आसन' या 'कलिआण' की चौंकी का समय आता है। इसका आरंभ प्राय: सूर्यास्त के पश्चात् सात बजे से होता है। इसमें सबसे पहले 'कलिआण' और 'कानड़ा' राग के शबद गाए जाते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी से ही सारिंदा नामक वाद्य-यंत्र का आविष्कार हुआ भी माना जाता है।

सिक्ख संप्रदाय के तीन गुरु साहिबान ने बाणी की रचना नहीं की है। ये क्रमश: छठे गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब और आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब हैं। सिक्ख धर्म के नौंवे गुरु श्री गुरु तेग बहादर जी हैं। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित इनके द्वारा रचित शबदों की कुल संख्या ११६ है। इन्होंने अपनी बाणी को पंद्रह रागों में निबद्ध किया है। इनके शहीद होने के बाद इनके सपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, नौ वर्ष की आयु में ही गुरगद्दी पर आसीन हुए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक महान साहित्यकार, महान योद्धा तथा महान संगीतज्ञ हुए हैं। आपकी कोई भी बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित नहीं है। आपकी बाणी का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण आपकी बाणी स्वतंत्र रूप से अलग है। श्री गुरु नानक देव जी की भांति इन्होंने भी अपनी बाणी अथवा कीर्तन को उन्नीस रागों में निबद्ध किया है। उनके योद्धा होने के नाते अनेक शबद वीर-रस से युक्त भी रचे हैं। इस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब के कुल १४३० पन्नों में से पन्ना चौदह से लेकर १३५२ तक समस्त बाणी रागबद्ध है, जो छ: गुरु साहिबान, पंद्रह भक्त साहिबान, ग्यारह भट्ट साहिबान और चार गुरसिक्खों की बाणी है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस परंपरा

में संगीत आदि से अंत तक साधना एवं पवित्र बाणी अथवा गुरु साहिबान के विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख अंग अथवा आधार रहा है। अगर यह कहा जाए कि केवल संगीत के माध्यम से ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित गुरु साहिबान की बाणी पूर्णतः मुखरित हो सकती है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। 'संगीत' श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आत्मा के समान वास करता है। निःसंदेह ही श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पवित्र संगीत ने समाज में संगीत एवं संगीतज्ञों की स्थिति को उच्च आसन पर आसीन करवाने का कार्य किया है। इस परंपरा में भावात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ संगीत-शास्त्र के सभी विधि-विधानों का आदर सहित व्यवहार किया गया है। ऐसा माना जाता है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कुल ३०५ राग तथा १५,००० बंदिशें सीना-बासीना प्रचलित हैं। इनमें से लगभग १०,००० बंदिशें स्वरलिपिबद्ध हैं और इनके ३० संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इस संदर्भ में डॉ. गुरनाम सिंघ का कहना है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सम्पूर्ण बाणी को मुख्यतः ३१ रागों के अंतर्गत वर्गीकृत करते हुए, विभिन्न अन्य ३१ राग प्रकारों का भी प्रयोग हुआ है। इस परंपरा में जन्म से मृत्यु तक सभी संस्कारों से सम्बंधित कीर्तन पाए जाते हैं। गुरमति संगीत में कला एवं आध्यात्मिकता का एक साथ दर्शन होता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब किसी धर्म-विशिष्ट का ग्रंथ नहीं है, अपितु सर्वसाधारण के बुजुर्गों अथवा गुरु साहिबान के सद्विचारों का पवित्र प्रकाश है। यह प्रकाश मानव-मात्र की संकीर्णताओं, दुराचारों, दुर्व्यवहारों एवं कष्टों को दूर करता है तथा मानव हृदय में भक्ति, श्रद्धा और संस्कारों की ज्योति संगीत के माध्यम से जागृत करके अज्ञान के अंधकार का नाश करता है। निःसंदेह ही गुरु साहिबान की यह पवित्र परंपरा 'वासुदेवकुंटुबकम' के लक्ष्य का तो प्रयास है ही, साथ ही संगीत और अध्यात्म के सम्बंध की अनोखी मिसाल भी है।

सहायक पुस्तकें :

१) 'म्यूजिकोलोजी' -डॉ. गुरनाम सिंघ
२) 'पंजाब की संगीत परंपरा' -डॉ. गीता पैंतल
३) 'गुरबाणी संगीत दरपण' -प्रो. करतार सिंघ



हउमै ममता रोगु न लागै

*–डॉ. देवेन्द्रपाल कौर**

गुरु नानक साहिब समन्वयवादी विचारक होने के साथ-साथ प्रवृत्ति मूलक थे और राजनैतिक परिस्थितियों के प्रति सजग भी थे। उनके विचार प्रगतिशील थे। उन्होंने जीवन के जो आदर्श समाज के सम्मुख रखे वे मानववाद का रूप हैं। वे जाति-सिद्धांत के विरोधी थे। किसी धर्म या सम्प्रदाय के प्रति उन्होंने घृणा का प्रचार नहीं किया। ये सब लक्ष्य उनके आदर्श मानववाद के अलंकार हैं। गुरु जी एक बहुत बड़े अनुभवी साधक थे। गुरु जी ने वानप्रस्थ तथा सन्यास को श्रेष्ठ आश्रम स्वीकार नहीं किया बल्कि वे गृहस्थाश्रम को ही श्रेष्ठ आश्रम मानते हैं। वे कहते हैं कि वास्तविक संयम मन का संयम है। उन्होंने 'हुक्म' और 'नाम' की प्रधानता पर बल दिया है। 'प्रभु की कृपा' (मेहर) सबसे ऊंची बख्शिश है, लीनता ही सबसे बड़ा योग है। उन्होंने अपनी बाणी में जातीय अभिमान तथा दंभ का जोरदार खंडन किया है। उन्होंने भक्ति के सहज एवं सरल मार्ग को अपनाया। व्यापक यात्राओं के द्वारा उन्होंने 'युग की नब्ज' को पहचाना। उन्होंने मौलिक विचारों द्वारा सिक्ख धर्म की दार्शनिक परिकल्पना को साकार किया।

श्री गुरु नानक देव जी मनुष्य देह को उत्तम मानते हैं। इसके पांच बड़े-बड़े खंड अथवा मंडल हैं। इन मंडलों में परमेश्वर विराजमान हैं। परमात्मा नौ द्वारों और मन व बुद्धि के मंडलों से परे है। उसकी कृपा से जब हम दसवें दरवाजे में दाखिल हो जाते हैं तो उसे अंदर ही पा लेते हैं :

देही नगरी ऊतम थाना ॥
पंच लोक वसहि परधाना ॥ . . .
देही नगरी नउ दरवाजे ॥
सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥
दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइआ ॥
(पन्ना १०३९)

गुरु जी ने मानव देह को अत्यधिक महत्व दिया। उनके उपदेशों का मूल तत्व यही है कि परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है। परमात्मा में समाकर परमात्मा का रूप हो चुका व्यक्ति इस द्वैत से भी मुक्त हो जाता है।

हमें सदैव सदाचार के गुण धारण करने चाहिये। जब तक मानव द्वेष (भले-बुरे) के द्वैत से मुक्त नहीं हो जाता वह हृदय में सच्चा प्रेम पैदा नहीं कर सकता। सारी बुराई की जड़ द्वैत या अहंकार है। जब द्वैत समाप्त हो जाता है तो वह बुराई किससे कर सकता है?

भक्ति के दो रूप प्रमुख हैं--(१) वैधी-भक्ति (२) रागात्मक-भक्ति अथवा प्रेमा-भक्ति। अनेक प्रकार के विधि-विधानों पर आधारित भक्ति को 'वैधी-भक्ति' कहते हैं और 'प्रेमा-भक्ति' ईश्वर के प्रति एकनिष्ठ प्रेम पर आधारित होती है। गुरु नानक साहिब जी द्वारा जिन कर्म-मार्ग, योग-मार्ग और ज्ञान-मार्ग की चर्चा की गई है उन सभी मार्गों में प्रेमा-भक्ति की धारा प्रवाहित होती दिखाई देती है। उनकी दृष्टि में नाम ही जप, तप और संयम का सार है। उनकी बाणी

**१०५-सी, प्रोफेसर कालोनी, सामने पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००१, मो. : ९४६३६-१८९११*

में नाम-जप तीन प्रकार के हैं :

पहला साधारण जप जिह्वा से होता है। अजपा तप श्वास और प्रश्वास की संचारण गति से होता है, लेकिन तीसरा जप वृत्ति द्वारा होता है, जैसे :

जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥ *(पन्ना ४)*

उन्होंने दीनता और आत्मसमर्पण पर विशेष बल दिया है। ये दोनों भाव तब पैदा होते हैं जब अंत:करण में निष्कपटता और निष्काम भावना बस जाती है। इसलिए अहम भाव नष्ट होना जरूरी है। इनका मानना है कि अपने मन की अहम भावना को नष्ट करने से ही परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है। सेवा-भाव भी तभी पैदा होता है जब अहंकार नष्ट हो जाए। अहंकार का अर्थ है अपने लिए या अपने में जीना। सेवा का मतलब दूसरों के लिए जीना है। गुरु जी कहते हैं :

हउमै ममता रोगु न लागै ॥
राम भगति जम का भउ भागै ॥
जमु जंदारु न लागै मोहि ॥
निरमल नामु रिदै हरि सोहि ॥ (पन्ना ९०४)

गुरु जी ने दो प्रकार के मनों को स्वीकार किया है--"शुद्ध स्वरूप मन" तथा "अहंकार मन"। "अहंकार मन" को वे हाथी, शाक्त और दीवाना कहते हैं। अहंकारयुक्त मन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि का शिकार है, लेकिन संसार में रहते हुए सांसारिक विषयों में वैराग्य-भावना और दुष्ट-जनों की संगत का त्याग करके मन को ज्योतिमय मन के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

गुरु नानक साहिब हउमै (अहंकार) को भयानक रोग मानते हैं। सभी मनुष्य इसके शिकार बने हुए हैं। मनुष्य की सारी प्रवृत्तियां इसी हउमै के कारण हैं :

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥
हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ (पन्ना ४६६)

'अहंकार' के कई प्रकार माने हैं। यह अनेक प्रकार के रूपों में मानव-मन को कष्ट देता रहता है। धार्मिक अहंकार, परिवार सम्बंधी अहंकार, विद्यागत अहंकार, जाति सम्बंधी अहंकार, धन-सम्पत्ति सम्बंधी अहंकार, रूप-यौवन सम्बंधी अहंकार आदि। धन-सम्पत्ति के सम्बंध में गुरु जी कहते हैं :

सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥
सभ जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥ *(पन्ना ६३)*

अगर उस परमात्मा की कृपा हो जाती है तो हम इस रोग से मुक्त हो सकते हैं:

करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥
नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥ (पन्ना १५३)

अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि मानसिक शांति से ही हमें शारीरिक शांति मिलती है। गुरबाणी भी हमें मन की भावनाओं को नियंत्रित करके मानसिक शांति प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। मानसिक शांति ही मनुष्य के विकास का कारण बनती है। मनुष्य का विकास सारे समाज का, सारे राष्ट्र का विकास है। 



श्री गुरु नानक देव जी

श्री गुरु नानक देव जी सचखंड के वासी थे। जब उन्होंने पृथ्वी पर अनंत पाप, बुरे कर्म और पापों से लथपथ जीव-आत्माओं को दुख सहते हुए देखा तो आपने अकाल पुरख के चरणों में अरदास की कि पृथ्वी पर हो रहे अनेक अकथनीय दुखों, कलेशों और पापों की निवृत्ति की जाए। अकाल पुरख ने आपके उच्च उपकारों की भावना को समझते हुए यह सेवा आप ही को सौंप दी। अकाल पुरख ने गुरु साहिब से कहा कि पृथ्वी पर जाकर जीवों को सुमति प्रदान करो ताकि लोग पापों में फंसकर अपना जीवन व्यर्थ न गंवाएं।

गुरु जी ने इस आज्ञा को सर्वोपरि मानते हुए पृथ्वी पर अपने मुबारिक कदम रखे। यह बात संवत् १५२६ की है। जब कोई महान आत्मा उस लोक से पृथ्वी पर जन्म लेती है तब हम इसे 'अवतार लेना' कहते हैं और गुरु जी तो अकाल पुरख की आज्ञा से आए ही लोगों को सत्य की तरफ लगाने, आपसी प्यार सिखाने और भगवान के प्रति प्यार व श्रद्धा बढ़ाने का उपदेश देने के लिए थे। गुरु जी ने 'माझ की वार' में फरमाया है :

हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥

(पन्ना १५०)

इन पंक्तियों में गुरु साहिब ने अकाल पुरख की तरफ से आए हुए आदेश के बारे में भी वर्णन किया है और दूसरी तरफ गुरु जी ने आंतरिक नम्रता पर भी प्रकाश डाला है। गुरु जी ने अपने आप को 'ढाढी' कहा है जो एक 'ढढ' बजाने वाले तथाकथित नीची जाति के लोग होते हैं। गुरु साहिब अपने आप को 'परमात्मा का ढाढी' कहते हुए यहां तक कथन कर दिया कि मुझ निकम्मे को अकाल पुरख ने इस नेक कार्य में लगा दिया है।



-डॉ. हरकीरतन कौर, H.No. 82-B/2, Model Town, Patiala-147001

कविता

सद्गुरु श्री गुरु नानक देव जी

धर्म के सम्मान हित रोशन हुआ, था वो चिराग।
वो कभी है ठंडा पानी और कभी धधकती आग।
ईसवी सन् चौदह सौ उनहत्तर, कार्तिक पूर्णिमा।
धर्म का वो प्रथम सैनिक, लांघ कर आया सीमा।
प्रगटे वे ननकाणा साहिब, दिशा दे दी धर्म को।
देखी सबने गुरु-कृपा और समझा गुरु के मर्म को।
धर्म के सद्मार्ग संग, हमको सिखाई वीरता।
नाविक कुशलता भंवर किश्ती से समुंदर चीरता।
कोयले के ढेर में हीरा कहां से आ गया।
सत्य श्री गुरु नानक देव, सबके मन पर छा गया।
आज श्री गुरु ग्रंथ साहिब में, गुरु नानक का वास है।
सच्चा, मीठा, अद्वितीय, पावन, सरस अहसास है।
पाखंड जब हो गया दूर, तब सच का परचम लहराया।
सबने समझा श्री गुरु नानक में, ईश्वर स्वयं आया।
प्रभु की करते आरती, श्रृंगार, पूजा किसलिये?
दिल में बस जगमग जगा लो, सत्य श्रद्धा के दीये।
प्रेम कर लो जीव से, तो धर्म पूरा हो गया।
पूज्य गुरु नानक-कथन, हर इक हृदय को छू गया।
पूज्य गुरु नानक में, अद्भुत शक्ति का है समावेश।
धन्य हो गया हर एक सिक्ख और धन्य हो गया भारत देश।



-श्री संजय बाजपेयी रोहितास, C/o जनाब हुसैनी मियां, स्टेशन रोड, कछौना (बालामऊ), जिला हरदोई (उ. प्र.)

तीन आधुनिक पंजाबी काव्य-कृतियों में गुरु नानक साहिब के जीवन तथा व्यक्तित्व के कुछ चुनिंदा विवरण

*-सुरिंदर सिंघ निमाणा**

श्रृंखला जोड़ने के लिए गत अंक देखें

हमारा दूसरा विचाराधीन आधुनिक स्रोत भी एक महाकाव्य के ही रूप में है। इस महाकाव्य का नाम है 'नानकाइण'। यह गुरु नानक पातशाह की पांचवीं जन्म-शताब्दी के दुर्लभ अवसर पर पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला के पंजाबी साहित्य अध्ययन विभाग की ओर से पंजाबी के उस समय के सर्वोत्तम माने जाते कवि प्रो. मोहन सिंघ को विशेष विनती करके उनसे लिखवाया गया था। इसका प्रकाशन १९७१ में किया जा सका। २००५ में इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ और इसी संस्करण के अध्ययन द्वारा ही इस महाकाव्य संबंधी संक्षिप्त रूप में जानकारी सांझी करने का प्रयास है।

'नानकाइण' का आकार 'विश्व नूर' के आकार के समक्ष काफी छोटा है परंतु विषय-वस्तु और कला की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण काव्य-कृति है। इस महाकाव्य में कवि ने बहुत ही ऊंची एवं सुंदर कल्पना-उड़ानें प्रस्तुत की हैं, जो पाठकों-श्रोताओं को विलक्षण विस्माद प्रदान करती हैं। कवि गुरु जी के पावन प्रकाश की पूर्बली सायंकाल का मनोरम चित्रण प्रस्तुत करता है। सायंकाल का स्थल राय भोय की तलवंडी है जो सच के इस सूर्य के उदय होने के बाद विश्व में ननकाणा साहिब के पावन नाम से विख्यात है। अत्यंत विस्तृत वर्णन में से चुनिंदा काव्य पंक्तियां हैं :

मोड़िआ सूरज-रथ ने लहिंदे वल्ल मुहाण।
रंगली आथण उतरी तलवंडी 'ते आण। . . .
हौली हौली हो गिआ दिहुं जद अंदर बाहर।
तलवंडी दी बार ते चढ़िआ रूप अपार।
चमके पीलू वणां दे सोन-दाणिआं हार।
दित्ता किरणां टेढीआं अंतिम जदों पिआर।

बेबे नानकी जी के समानांतर जिस शख्स ने गुरु नानक पातशाह की नूरानी ज्योति को पहचाना वो था तलवंडी का मुसलमान उच-अधिकारी राय बुलार। कल्पना-शक्ति, अनुभव एवं संवेदना का शिखर दर्जे का उपयोग करते हुए तलवंडी में गुरु पातशाह का प्रकाश होने से पूर्व कवि प्रो. मोहन सिंघ राय बुलार को एक विचित्र स्वप्न आया वर्णन करता है। प्रात: काल होने पर जब गांव में पटवारी महिता कालू के गृह में बच्चे के जन्म का समाचार सुनता है तो वह महसूस करता है कि उसको आया स्वप्न इसी घटना के साथ रहस्यमयी रूप में संबंधित है:

उच्ची माड़ी आपणी सुत्ता राए बुलार।
अल्ला अकबर आख के बरड़ाइआ त्रै वार।
बेगम झूण जगाइआ पुछिआ नाल पिआर।
"की तकदा हां खाब विच", बोलिआ भै विचकार।
"असमानां तों टुट के तारा इक बलकार।
तलवंडी ते डिग्गिआ चमक अजाइब मार।
वग पिआ विच बार दे नूरां दा दरिआ।
रुड़िआ जावां ओस विच कंढा हत्थ ना आ।"
(पृष्ठ ७)

साऊ राए बुलार जद कीती खतम नमाज़।
पई ओस दे कंन भी खुशीआं दी आवाज़।

***सहायक संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश।**

आ गिआ चेते ओसनूं सरघी वाला ख़ाब।
विच सिजदे दे डिग्गिआं लाइआ ओस हिसाब।
"असमानां तों टुट्ट के तारा जो बलकार।
तलवंडी ते डिग्गिआ चमक अजाइब मार।
घर कालू दे चमकिआ भावें उहीओ नूर।
तलवंडी दी भोएं ते तुट्ठा आप गफ़ूर।"

(पृष्ठ १०)

चाहे महिता कालू जी राय बुलार के मातहित काम करते हैं परंतु राय उसी पल विशेष चाव-उमाह के साथ उनको बधाई देने आता है और बाल नानक को देखकर तीन बार नमन करता है:

माड़ी उत्तों उतरिआ लै बेगम नूं नाल।
पिछे तुरीआं बांदीआं चुक मिशरी दे थाल।. . .
देण मुबारक बहि गिआ ढुक कालू दे कोल।
आई दाई दौलतां बालक पाईं झोल।
तक बालक दी दक्ख नूं झुकिआ राए बुलार।
सिजदा कीता ओस ने ओड़क के त्रै वार।

जन्म-साखियों का अनुसरण करते हुए गुरु जी के अवतार धारण के समय अनाहद शबद की गूंज सुनाई देती दर्शायी है, करोड़ों देवते और अन्य आलौकिक शक्तियां नमन करती हैं:

जिस वेले धारिआ नानक ने अवतार।
शबद अनाहद वज्जिआ परमेशर दे दुआर।
आण करोड़ां दिउतिआं कीता नमसकार। . . .
सिद्ध चुरासी वी जुड़े लंमे पैंडे मार।
तलवंडी दी भोइं 'ते होण लई बलिहार।

(पृष्ठ ८)

'नानकाइण' में न केवल अत्यधिक काव्य-रस है अपितु इसमें बहुत भरपूर कथा-रस भी विद्यमान है। दृश्य वर्णन करते हुए वृत्तांत अथवा कथा को गतिशील रखने से इस महाकाव्य में रवानी बहुत संचारित हो सकी है। 'एकांतवास' शीर्षक तले गुरु जी की पावन बाणी 'बारह माहा तुखारी' का अति मनोहर समायोजन करते हुए कवि ने प्रकृति को जीवंत विभिन्नता सहित दर्शाया है, जैसे :

सरघीउं आथण तीकरां, आथणों सरघी तीक।
परकिरती दे रंग सै सूखम अते बरीक। . . .
चेतर भवर सुहावड़े बन फूले मंझि बार।
फुटदीआं विच वैसाख दे शाखां बहु-परकार।
कदी देखदा किस तरां तपिआ जेठ ते हाढ़।
कदी सुणीदा कंन ला, टीड लवै मंझि बार।

(पृष्ठ २०-२१)

प्रो. मोहन सिंघ ने गुरु जी को, सुलक्खणी जी के साथ विवाह होने उपरांत गृहस्थ-सुख एवं खुशियों की लहरों में भी दर्शाया है जिस स्थिति में से गुरु जी तीस वर्ष की आयु होने पर ऊपर उठते दर्शाये हैं :

सोचण लग्गे मां पिउ तक नानक दा ढंग।
लग्गा चढ़न ग्रसत दा भावें उस ते रंग। . . .
घुटदी जदों सुलक्खणी बाहां विच भतार।
अते कामणी-गरब विच करदी इंज विचार।
"ना इह सुपना टुटणा, ना इह मुकणा पिआर।
न हुण भजणा हिरन ने बाहों चुंगी मार।
कुझ बन्हांगी आप मैं ते कुझ माउं-पिआर।
कुझ बंन्हणगीआं नन्हीआं पुतर-मुठीआं चार।"

कवि का मुख्य आशय यह दर्शाना है कि गृहस्थ के सुखों का परित्याग अपने आप में एक बहुत बड़ी कुर्बानी थी जो जग-तारक गुरु जी ने की। वैसे पहले सर्ग के अंतिम चरण में 'कार विहार' शीर्षक तले गुरु जी को कृषि की ओर लगाने, गुरु जी की उदासी को देखते हुए उनके उपचार हेतु वैद्य हरिदास को बुलाकर उनको दिखाने अथवा वैद्य के साथ गुरु जी की विचार-गोष्ठि का वृत्तांत दिया है और इस सर्ग का अंत 'खरा सौदा' के प्रसंग को देते हुए किया है। गुरु जी कृषि के संबंध में पिता जी को *"मनु हाली*

किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥" का शबद सुनाते हैं और विवाहित पुत्र को माता जी द्वारा दुनियावी कार-कमाई की ओर प्रेरित करने पर दोनों नेत्र मूंद कर *"सो किउ विसरै मेरी माइ"* शबद उच्चारण करते हैं। वैद्य हरिदास को वे *"दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख"* वाला शबद उच्चारण करके निरुत्तर कर देते हैं। इस सर्ग के अंतिम चरण में दिये वृत्तांत के अनुसार जब बीस रुपये का सच्चा सौदा करके आते हैं तो भी उनके साथ भाई मरदाना जी को ही भेजा जाता है। गुरु जी पिता के नाराज होने का ख्याल करके घर में नहीं आते और रात वृक्षों की एक झंगी में ही व्यतीत करते हैं :

कंढे सुक्के ताल दे इक वण हेठां छुप्प।
रात लंघाई उन्हां ने विच हनेरे घुप्प। (पृष्ठ ३८)

एकेले भाई मरदाना जी के गांव में वापस आने की बात गांव में फैल जाती है। पिता क्रोधित हो स्वयं वन में जाकर उन्हें बुरा-भला कहते तथा उनकी पिटाई तथा अपमान तक करते हैं :

जा बाबे नूं कढ्ढिआ वण दे विच्चों बाहर।
आप बरोबर पुत्र दी दित्ती पत्त उतार।
(पृष्ठ ३९)

कर्ता ने इसी घटना को तलवंडी को छोड़कर गुरु जी के सुलतानपुर लोधी जाने का आधार दर्शाया है। इसमें राय बुलार और भाइया जैराम जी का मुख्य रोल दर्शाया गया है। पिता का निष्ठुर व्यवहार भूल कर गुरु जी घर से चलने वक्त माता-पिता को सत्कार देते हैं। गुरु जी परिवार को अर्थात् सुलक्खणी जी और दोनों बच्चों को तलवंडी में माता-पिता के पास छोड़कर वहां अकेले जाते दर्शाये हैं। न केवल निज परिवार से बल्कि अपनी हवेली तथा उसमें बांधी हुई भैंसों-गायों के साथ भी गुरु जी के हृदय के स्नेह का वर्णन कवि द्वारा किया गया है :

सभ तों पहिलां पिउ दा कीता उस सतिकार।
चरन पकड़ फिर माउं दे घुट्टे नाल पिआर।
तकदी रही सुलक्खणी, चुप, अडोल अहिल्ल।
पलकां अथरू भिज्जीआं धक-धक करदा दिल।
धा चरणां ते ढहि पई हो बेचैन कलांत।
पर गुरदेव उठाल के कीता उसनूं शांत।
लखमी ते सिरी चंद नू घुट लाइआ हिक्क नाल।
फेर हवेली वल मुड़े जित्थे बजूझा माल।
मजूझीआं नूं पुचकारदे वधे गऊआं वल।
किंना चिर गुंमे रहे लग्ग उन्हां दे गल।

इस प्रकार यह पहला सर्ग अत्यंत रौचक, रसमयी और उत्सुकता से भरपूर है। गुरु जी के परिवार के साथ उनके संबंधों के विभिन्न रूप इसमें बहुत सूक्षमता सतिह वर्णन किये गए हैं। कवि ने इसी सर्ग में गुरु जी को तलवंडी की जूहों में भाई मरदाना जी सहित रागों अनुसार प्रभु-कीर्तन करते दर्शाया है।

दूसरे सर्ग 'सुलतानपुर' में गुरु जी के द्वारा बहिलोल खां लोधी के केंद्रीय शासन काल में गुरु जी का प्रकाश होने का संकेतक जिक्र करते हुए सुलतानपुर के स्थानीय शासक दौलत खां लोधी का भी संक्षिप्त वर्णन किया है और साथ ही इसकी अतीत की पृष्ठभूमि भी दी गई है। यह कवि के इस विषय के ऐतिहास उन्मुख अध्ययन को दर्शाता है। लेकिन प्रो मोहन सिंघ की अधिक सफलता सुलातनपुर नगर का प्राकृतिक, चौगिर्दा, इसकी हवेलियां, महल तथा मस्जिदों आदि भवनों की बनावट तथा संरचना वर्णन करने में प्रक्ट होती है। सुलतानपुर में से गुजरती बेईं का काव्यमयी वर्णन देखें :

लहिंदे पासे नगर दे खहि के खेतां नाल।

पाणी वगदे बईं दे सुत-उनींदी चाल।
किधरे असलों पेतले किधरे वहिण विशाल।
किधरे ढंनां, डूंम बणे डूंघे वांग ख़िआल।
कल भरमे जल वगदे रहिंदे हाड़ सिआल।
चिट्टे काले भूसले, रंग जिवें तरकाल।
(पृष्ठ ४४)

कवि की खोज मुताबिक बेईं का जिक्र वेद ग्रंथों में भी मिलता है। साथ ही इस नदी के मूल स्रोत का भी जिक्र है। स्रोत से निकलने से इस के प्रवाह तथा बनते दृश्टमान रूपों और बहते समय बनते रूपों की विभिन्नता वर्णन करने में सकुशल तथा अपने युग के शिरोमणि माने जाने वाले कवि की कल्पना उड़ानें अपना कमाल तथा जलाल दर्शाती हैं, जैसे कि:

बड़ी पुराणी बईं इह उमर हिसाबों बाहर।
जिकर आउंदा एस दा वेदां दे विचकार।
विच दसूहे छंभ इक टेरकिआणे कोल।
जिस दे विच्चों निकल के टुरदी है इह छुहल।

इस महाकाव्य में इसके अंत में हरी की पत्तण से दस कोस ऊपर की तरफ सतिलुत में मिल जाने की भुगौलिक सच्चाई भी दर्शायी गई है। वेईं को प्रथम बार देखकर गुरु जी इसको अपनी पसंद के रूप में जैसे चयन कर लेते है। कवि अनुसार तब भाई मरदाना जी भी आपके साथ थे और इसके किनारे रबाब के तारों की टंकार वातावरण में गूंजी थी:

पत्तण लंघ बिआस दा झल्ल सरकड़े चीर।
पाए नानक चरन जद एस बईं दे तीर।. . .
मद तोरे सी वग रिहा बेईं दा परवाह।
झम्म झम्म सन कर रहे त्रेलां भिज्जे घाह।. . .
तक्क इह समां सुहेलड़ा, सुंदर सति सुहाण।
कुझ देर लई हो गिआ नानक अंतर-धिआन।
(पृष्ठ ४५)

इस स्रोत अनुसार सुलतानपुर फेरी के दौरान भाइया जैराम गुरु जी की नौकरी की बातचीत चलाते हैं, गुरु जी को ले जाकर नवाब के साथ मिलाते हैं। नवाब गुरु व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ततकाल मोदी का कार्यभार सौंप देता है :

तक्क नानक दी दक्ख नू होइआ नवाब हरान।
मूंहों उसदे निकलिआ, "अल्ला तेरी शान!"
अपणे कोल बिठालिआ रतन अमोलक जाण।
मोदी दा पद बख़शिआ खिलअत कीता दान।
नाले बन्ही ओसदी रसद अते तनखाह।
अते हलूफा वक्खरा देण लई उतशाह।
(पृष्ठ ४६)

महाकवि ने मोदीखाने के बारे में व्यापक ऐतिहासिक अध्ययन उपरांत दुलर्भ जानकारी हमको उपलब्ध कराई है। अत्यंत दुलर्भ जानकारी का एक उदाहरण यह है कि :

सुण के सोभा उन्हां दी कई जाणू परवार।
तलवंडीउं सुलतानपुर आ गए मंज़लां मार।
बाबे सभनां वासते लभ दित्ता रुज़गार।
कुझ चिर पिच्छों सद्द लिआ अपणा वी परवार।

महाकवि प्रो मोहन सिंघ ने मोदी की नौकरी करते हुए गुरु जी की वेईं प्रवेश की घटना परंपरागत साखी साहित्य की परंपरा के अनुसार ही वर्णन करके लोक-विश्वास एवं श्रद्धा के प्रति अपना समर्थन दर्ज कराया है:

लै गए सेवक ओस नूं विच सच्ची दरगाह।
मिहरबान रब्ब होइआ उप्पर नानक शाह।
दित्ता कटोरा सेवकां भर के अंम्रित नाल।
"अंम्रित मेरे नाम दा पी लै" किहा दिआल।
कीती सच्चे साहिब नूं तबि नानक तसलीम।
पिआला पीता त्रुठिआ उस ते आप रहीम।
(पृष्ठ ५२)

इस सर्ग में गुरु जी के जगत-उद्धार-सुधार हेतु उदासियों पर निकलने की पूर्ववर्ती

पृष्ठभूमि और इस अति महत्वपूर्ण सरोकार को अनुभवी तथा व्यापक तजुर्बे के मालिक गुरु साहिब के ऊंचे भावों विचारों को उजागर करते हुए वर्णन किया गया है। यह आपके जीवन का मूल परिवर्तन बिंदू है भले ही प्रारंभ से ही वे इस दिशा में अपनी मस्त गति से सदैव क्रियाशील रहे हैं। गुरु जी इस कारज की विषमता अथवा कठिनाइयों को पूर्णत: चितार रहे हैं जैसे कि :

गाहणे हन हुण असां ने जंगल अते पहाड़।
दिन कटणे विच बसतीआं रातां विच उजाड़।
तुर के थल मुकावणे तर करने जल पार।
दूर दूर तक अपड़ना लंबे पैंडे मार।
(पृष्ठ ६४)

गुरु जी डंके की चोट पर उदासियों पर रवाना होते हैं :

फैल गई विच नगर दे विच्च पलां दे बास।
बाबा नानक हो गिआ लोकां लई उदास। (वही)

तीसरा सर्ग पृष्ठ ६७ से १४० तक चलता है जिसमें पहली उदासी का काफी विस्तृत विवरण व वृतांत अंकित किया है। लाहौर, सैदपुर, हरिद्वार, गोरखमता, अयोध्या, प्रयाग, बनारस, गया, कामरूप, सती देश, मनीपुर, बंगाल, उड़ीसा, दक्खण, पालीपुर, महाबलीपुर, कांचीपुर, लंका, गुजरात, कच्छ, मथुरा, वृंदावन, दिल्ली और कुरुक्षेत्र में गुरु जी सत्य प्रचार का उद्देश्य बाखूबी संपूर्ण करते हुए वापस सुलतानपुर लौटते हैं।

चौथा सर्ग **'दूसरी उदासी'** का वृतांत प्रस्तुत करता है। इस उदासी दौरान गुरु जी मुख्यत: जम्मू-कशमीर, वैष्णो देवी, मटन तथा सुमेर पर्वत पर प्रभु-नाम की ध्वनी की गूंज डाल कर लौटते हैं। यह सर्ग पृष्ठ १४१ से आरंभ होकर पृष्ठ १५७ पर संपूर्ण होता है और दूसरे सर्ग के समक्ष काफी लघु आकार का है।

पांचवां सर्ग पृष्ठ १५९ से शुरू होकर पृष्ठ १८८ तक चलता है। इसमें तुलंभे के सज्जण ठग का उद्धार होता है। इसमें मक्का, मदीना, इराक, जेहलम, रुहतास के लोगों के कल्याण का वृतांत है। सैदपुर में बाबर के आक्रमण से लोगों पर हुए अत्याचारों का विस्तार इसी सर्ग में है:

गए किथाईं तेग बंद लाल वरदीआं रत्थ।
आरसीआं, मूंह बंकड़े, भागां वाली नत्थ?
कित्थे घर दर सोहणे, मंडप, महिल, सरां।
कित्थे सुंदर कामणी जिस बिन नींदर नांह?
कित्थे पान सुपारीआं कित्थे हरम भरे?
होइआ उन्हां हवाल की मुड़े ना कंत घरे।
तुरकणीआ, हिंदवाणीआं लेखा कउण करे?
भट्टणीआं, ठकुराणीआं, पईआं हाल बुरे।
इकना पाटे पैरहन, इकना सिर ते पैर।
करन करावण हारिआ, इह किवेहा कहिर?
ढालदीआं सन पट्टीआं जिहड़ीआं सित्थे नाल।
नाल कातीआं जालिमां कट्टे सुंदर वाल।

अंतिम और छठा सर्ग करतारपुर के बारे में है जो पृष्ठ १८९ से पृष्ठ २१५ तक चलता है। इस प्रकार यह महाकाव्य भी एक बहुत महत्वपूर्ण काव्य-कृति है जिसमें लोक-परंपरा और इतिहास का एक बहुत अच्छा समायोजन किया जा सका है परंतु इसकी काव्यकला इसकी सब से अधिक ध्यान खींचने वाली विशेषता कही मानी जा सकती है।

तीसरी पंजाबी काव्य-कृति भले ही आकार और संरचना की दृष्टि से महाकाव्य की श्रेणी में शामिल नहीं की जा सकती लेकिन यह एक लघुआकार में भी एक बहुत महत्वपूर्ण काव्य-कृति कहलाने की अधिकारी है। इसके कर्ता पंजाबी कवि मास्टर सेवा सिंघ हैं जो जिला अमृतसर के गांव सोहियां खुर्द के रहने वाले हैं।

आप एक बहुत व्यापक जीवन-तजुर्बे वाले हमारे आदरणीय बुजुर्ग कवि हैं जिनका समस्त जीवन एक आदर्श अध्यापक के रूप में दानिशमंद व्यक्तित्व न जाने कितनों के लिए एक प्रेरणास्रोत है। इन्होंने आपने काव्य रचना सफर में विधा के रूप में तो मात्र एक ही बानगी रूबाई अथवा दोहड़ा को अपनाया तथा आजीवन निभाया है लेकिन अपने काव्य के विषय-वस्तु में इन्होंने व्यापक विभिन्नता का प्रगटावा किया है। आपने सैंकड़ों की संख्या में मानव जीवन के विभिन्न विषयों, समस्याओं पर रुबाइयां लिखकर पंजाबी में डॉ. मोहन सिंघ दीवाना, भाई वीर सिंघ और प्रो. मोहन सिंघ के द्वारा चलायी काव्य-परिपाटी को आगे चलाने का एक अच्छा प्रयाग किया। उपरांत आपने भगत पूरन सिंघ (पिंगलवाड़ा अमृतसर के संस्थापक) का जीवन रुबाई अथवा दोहड़ा विधा में ही लिखने का अपनी प्रकार का नया प्रयास किया। इसी प्रयास की सफलता से प्रेरित होकर इन्होंने सन् २००२ में गुरु नानक साहिब के जीवन तथा व्यक्तित्व को इसी विधा में रचकर उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा तथा सत्कार प्रस्तुत किया है। यह हमारे पाठकों के लिए बताना अनिवार्य है कि इन्होंने बाद में शेष नौं गुरु साहिबान पर भी कविता में और इसी विधा में अन्य नौं काव्य-कृतियों भी रची हैं। इनको 'नवीन प्रकाशन अमृतसर' ने प्रकाशित करने का उद्यम किया है। ये सभी काव्य-कृतियां अपना-अपना महत्व रखती हैं। यहां इनकी गुरु नानक साहिब के जीवन तथा व्यक्तित्व पर प्रकाशित काव्य-कृति 'स्री गुरु नानक देव जी (सिक्ख धरम दे बानी)' शीर्षक से उपलब्ध है।

लघु आकार की इस काव्य-कृति को निरंतर एक ही श्रृंखलाबद्ध रूप में कुल बाईस उपशीर्षकों सहित प्रस्तुत किया गया है :

प्रारथना, प्रकाश, पढाई, जनेऊ, वागी, मेल मरदाना, शादी, सच्चा सौदा, सुलतानपुर बिच, मोदी, संगत दी नींह, तेरा तेरा दी घटना, वईं उपदेश, पहिली उदासी, दूजी उदासी, गुर दरशन, गद्दी लई परख, आखरी परख, गुरगद्दी सौंपणा, परे इकठी करनी, जोति-जोति समाउणा, सखशीअत।

'प्रारथना' में कवि माता-पिता और गुरु तथा प्रभु को नमन करता हुआ कवि माता-पिता को 'असली रब्ब' कथन करता है और युवा पीढी को पालना में उनके गहरे योगदान की अनुभूति कराना चाहता है :

मत्त समझो सां जंमदे एडे, उहनां गंद धोइआ लक्ख वारां।

'सेवा' मापे, गुरू प्रभ नूं, लक्ख मेरीआं नमसकारां।
(पृष्ठ ५)

'प्रकाश' उपशीर्षक तले कवि मास्टर सेवा सिंघ ने गुरु जी का पावन प्रकाश १४६९ ई. में कार्तिक की पूर्णिमा को हुआ लिखा है। कवि मास्टर सेवा सिंघ द्वारा लिखे अनुसार दुनिया को समझा-बुझा कर सही जीवन-मार्ग पर अग्रसर करना गुरु जी के ही हिस्से आ सका। भूले-भटके लोगों को उन्होंने अपनी रब्बी बाणी के गायन द्वारा शिक्षा बख़्शी। 'किरत करना, बांट कर छकना अथवा खाना और नाम जपना' का त्रे-सूत्रीय गुरमति सिद्धांत उनकी अमूल्य देन है। आप नये निराले सिक्ख धर्म के संस्थापक हैं:

किरत करनी, वंड छक, नाम जपणा, कहे असूल लासानी।

'सेवा' महां पुरख सन उही, सिक्ख धरम दे बानी। *(पृष्ठ ६)*

गुरु जी बालपन से ही अत्यंत गहर-गंभीर प्रकृति के स्वामी थे। वे शांति पसंद, नेकदिल,

मिष्टभाषी थे और बालपन में ही उनका व्यक्तित्व अद्वितीय था। उनके दीदार का लोगों पर सद्‌गुणों प्रभाव पड़ता था। कवि अपनी काव्यकला में कल्पना-शक्ति से गुरु जी को 'तलवंडी चंद' वर्णन करता हुआ आकाश के चंद्रमा को उनके आगे फीका दर्शाता है:

तलवंडी दे चंद दे साहवें, चंदा करें चड़ाईआं?
तूं जूहां विच चानण पावें, उस रूहां रुशनाईआं।
गुरू नानक दे नैणा दे विच, जां तूं अक्खीआं पाईआं।
'सेवा' शांत सचाई जिहीआं सभ वडिआईआं पाईआं। (पृष्ठ ७)

गुरु जी पंडित बृजनाथ के पास पाठशाला में विद्या ग्रहण करते हैं तो साथी शिष्यों के साथ परमेश्वर की बातें करते हैं। मौलवी सय्यद हसन और कुतबदीन आपके फारसी-अरबी भाषाओं के उस्ताद कहलाये। कवि अनुसार आप अपनी कक्षा में सबसे ऊंची लियाकत वाले शिष्य थे:

नानक बहुत सिआणे बालक, तीखण बुद्धी वाले।
'सेवा' गुर हुशिआर सभी तों, विच शरेणी पाठशाले। (पृष्ठ ८)

कवि अत्यंत सक्षिप्त तत्वउन्मुख शैली में गुरु जी के अत्यंत व्यापक और अद्वितय जीवन को गिने-चुने शब्दों में वर्णत करने का प्रयास करता है। संक्षेप में लिखना आसान नहीं होता बल्कि विस्तृत रूप में लिखने से अधिक कठिन और चुनौती भरा कारज होता है। जनेऊ पहनाने आये पुरोहित पंडित हरदयाल को, गुरु जी मात्र नौ वर्ष की आयु में बाहरी जनेऊ की निरार्थकता दर्शाते हुए सत्यवादी जीवन ढंग रूपी जनेऊ पहनने का आग्रह करते है जैसे कि:

जनेऊ पाउणा तां उह पा जिहड़ा सभ नाल पिआर सखावे।
वकार, त्रिशनो बचणा दस्से करनी किरत सखावे।
धरम तां चंगे करमीं रहिंदा जंञू बन न आवे।
'सेवा' जनेऊ जो हर पक्ख जीवन सुच्च बणाउण सुखावे। (पृष्ठ ८)

कवि ने गुरु जी द्वारा भैंसे चराने और चराते वक्त प्रभु-ध्यान में जुड़ जाने और इस दौरान भैंसों द्वारा इक कृषक का खेत उजाड़ देने और राय बुलार की उपस्थिति में खेत के पुन: हरा-भरा देखे जाने की साखी का भी संक्षिप्त रूप में वृतांत दिया है। राय बुलार इस पर गुरु जी की दैवी शक्ति को नमन करता है तथा गुरु जी के पिता जी को सपुत्र नानक प्रति अपनी दृष्टि शुद्ध करने का परामर्श देता है:

हो प्रभावत कहे कालू नूं, करीं ना मुंह फटकारा।
'सेवा' कहे नानक का सदका वस्सदा शहिर हमारा। (पृष्ठ ८)

कवि अनुसार जब गुरु जी का अपने गिराईं भाई मरदाना जी के साथ मिलाप हुआ और आपने उनकी रबाब को कला कौशल के बारे में देखा जाना तो आपने उनको स्वयं अपने साथ धर्म प्रचार के महान कारज में साथ देने का आग्रह किया। भाई जी ने इस अवसर पर अपने कुटंब के बारे में चिंता व्यक्त की। गुरु जी ने उनको धैर्य बंधाया कि मानवता के कल्याण के लिए कुछ अच्छा करने के रास्ते में परिवार की चिंता को बाधा नहीं बनना चाहिए। भाई मरदाना जी इस सुझाव पर अमल करने के लिए मन आत्मा से तैयार हो जाते हैं :

हो गिआ शबद कीरतन ढंडाऊ, घर दे फिकर ना फड़िआ।
'सेवा' गुरू शबद, रबाब, मरदाना, बदल ना जग्ग नूं जड़िआ।

मास्टर सेवा सिंघ ने गुरु जी के विवाह के बारे में प्राचीन स्रोतों के प्रयाप्त अध्ययन के

उपरांत इस विषय पर काफी अच्छी तथा ठोस जानकारियां अपने पाठकों के साथ सांझी की हैं, जैसे कि:

हर जात के जांजीआं रोटी, इको जगा छकाई।
'सेवा' ऊच नीच सम कीते, वाह नानक चतराई। (पृष्ठ ९)
निरोल कीरतन होइआ विआह विच, वैदक रसम ना थोड़े। (पृष्ठ १०)

कवि ने गुरु जी के विवाह समय की आयु पंद्रह वर्ष बताई है। जब आपका विवाह हुआ, सन् संवत् नहीं दिया परंतु विवाह उपरांत घर में पहला पुत्र पैदा होने का सन् '१४९७' दिया है और दूसरे सपुत्र का जन्म बड़े सपुत्र के जन्म से दो वर्ष बाद बताया है।

कवि ने सच्चा सौदा का प्रसंग विवाह और सपुत्रों के जन्म के बाद दिया है और सुलतानपुर के लिए प्रस्थान करने अथवा वहां जाकर रहने और नौकरी करने का सन् १५०४ ई बताया है।

कवि मास्टर सेवा सिंघ द्वारा लिखे अनुसार सुलतानपुर में मोदीखाने के मोदी की नौकरी निभाते हुए ही गुरु जी ने संगत-पंगत का सिलसिला आरंभ कर दिया था। नौकरी को न केवल ऊंची ईमानदारी के साथ निभाया बल्कि जरूरतमंद लोगों को भी दिल खोलकर सहायता की। आज की भांति ही भ्रष्ट हो चुके प्रबंध में उनकी चुगलखोरों की ओर से शिकायत स्वाभाविक थी। यह प्रसंग संक्षिप्त में देने उपरांत दानिशमंद तथा अनुभवी कवि द्वारा अपने समय के लोगों अथवा हम सबको ईर्ष्यावश होकर ईमानदार एवं प्रगतिशील लोगों के विरुद्ध झूठी शिकायतें न करके, आत्म-विश्लेषण का अच्छा रास्ता सुझाया गया है:

इस तों पहिलां असीं किसे नूं, आख दईए ठह खोटा।
आपे आपणी पीढ़ी हेठां, फेर वेखीए सोटा,
हिक्क ते हत्थ मार के दस्से, जिहड़ा हल ते नहाता,
'सेवा' आपां सभी गुनाहीं, कोई वड्डा कोई छोटा।

कवि ने प्रथम उदासी (१५०७-१५) का वृतांत बहुत ही खूबसूरती के साथ दिया है। कवि के अपने मन में किरती वर्ग के बारे में प्यार और शोषक वर्ग के प्रति घृणा उग्र रूप में प्रतिबिंबत होती है जब उसकी कलम भाई लालो और मलिक भागो के जीवन-ढंगों का वर्णन करती है। यूं ही दीयालपुर के कुष्ट रोग से पीड़ित कोहड़ी के गुरु जी द्वारा उपचार का वृतांत कवि के, अपने मानवतावादी विचारों की झलक देता है। हरिद्वार के ब्राह्मणों के कर्मकांडों का गुरु जी द्वारा विरोध वर्णन करते हुए भी कवि आज हम सब को कर्मकांडों से सावधानी सहित बचने के लिए सुझाव देता प्रतीत होता है। एक-एक दो-दो बंदों अथवा छंदों में प्रयाग, अयोध्या, गया, राज गराहां, मुरशदाबाद, बंगाल, ढाका, गोहाटी, नागालैंड, कलकत्ता, कढापा, करनूर, रामेश्वर, नासक, इंदौर, उज्जैन, आवंतीपुर, सोमनाथ, जूनागढ़, गिरनार, द्वारिका, रामड़ी, रुहेलखंड, दिल्ली, सोनीपत, पानीपत, करनाल, पहोए, सरसा स्थानों पर गुरमति ज्ञान बांटते दिखाकर कवि शेष कई स्थानों पर गुरु जी के जगत-सुधार को थोड़े अधिक विस्तार सहित बयान करता है। दूसरी उदासी के उपशीर्षक तले भी दर्जनों स्थानों पर धर्म प्रचार वर्णन किया गया है। अंत में गुरु जी के व्यक्तित्व के बारे में कवि अलग आठ छंद रच कर काव्य-कृति को संपूर्ण करता है:

लोक मोड़े प्रछावें वल्लों वखा असलीअत पासा।
'सेवा' अमन 'च रहे मानुक्खता, गुरु नानक दा आशा। (पृष्ठ ६४)

कविता

जगत गुरदेव गुरु नानक देव जी

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ**

मानस के सदियों के
इतिहास में चलते-चलते,
आ जाते ऐसे पड़ाव
जब सभी फलसफे थक जाते।
बीच दोराहे खड़े समाजी को
घिसे पुराने धर्म-शास्त्र
अवतार, औलिया राह न दिखाते।
अम्बर रास्ते निहारता
धरती प्रतीक्षा करती
सभ्यता बाट जोहा करती
मानवता राह देखती रहती।
उस ऐसे महा मानव की
जो ऐसा कर्म लेकर आये,
जो ऐसा मर्म लेकर आये,
ऐसी साधना,
ऐसी जापना लेकर आये,
जो बदल सके संसार।
तोड़ते हुए ठहराव
जो बदल सके संस्कार।
परिवर्तित कर सके संस्कार।
जो कम कर सके धरती का भार।
जो आंसुओं को रोक
कर सके सुख का संचार।
रच सके खुशी का संसार।
जो वीरान हो चुकीं
कद्रों-कीमतों को बदल कर
सृजन कर सके नये सभ्याचार,
फैला सके सुगंधियों की फुहार।
ले आए नये दसतूर
दुखों-विवशताओं को कर समाप्त
रोक सके मनोविकार।
जो दे सके सृजक व्यवहार।

आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
इंकलाब के जनक
विचार धन के धनक
लेकर आये समूल नया
जीवन जीने का दर्शन।
बताई एक राह आत्म-अर्पण
बताया सकल साच परसन।
आदि गुरदेव

जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
अध्यात्म प्राचीन को
चलन समाजी नवीन को
देखा, समझा, टटोला।
और पाया निपट
खाली-खाली खटोला।
सर्वस्व पाये भूले सभी
भटकते हुए दानश
करोड़ों देवी-देवता
पकड़ते न बैय्यां
टूटे बिखरे बिलखते मानस।
आधे-अधूरों को छोड़
एक परिपूर्ण संपूर्ण का

*पत्तन वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर। मो : ९४१७१-७५८४६

ऊंचा परचम लहराया
सभी टूटे बिखरों को
एक अकाल के दामन लगाया।
टूटा करोड़ों देवी-देवों का आभा मंडल
एक ही का सम्मोहन
एक ही का जप जापन
दसों दिशा उसी का संस्थापन।
रत्ती भर भी न विज्ञापन
किरत कर्म रसन-रासन
कर्म धर्म उपासन
कर्म मर्म सुहासन।

आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
खाने-पीने में
अजब अटल राह दिखाई।
जो पैदा करता विकार
उसे कभी खाना नहीं भाई!
उसे कभी न पीना भाई!
पीना है बस
शबद साच रस
जिससे विकार न उपजे भाई!
जिससे जान न जाए बहकाई।
जीवन के मर्म की
ज्ञान-गुत्थी सुलझती
सजग राह पा लेती लोकाई।

आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
सभ्याचार के विचित्र इंकलाबी
मानस से मानस का रिश्ता
बराबरी के पंचम स्वर रबाबी।
मोह-मोहब्बत की मानवता
सीमाओं को कर समाप्त
बने समानता के ख़्वाब-ख़्वाबी।
जिनको नीच कहते रहे
उनको बख्श दी ऊंचाई।
जब सभी के होते हैं
हाड-मांस-रक्त एक जैसे
फिर कोई नीच कैसे?
फिर क्यों होती उनकी रुसवाई?
न रहे कोई शूद्र
न राजपूत क्षत्रीय
पंडित वो पंडित कैसा
जो हो जाए मदमाता
जो करता फिरे खराबी?
एक से पैदा होते मानव
एक से जीयें हिसाबी।
कोई क्यों कर करे खराबी?

आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
कुर्बानी के आदि-कर्त्ता
सारे जीवन की भेंट चढ़ाई।
सिर रखकर हथेली
'गली मेरी आओ' की
अंबर ऊंची सुर सजाई।
मशाल जगजाहर जलाई।
मानस समाजी को बताया
अपने को बदल
फिर समाज को बदलना,
बदलाव की सीढ़ी
फिर सांस-सांस चढ़ना,
मन-बच-कर्म की शोध
हर सू रौशनी जाए फैलाई।
ऐसी कुर्बानी
कि कर्म कुर्बानी करते जाना,
मूल्य मांगना तो दूर

मन से भी नहीं चाहना,
फिर ही फलेगी समाजी भलाई।
कुर्बान कर देना सत्य पासार के लिए ज़िंदगानी
देश-देशांतर देखना समानी,
राज-सत्ता की जुल्मत
नहीं झुकना नहीं रुकना
जब तक खत्म न हो
जुल्मत की कहानी।
सिर देना पर सिरर न देना
लहू की रौशनी से लिखना रोशनाई।

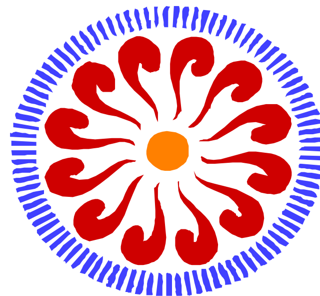
आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
रोटी रोजी के एक अलम ईमानी
मेहनत बुलंद विधि विहारी खोजी।
कर्म श्रम कर-कर के
किरत-कमाई कर-धर के
सांझी रसोई लंगर पिरत पाई।
निर्मल परंपरा चलाई
करतारपुर की पावन धरती
सबसे पहले काम आई।
जो अन्न-दाना होता
जो भी होती पैदावार
सब लंगर में देते चढ़ाई।
और खाते-पहनते सभी जिज्ञासु
छकते-पहनते इसे सभी माई-भाई।
शबद साचे की खोज में आते
सभी राजा-रंक संगत बन जाते
इसी संगत से पंगत जाती सजाई।
बराबरी की कला
सभी में जाती बरताई।
कोई शूद्र न क्षत्रिय का भेद
सभी परस्पर भाई-भाई।
सभी को मान-महत दिया दिलाई।
जो घर आये उनकी सेव कराई।
मानवता की सुगंधि

आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
ऐसी सुगंध फैलाई।
सदियों से सदियों तलक
उसमें कमी नहीं आई।
इससे भी ऊपर और बहुत आगे
फैल गई सुगंधि और प्रकाश पाया
देश-देशांतर युग-युगांतर
अनेक महाद्वीपों, अनेक भू-मंडलों में
हुई गुरमति-ज्ञान रुशनाई।
इस ज्ञान को
परत दर परत आगे
और आगे खोजना होगा
करम-ओ-मेहर को निरंतर।
और खोजना होगा
कीचड़ के छींटे
करतारपुर में कैसे बन जाते
चंदन इत्र सरवर
सेवा-साधना को मान मिल जाता!

आदि गुरदेव
जगत गुरदेव गुरु नानक देव।
भविष्य द्रष्टा पढ़ लेते
आगे सदियों में
जो आने वाला तसव्वर
इतिहास बन जाती
सदैव काटती समाजी विकार।
कैसे जप जापना
और सेवा-साधना
रोजी-रोटी सांझा संकल्प
पा लेते सत्य सत्कार!

कड़ी मेहनत लम्बा संघर्ष
खून-पसीने की
किरत-विरत का व्यवहार!
एक ही नेम
महामानव गुरदेव के लिए।
एक ही दसतूर
सिक्ख है मानवता की सेवा के लिए।
उसका हरेक नियम
समाज-सेवा के लिए।
गुरदेव भी नित्तनेमी
सिक्ख भी नित्तनेमी
साच शबद जप-जापन
किरत कर्म आराधन
सभी मनुष्य-मात्र समर्पित
नहीं कुछ बाकी, सभी सब अर्पित
नहीं कुछ निरीह जादूनुमा
सभी कुछ बादलील विवेकशील।
विवेक का निर्मल प्रवाह
उपजाये ज्ञान अथाह
कौन संभालेगा,
किस तरह उजालेगा
कर्म-मर्म दसतूर बुलंदतर?
वंशज पात्रता मालिकाना
मानवता की खातिर
मनो संस्कार में न लाना।
पुत्रता त्याग देना
बन गया अनिवार्यकर।
सेवा-साधना सच सारी
जप जापना मन आधारी
अंग लगे अंगद हुए
बन गए मर्यादा पुरख
सारी बागडोर थी उनके हाथ स्वतंत्र।
नयी राह बनाई
अंबर ऊंची कर
सृष्टि-दृष्टि लम्बी नज़र
सृजना करके दिलाई अपरंपर।
जान लेना होगा
कैसे होता युगीन!
साच शबद संचार
कैसे समाज की गहरी जड़ों में जाता
समाजों के सकल
परिवर्तन का चमत्कार!
कैसे शबद की महक
युगो-युग फलती-फैलती?
चलन आगे बढ़ता
धरती ठौर पा लेती
अम्बर नत्मस्तक हो जाता
सभ्यता आगे कदम बढ़ाती।
समाजों की विकास-गति
अपने में संभल-संभल जाती।
अपने को आगे-आगे पाती।
बराबरी के आकाशों में
विश्व-दृष्टा को
बारंबार सर झुकाती।
बदलाव के युगीन
महादृष्टा को
प्रणाम दंडवत करती।
प्रणाम दंडवत करती।





ख़बरनामा

प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में जत्थेदार अवतार सिंघ ने अमेरिका ट्रांसपोर्ट सुरक्षा अथार्टी के द्वारा दसतार की विशेष जांच पर व्यक्त किया रोष

अमृतसर। अमेरिकी हवाई अड्डों पर 'अमेरिका ट्रांसपोर्ट सुरक्षा अथार्टी' की तरफ से सिक्खों की दसतार (पगड़ी) की विशेष रूप से जांच किये जाने सम्बंधी जारी नये अनुदेशों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि दसतार सिक्खों के आत्म-सम्मान, गैरत तथा इज्जत का प्रतीक और सिक्ख की शख्सियत का अभिन्न अंग है। दसतार की विशेष रूप से जांच किये जाना न केवल सिक्खों के साथ भेदभाव है बल्कि यह उनकी तौहीन के भी तुल्य है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंघ को देश के मुखिया होने के साथ-साथ एक सिक्ख के रूप में भी इसका तत्काल नोटिस लेना चाहिए

यहां से जारी एक प्रेस रीलीज में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि सिक्ख संसार के जिस भी देश में बसे हैं उन्होंने अपने उद्यमी तथा परिश्रमी स्वभाव के आधार पर उस देश के विकास तथा प्रगति में बड़ा योगदान डालते हुए अपनी विलक्षण पहचान स्थापित की है। उन्होंने अमेरिकी अर्थव्यवस्था तथा विकास में बड़ा हिस्सा डाला है। दूसरी ओर अमेरिकी अधिकारियों द्वारा जारी उपर्युक्त अनुदेश विश्व भर में बस रहे सिक्खों का अपमान करने तुल्य है। विस्फोटक पदार्थ को न जाने दसतार में छुपाये जाने के साथ क्यों जोड़ा जा रहा है, जबकि वह तो व्यक्ति द्वारा पहने हुए कपड़ों में छुपाया जाता है। सिक्ख भी सबकी तरह चैकिंग के समय फुल-बॉडी स्केनर में से गुजरता है, फिर उसकी दसतार की अलग तलाशी कोई अर्थ नहीं रखती। ऐसा करना शांति-पसंद और कानून के पाबंद सिक्खों के लिए बेहद दुखदायी है। बोलने तथा धर्म की आजादी के समर्थक और संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र कहलाने वाले देश की तरफ से ऐसे अनुदेश अत्यंत दुखदायी हैं। अमेरिका में सिक्ख बहुत बड़ी संख्या में बस रहे हैं और अमेरिका राजतंत्र उनके सभ्याचार एवं धार्मिक परंपराओं से भली-भांति परिचित है। अमेरिकी राष्ट्रपति के भारत दौरे पर ऐसे अनुदेश और भी अधिक दुखदायी हैं। डॉ. मनमोहन सिंघ स्वयं एक सिक्ख होने की हैसियत से इस विषय को अमेरिकी राष्ट्रपति के पास गंभीरता से उठायें। उनको दसतार की जांच सम्बंधी अनुदेश वापस लिये जाना यकीनी बनाना चाहिए।

दोषियों को सजा मिलने तक संघर्ष जारी रहेगा : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर। सैकड़े वर्षों से गुलामी की जंजीरों में जकड़े देश को आजाद कराने के लिए सबसे ज्यादा कुर्बानियां सिक्ख पंथ ने कीं और देश को आजाद करवा जिन्हें राज-भाग सौंपा उन्होंने ही फौजी हमले द्वारा सिक्ख जगत के सर्वोच्च स्थान श्री अकाल तख्त साहिब को ढह-ढेरी कर दिया तथा श्री हरिमंदर साहिब का अपमान किया हजारों की संख्या में निर्दोष सिंघ, सिंघनियों तथा

बच्चों को शहीद कर दिया गया। यहीं बस नहीं, नवंबर १९८४ में देश की राजधानी दिल्ली व अन्य कई प्रमुख शहरों में सिक्खों को बेरहमी से कत्ल किया गया, उनकी जायदादें लूटीं व कारोबार तबाह कर दिए, मगर दुख की बात है कि आज तक दोषियों को सजाएं नहीं मिलीं तथा प्रभावित परिवार अदालतों से इंसाफ की आशा लगाए बैठे हैं। इन विचारों का प्रकटावा शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने नवंबर १९८४ में सिक्ख कौम की नसलकुशी किये जाने के इरादे से उस समय शहीद हुए सिंघ-सिंघनियों को श्रद्धा-सत्कार भेंट करने हेतु श्री हरिमंदर साहिब परिसर में स्थित गुरुद्वारा झंडा बुंगा साहिब में ३ नवंबर को अरदास दिवस मौके एकत्र संगत को संबोधित करते हुए किया। उन्होंने कहा कि शिरोमणि कमेटी की कोशिशों के परिणामस्वरूप ही सज्जन कुमार आदि पर कानूनी शिकंजा कसा है और जब तक दोषियों को सजा नहीं मिलती तब तक ये कोशिशें निरंतर जारी रहेंगी। उन्होंने आगे कहा कि जब तक पीड़ितों को इंसाफ नहीं मिलता तब तक प्रत्येक वर्ष 'अरदास दिवस' मनाया जाता रहेगा। उन्होंने ऐलान किया कि सिक्ख नसलकुशी से प्रभावित परिवारों के बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए शिरोमणि कमेटी द्वारा अगले वर्ष के बजट में एक करोड़ की व्यवस्था की जाएगी। ऐसे परिवारों के बच्चे, जो सिक्ख अल्पसंख्यक कोटे में से एम. बी. बी. एस., बी. डी. एस., बी. एस. सी. नर्सिंग, जी. एन. एम., इंजीनियरिंग एवं पोलीटेक्निक कोर्सों में दाखिला लेंगे, उनकी फीस आदि इस फंड में से शिरोमणि गु: प्र: कमेटी द्वारा अदा की जाएगी।

'अरदास दिवस' के अवसर शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के उच्चाधिकारियों के अलावा समूह स्टाफ तथा विभिन्न सिक्ख जत्थेबंदियों के मुखिया व नुमाइंदे उपस्थित थे।

श्री गुरु रामदास लंगर हाल में सोलर वाटर हीटर का उद्घाटन

अमृतसर। पंजाब सरकार की पावर एण्ड एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (PEDA) के चेयरमैन भाई मनजीत सिंघ की कोशिशों का सदका श्री गुरु रामदास लंगर में गर्म पानी की आवश्यकता के लिए लंगर की छत पर लगाए सोलर सिस्टम का अरदास उपरांत उद्घाटन करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि लंगर के इस्तेमाल के लिए जहां बिना किसी खर्च के गर्म पानी उपलब्ध हो सकेगा, वहां बिजली की बचत के साथ-साथ ईंधन रूप में उपयोग की जाती लकड़ी से पैदा होता प्रदूषण भी कम होगा।

उन्होंने कहा कि इस सोलर सिस्टम द्वारा बिना किसी खर्च के प्रतिदिन ५०० लीटर गर्म पानी मिल सकेगा, जिसे दाल, सब्जी, चावल आदि तैयार करने तथा बर्तन साफ करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस शुभ कार्य के लिए भाई मनजीत सिंघ का धन्यवाद किया।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-१२-२०१०